सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) पद्धति पर आधारित

हिंदी पाठ्यपुस्तक

साथी

हिंदी पाठमाला

8

AMANDA IMPRINT
(An Imprint of Laxmi Publications Pvt. Ltd.)

हिंदी पाठ्यपुस्तक

साक्षी

4

हिंदी पाठमाला

आल्या
एवं
मुसकान

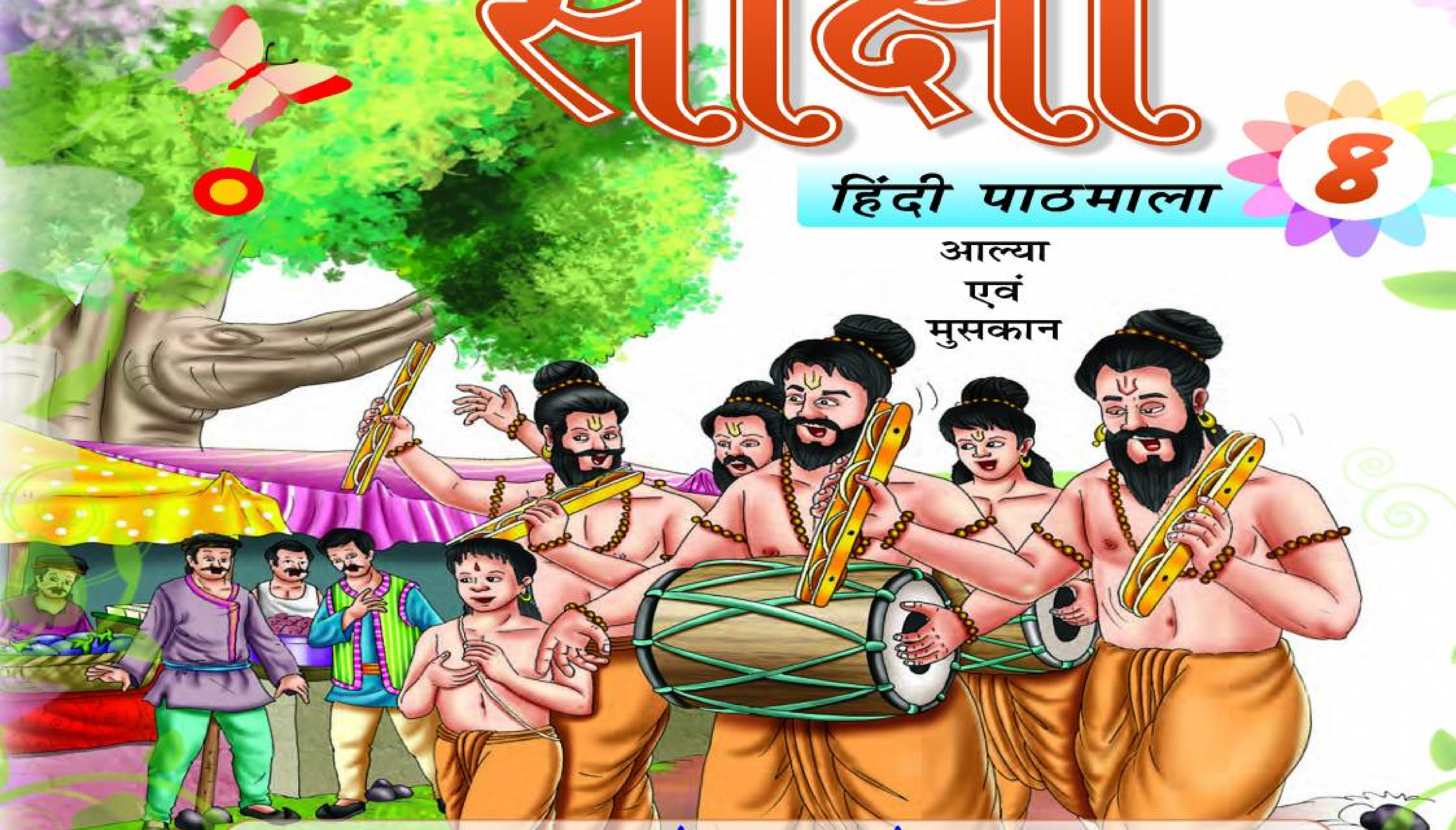

AMANDA
IMPRINT
(An Imprint of Laxmi Publications Pvt. Ltd.)
An ISO 9001:2008 Company

कोचीन • कोलकाता • गुवाहाटी • चेन्नई • जालंधर
बेंगलुरु • मुंबई • राँची • लखनऊ • हैदराबाद • नई दिल्ली
बोस्टन (यू.एस.ए.) • आकरा (घाना) • नैरोबी (केन्या)

साक्षी हिंदी पाठमाला-8

© द्वारा लक्ष्मी पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लिमिटेड
अन्य भाषाओं में अनुवाद सहित सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रतिलिप्याधिकार (संशोधन) अधिनियम, 2012 के अनुसार, इस प्रकाशन का कोई भी अंश किसी भी रूप या माध्यम; जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिकी, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग या अन्य के द्वारा पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या हस्तांतरित नहीं किया जा सकता है। प्रकाशक की अनुमति के बिना उपरोक्त कोई भी कार्य अथवा स्केनिंग, कंप्यूटर में संग्रहण या इस पुस्तक के किसी अंश की इलेक्ट्रॉनिक साझेदारी आदि सांविधानिक अथवा कानूनी तौर पर प्रतिलिप्याधिकार धारक की बौद्धिक संपत्ति की चोरी मानी जाएगी। इस पुस्तक की सामग्री (पुनरावलोकन के उद्देश्यों के अतिरिक्त) उपयोग करने हेतु प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति आवश्यक है।

भारत में मुद्रित और जिल्दबंद
टाइपसैट : एम.टू.डब्ल्यू. मीडिया, दिल्ली
नवीनतम संस्करण
ISBN 978-93-5138-025-2

दायित्व की सीमाएँ/आश्वासन का अस्वीकरण : इस कार्य की सामग्री की परिशुद्धता या पूर्णता के संदर्भ में प्रकाशक और लेखक निरूपण या आश्वासन नहीं देते हैं और विशेषतया सभी आश्वासनों को अस्वीकार करते हैं। इसमें अंतर्विष्ट परामर्श, कौशल और क्रियाकलाप प्रत्येक स्थिति में अनुकूल नहीं हो सकते। निष्पादित क्रियाकलापों के दौरान बड़ों का निरीक्षण आवश्यक है। इसी प्रकार, इस पुस्तक या अन्य प्रकार से वर्णित, किसी और सभी क्रियाकलापों को संपादित करने हेतु सामान्य बुद्धिमत्ता और सावधानी आवश्यक है। इससे होने वाली किसी भी प्रकार की क्षति या नुकसान के लिए प्रकाशक या लेखक उत्तरदायी नहीं होंगे और न ही कोई जिम्मेदारी लेंगे। तथ्य यह है कि इस पुस्तक में उद्धरण या अतिरिक्त सूचना के संभावित स्रोत के रूप में उल्लेखित संस्था या वेबसाइट का अर्थ यह नहीं है कि लेखक या प्रकाशक सूचना, संस्था या वेबसाइट का समर्थन या अनुशंसा करते हैं। साथ ही पाठकों को यह अवश्य ज्ञात रहे कि पुस्तक में उद्धरित इंटरनेट वेबसाइट्स, पुस्तक को लिखने और पढ़ने के समयांतराल में बदली अथवा लुप्त की जा सकती हैं।
इस पुस्तक में दर्शाए गए सभी मार्का, प्रतीक या अन्य कोई चिह्न; जैसे कि विबग्योर, यूएसपी, अमान्डा, गोल्डन बेल्स, फायरवॉल मीडिया, मरक्यूरी, ट्रिनिटी और लक्ष्मी सभी व्यापारिक चिह्न हैं और लक्ष्मी पब्लिकेशंज़ तथा इसके सहायक अथवा संबद्ध संस्थाओं की अपनी या अनुज्ञप्त बौद्धिक संपत्ति हैं। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इस पुस्तक में वर्णित सभी नाम और चिह्न उनके निजी मालिकों के व्यापारिक नाम, मार्का या सेवा-चिह्न हैं।

भारत में प्रकाशित, द्वारा–

AMANDA
IMPRINT
(An Imprint of Laxmi Publications Pvt. Ltd.)
An ISO 9001:2008 Company
113, गोल्डन हाउस, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002, इंडिया
फोन : 91-11-4353 2500, 4353 2501
फैक्स : 91-11-2325 2572, 4353 2528
www.laxmipublications.com info@laxmipublications.com

शाखाएँ

✆	कोचीन	0484-237 70 04,	405 13 03
✆	कोलकाता	033-22 27 43 84	
✆	गुवाहाटी	0361-254 36 69,	251 38 81
✆	चेन्नई	044-24 34 47 26,	24 35 95 07
✆	जालंधर	0181-222 12 72	
✆	बेंगलुरु	080-26 75 69 30	
✆	मुंबई	022-24 91 54 15,	24 92 78 69
✆	राँची	0651-220 44 64	
✆	लखनऊ	0522-220 99 16	
✆	हैदराबाद	040-27 55 53 83,	27 55 53 93

C—11494/016/03
मुद्रक: सरस ग्राफिक्स प्रा. लि. राई

प्रस्तावना

साक्षी हिंदी पाठमाला की श्रृंखला का निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत एनसीईआरटी, सीबीएसई तथा राज्यों के बोर्डों द्वारा निर्धारित सतत एवं व्यापक मूल्यांकन **सीसीई** *(Continuous and Comprehensive Evaluation)* पद्धति के अनुसार किया गया है।

बच्चों में देखकर सीखने की प्रवृत्ति जन्म से ही होती है। किसी भी वस्तु को देखकर उसके बारे में जानने की इच्छा उनके मन में स्वत: ही उठ जाती है। बच्चों की इसी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए उनसे जुड़े खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, रुचि आदि पर **साक्षी** हिंदी पाठमाला के पाठ तैयार किए गए हैं। रोचक पाठ बच्चों की जिज्ञासा एवं भाषा में रुचि बढ़ाने में सहायक सिद्ध होंगे।

इस पाठमाला को तैयार करते समय भाषा की सभी योग्यताओं– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, सोचना, समझना, समझकर करना आदि को सिखाने का प्रयास किया गया है।

यह पुस्तक श्रृंखला अभ्यास पुस्तिका सहित तैयार की गई है। पाठ के अंत में शब्दार्थ, मौखिक व लिखित प्रश्न, पाठ से संबंधित काल्पनिक प्रश्न, भाषा ज्ञान संबंधी प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs), गतिविधियाँ तथा परियोजना निर्माण कार्य सम्मिलित किए गए हैं।

साक्षी हिंदी पाठमाला में साहित्य की सभी विधाओं– कविता, कहानी, चित्रकथा, लोककथा, डायरी लेखन, संस्मरण, जीवनी, लेख, निबंध, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत आदि का समावेश है। हिंदी निदेशालय भारत सरकार द्वारा संस्तुत वर्तनी के पारंपरिक व मानक दोनों रूपों से बच्चों को अवगत कराया गया है। इस पुस्तक श्रृंखला का उद्देश्य बच्चों की सृजनशीलता, मौलिकता, कल्पनाशीलता, जिज्ञासा एवं चारित्रिक विकास पर बल देना है। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक को और अधिक रोचक, स्तरीय एवं प्रामाणिक बनाने हेतु विद्वानों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

–लेखिकाएँ

विषय-सूची

1. उठो धरा के अमर सपूतो! (कविता) 1
2. गिल्लू (संस्मरण) 7
3. बदला (कहानी) 17
4. क्या निराश हुआ जाए? (लेख) 27
   • क्या आप जानते हैं? 37
5. तोड़ती पत्थर (कविता) 39
6. सदाचार का तावीज़ (व्यंग्यात्मक कहानी) 46
7. किरण बेदी (साक्षात्कार) 57
8. ठेले पर हिमालय (यात्रा-वृत्तांत) 67
   • क्या आप जानते हैं? 77
9. सुभागी (एकांकी) 79
10. लोकगीत (निबंध) 90
11. विद्याध्ययन का समय (आत्मकथांश) 98
12. झाँसी की रानी (कविता) 106
   • क्या आप जानते हैं? 115
13. सुनेली का कुआँ (लोककथा) 117
14. भगत सिंह के पत्र (पत्र) 126
15. राम वन गमन (काव्य-रचना) 132
16. हवा में फैलता ज़हर (निबंध) 139
   • क्या आप जानते हैं? 147
17. ऐनी फ्रैंक की डायरी (डायरी) 149
18. बनारसी इक्का (हास्य-व्यंग्य) 157
   • प्रश्न-पत्र– 1 166
   • प्रश्न-पत्र– 2 170
   • शब्दकोश 174

पाठ संबंधी गतिविधियाँ

पाठ संख्या व नाम	बोलना, सुनना और पढ़ना	लिखना	शैक्षिक गतिविधियाँ	जीवन-मूल्य तथा पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना
1. उठो धरा के अमर सपूतो! (कविता)	कविता का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के लघु उत्तर शब्दों में, सप्रसंग व्याख्या, अपठित काव्यांश के प्रश्नों के उत्तर देना, प्रत्यय, समानार्थी विलोम एवं तत्सम।	निबंध लेखन, काव्य लेखन, अनुच्छेद लेखन, कविताओं का संग्रह करना, काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्न।	देश भक्ति की भावना को सुदृढ़ करना एवं देश के नव निर्माण में योगदान हेतु प्रोत्साहित करना।
2. गिल्लू (संस्मरण)	संस्मरण का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर, बहुविकल्पीय प्रश्न, गद्यांश, पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना, समास, विग्रह, पर्यायवाची शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय।	रेखाचित्र बनाना, चित्र वर्णन, वन्य अभ्यारण्यों की जानकारी तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	जीवों के प्रति दया की भावना जागृत करना।
3. बदला (कहानी)	कहानी का रोचक ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के लघु उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना तथा बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, विलोम शब्द, लिंग, वर्ग पहेली।	चित्र वर्णन, संगीतज्ञों का जीवनवृत्त तैयार करना, नाट्य लेखन एवं मंचन, मौलिक अधिकारों की जानकारी, काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	बुराई पर अच्छाई की जीत को समझाना।
4. क्या निराश हुआ जाए? (लेख)	लेख का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना, कारकों के भेद, संज्ञा, समुच्चय बोधक, विलोम शब्द।	चित्र पर आधारित घटना का वर्णन, कक्षा में विचार विमर्श, प्रोजेक्ट तैयार करना, काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	समाज की अच्छाइयों के प्रति ध्यान आकर्षित करना एवं मानसिक दृढ़ता का महत्त्व समझाना।
• क्या आप जानते हैं?				सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
5. तोड़ती पत्थर (कविता)	कविता का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु उत्तर लिखना, भावार्थ लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, अपठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देना, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, प्रत्यय, सहायक क्रिया।	अनुच्छेद लेखन, चित्र लेखन, कविता संग्रह, बालश्रम व श्रम कानून की जानकारी। काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	मज़दूरों के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना।
6. सदाचार का तावीज़ (व्यंग्यात्मक कहानी)	कहानी का रोचक ढंग से पठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, गद्यांश आधारित प्रश्नों के उत्तर, अव्यय के भेद, कारक, विशेषण।	निबंध लेखन, संवाद पूर्ति, सूचना के अधिकार पर सामूहिक चर्चा तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	समाज में फैली विकृतियों का ज्ञान कराना तथा उनसे बचने की सीख देना।
7. किरण बेदी (साक्षात्कार)	साक्षात्कार का प्रभावशाली ढंग से पठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, प्रत्यय, शब्द परिवार, शब्द एवं युग्म, समास विग्रह।	निबंध लेखन, चित्र लेखन, सूची बनाना, वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना।
8. ठेले पर हिमालय (यात्रा वृत्तांत)	यात्रा वृत्तांत का रोचक ढंग से पठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, पद परिचय, मुहावरे, समास, शब्द युग्म।	पत्र लेखन, अनुच्छेद लेखन, परियोजना निर्माण तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	यात्रा वृत्तांत द्वारा ज्ञान में वृद्धि करना।
• क्या आप जानते हैं?				सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।

पाठ संख्या व नाम	बोलना, सुनना और पढ़ना	लिखना	शैक्षिक गतिविधियाँ	जीवन-मूल्य तथा पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना
9. सुभागी (एकांकी)	एकांकी का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु व दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पी प्रश्न, गद्यांश आधारित प्रश्नों के उत्तर देना, क्रियाविशेषण विशेषण, क्रिया, मुहावरे, पर्यायवाची।	निबंध लेखन, चित्र लेखन, नाट्य मंचन तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	लड़का लड़की में भेदभाव न करने की सीख देना।
10. लोकगीत (निबंध)	निबंध का रोचक ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, कारक, समास विग्रह, वचन।	लोकगीतों का संग्रह, परियोजना निर्माण, चित्र लेखन तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	जीवन में लोकगीतों का महत्त्व समझाना।
11. विद्याध्ययन का समय (आत्मकथांश)	आत्मकथा का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, संधि विच्छेद, सार्थक शब्द, कारक, समुच्चयबोधक।	निबंध लेखन, घटना वर्णन, तुलनात्मक लेखन तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना। विचारों का संग्रहण ।	जीवन में बाल्यकाल का महत्त्व बताना तथा अच्छी आदतों को अपनाने की सीख देना।
12. झाँसी की रानी (कविता)	कविता का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर, वर्ण विच्छेद, पर्यायवाची, अनेकार्थी शब्द, लिंग ज्ञान, विशेषण।	अनुच्छेद लेखन, कविता संग्रहण, चित्रों का संग्रह करना तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	स्वतंत्रता का महत्त्व समझाना तथा आज़ादी की लड़ाई में स्त्रियों की भूमिका की जानकारी देना।
● क्या आप जानते हैं?				सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
13. सुनेली का कुआँ (लोककथा)	लोककथा का रोचक ढंग से पठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तरों का चयन करना, गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर, अनेकार्थी, पर्यायवाची, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, मुहावरे।	लेख एवं अनुच्छेद लेखन, जानकारी प्राप्त करना और कक्षा में सुनाना तथा विचार गोष्ठी का आयोजन करना।	दृढ़ निश्चय द्वारा जीवन की बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की सीख देना।
14. भगत सिंह के पत्र (पत्र)	पत्रों का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, सर्वनाम, विलोम शब्द, समुच्चयबोधक शब्द, वचन।	पत्र लेखन, चित्र लेखन, फोटो एलबम तैयार करना, नाट्य मंचन करना तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान की भावना जागृत करना तथा आज़ादी का मूल्य समझाना।
15. राम वन गमन (काव्य रचना)	काव्य रचना का रोचक ढंग से पठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, काव्यांश पर आधारित प्रश्नों पर उत्तर लिखना, तत्सम शब्द, विलोम शब्द।	कहानी लेखन, घटना का वर्णन, काव्य संग्रह करना, चार्ट बनाना, काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्राचीन ग्रंथों एवं रचनाओं से परिचित करवाना, आदर्श जीवन के गुणों का महत्त्व समझाना।
16. हवा में फैलता ज़हर (निबंध)	निबंध का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, लघु एवं दीर्घ उत्तर लिखना, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, उपसर्ग, प्रत्यय, शुद्ध रूप।	निबंध लेखन, काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना, पोस्टर बनाना, भाषण तैयार करना, चार्ट बनाना।	पर्यावरण की सुरक्षा का महत्त्व समझाना तथा प्रदूषण संबंधी जानकारी देना।
● क्या आप जानते हैं?				सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
17. ऐनी फ्रैंक की डायरी (डायरी)	डायरी का प्रभावशाली ढंग से वाचन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण एवं मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के लघु एवं दीर्घ उत्तर, बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, गद्यांश आधारित प्रश्न, प्रत्यय, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, मुहावरे, की तथा कि का प्रयोग।	डायरी लेखन, चित्र वर्णन, आँकड़े एकत्र करना, परियोजना तैयार करना तथा काल्पनिक एवं नैतिक प्रश्नों के उत्तर देना।	डायरी लेखन हेतु प्रोत्साहित करना, युद्ध की भीषणता से अवगत कराना।
18. बनारसी इक्का (हास्य व्यंग्य)	हास्य व्यंग्य का रोचक ढंग से पाठन, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा मौखिक प्रश्नों के उत्तर देना।	प्रश्नों के उत्तर शब्दों में, प्रश्नों के उत्तर बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देना, भावार्थ लिखना, उत्तर प्रत्यय, संज्ञा मुहावरे।	अनुच्छेद लेखन, कहानी लेखन, हास्य रस की कविता, कहानी आदि का संग्रहण, हास्य प्रतियोगिता का आयोजन तथा नैतिक एवं काल्पनिक प्रश्नों के उत्तर देना।	जीवन में हास्य का महत्त्व समझाना।

पाठ्यक्रम

छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा के लिए हिंदी पाठ्यक्रम–

छठी कक्षा में आने तक विद्यार्थी हिंदी में पढ़ने, बोलने और लिखने की कुशलताओं पर अधिकार प्राप्त कर चुके होंगे। इन कक्षाओं में पिछली योग्यताओं का विकास करते हुए मातृभाषा की नई योग्यताओं का विकास करना है।

विश्व के सभी देशों की मातृभाषा के पाठ्यक्रम कुछ इस प्रकार तैयार किए जाते हैं कि विद्यार्थी अपने स्तर की कहानियाँ पढ़कर उनका आनंद ले सकें। वे प्रकृति के सौंदर्य, देश-प्रेम आदि की सरल और सहज कविताएँ पढ़कर अपने शब्दों में उनकी सराहना कर सकें। अपने स्तर के विषयों पर अनुच्छेद या निबंध लिख सकें।

विद्यार्थियों के भावी जीवन में भाषा से संबंधित जो भी आवश्यकताएँ होंगी, उनकी तैयारी आठवीं कक्षा तक पूरी हो जानी चाहिए। पहली कक्षा से सातवीं कक्षा तक उन्होंने जो कुछ भी सीखा है, उसका विस्तार आठवीं कक्षा में अपेक्षित होगा।

छठी, सातवीं और आठवीं कक्षाओं में मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य–

- मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना।
- शिष्टाचार, धैर्य और ध्यानपूर्वक सुनने की योग्यता का विकास करना।
- अपने विचारों को लिखकर अभिव्यक्त करने की योग्यता का विकास करना।
- व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग करने में समर्थ बनाना।
- अध्ययन की कुशलताओं का विकास करना।
- सौंदर्यानुभूति एवं सृजनशीलता का विकास करना।
- भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास करना।
- साहित्य के प्रति अभिरुचि का विकास करना।
- चिंतन की योग्यता का विकास करना।
- लेखन संबंधी योग्यताओं का विकास करना।
- भाषा विचार एवं शैली की सराहना करने में सक्षम बनाना।
- भाषा के प्रमुख तत्वों से परिचित करवाना।
- विद्यार्थियों को भाषायी क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- सर्वधर्म समभाव का विकास करना। सभी धर्मों के प्रति आदर और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का विकास करना।
- अपने क्षेत्र विशेष तथा देश के प्रति प्रेम और गौरव की भावना का विकास करना।

छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों से मातृभाषा संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

सुनने संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

- वर्णित या पठित सामग्री, वार्ता, भाषण, परिचर्चा, वार्तालाप, वाद-विवाद, कविता-पाठ आदि का सुनकर अर्थ ग्रहण करना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति को जानना।
- कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ, नाटक, चित्र वर्णन, संक्षिप्त भाषण, विवरण आदि को सुनकर समझना और उनका आनंद लेना।
- वक्ता के मनोभावों–हर्ष, क्रोध, आश्चर्य, घृणा, झिड़की, करुणा, व्यंग्य आदि को समझना।
- विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र कर उसे याद रखना।

बोलने संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

- बोलते समय भली प्रकार उच्चारण करना। गति, लय, आरोह-अवरोह, उचित बलाघात व अनुतान सहित बोलना। सस्वर कविता-वाचन, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना।
- भाषा-संबंधी सभी सामूहिक क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेना।
- आत्मविश्वास और सहजता से धाराप्रवाह बोलना।
- व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
- अपने विचारों को स्वतंत्र व क्रमबद्ध रूप से व्यक्त करना।
- वार्तालाप, नाटक, लघु भाषण आदि में सक्रिय रूप से भाग लेना।
- कहानियाँ सुनाने, पहेलियाँ बूझने, अंत्याक्षरी, लघु भाषण आदि का अभ्यस्त होना।
- भय से मुक्त होकर प्रभावशाली ढंग से भाषण देना।

पढ़ने संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

- गद्य और पद्य को उचित आरोह-अवरोह के साथ धाराप्रवाह पढ़ना।
- एकाग्रचित्त होकर अभीष्ट गति के साथ मौन पठन करना।
- शब्दों और मुहावरों का अर्थ समझकर वाक्यों में प्रयोग करना।
- पठित वस्तु के महत्त्वपूर्ण तथ्य, मुख्य विचार और केंद्रीय भाव को पहचानना।
- भाषा, विचार एवं शैली की सराहना करना।

- बाल-साहित्य आदि की उपलब्ध सामग्री को पढ़ना।
- पत्र, चार्ट, पोस्टर आदि की लिखित सामग्री को सहजता से पढ़ना।
- मौन पठन द्‌वारा पाठ्‌यवस्तु का अर्थग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करना।

लिखने संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

- परिचित और अपरिचित शब्दों व वाक्यों को शुद्‌ध रूप से लिखना। लिखते हुए व्याकरण-सम्मत शुद्‌ध एवं प्रांजल भाषा का प्रयोग करना।
- लिपि के मानक रूप का ही प्रयोग करना।
- लेखन संबंधी नियमों एवं कुशलताओं का ज्ञान होना।
- पूर्ण-विराम, अद्‌र्ध-विराम, प्रश्नवाचक एवं विस्मय बोधक चिह्‌नों का सही प्रयोग करना।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों को लिखने में समर्थ होना।
- अपने विचारों को लिखकर प्रकट करने में समर्थ होना।
- लिखने में मौलिकता और सृजनात्मकता लाना।
- शब्दों एवं वाक्यों का अनुलेख और श्रुतिलेख लिखना।
- चित्र-वर्णन, यात्रा-वर्णन, संवाद-लेखन तथा सरल विषयों पर अनुच्छेद एवं निबंध लिखना।

चिंतन संबंधी अपेक्षित योग्यताएँ–

- अपने स्तर के अनुरूप किसी बात को सुनकर या पढ़कर समझना, उस विषय पर प्रश्न करना तथा किए गए प्रश्नों के नि:संकोच उत्तर देना।
- सुनी हुई या पढ़ी हुई बातों में उचित-अनुचित का भेद करना।
- पठित वस्तु के शीर्षक के आधार पर विषय-वस्तु को समझना, केंद्रीय भाव तथा सारांश बताना।
- यथार्थ और कल्पना में अंतर कर पाना।
- वर्णित घटना या दृश्यावलोकन पर प्रतिक्रिया करना।
- मूर्त विषयों के बारे में अनुभूति और भाव व्यक्त करने के लिए सही शब्द चुनना।

छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा के लिए शैक्षिक क्रियाकलाप–

- विभिन्न विषयों पर आधारित– क्यों, कैसे, क्या वाले प्रश्नों को पूछना तथा उसमें कक्षा के सभी विद्‌यार्थियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करना।
- हिंदी वर्णमाला की सूक्ष्म अंतर वाली ध्वनियों में विभेदीकरण तथा शुद्‌ध उच्चारण का प्रशिक्षण देना।
- सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से कविता, कहानी, घटना आदि को सुनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- वाद-विवाद तथा लघु भाषणों द्‌वारा आत्मविश्वास में बढ़ोतरी करना।
- विद्‌यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने तथा उनका संचालन करने संबंधी कार्य करवाना।
- परिचित एवं अपरिचित विषयों पर संवाद का आयोजन करवाना।
- अधूरी कहानी को पूरा करवाना तथा अनुमान के आधार पर घटना या कहानी का वर्णन करवाना।
- पाठ्‌यपुस्तक तथा अतिरिक्त सामग्री को पढ़ते समय उच्चारण, विराम चिह्‌न, उचित स्थान पर बलाघात आदि पर ध्यान देते हुए पढ़वाना। उचित गति एवं प्रवाह के साथ पढ़ने पर बल देना।
- मौन वाचन करवाना, चित्र, चार्ट, मानचित्र, विज्ञापन, पत्र एवं सूचना पट से संबंधित लिखित सामग्री पर अनेक प्रश्न पूछना।
- शब्दों एवं वाक्यों का अनुलेख एवं श्रुतिलेख करवाना।
- विभिन्न विषयों पर चित्र, मॉडल, चार्ट आदि तैयार करवाना तथा उनका विवरण लिखवाना।
- विभिन्न विषयों पर अनुच्छेद, निबंध लिखना।
- चित्र को देखकर वाक्य, कहानी, कविता या अनुच्छेद आदि लिखवाना।

पाठ्‌य-सामग्री एवं विषय-वस्तु–

कक्षा 6, 7 और 8 के लिए पाठ्‌यपुस्तक अभ्यास पुस्तिका सहित तैयार की गई है। इन पुस्तकों के लगभग 164, 168, 184 पृष्ठ तैयार किए गए हैं। पाठ्‌यपुस्तक की विषय-वस्तु उद्‌देश्यों, योग्यताओं और शैक्षिक क्रियाकलापों पर आधारित है। बच्चों के परिवेश से संबंधित तथा भाषायी कुशलताओं और योग्यताओं को ध्यान में रखकर विषय सामग्री तैयार की गई है। निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखकर पाठ्‌यपुस्तक का निर्माण किया गया है–

पौराणिक एवं साहित्यिक कहानियाँ, लोककथाएँ, पर्यावरण संरक्षण, कृषि और प्रौद्‌योगिकी, विज्ञान, राष्ट्रीय एकता, मौलिक एकता, दर्शनीय स्थल, यात्रा वर्णन, खोज, महापुरुषों की जीवनियाँ, पत्र, डायरी, कविता, साक्षात्कार, एकांकी, निबंध, लेख, त्योहार, सर्वधर्म समभाव, नैतिक मूल्यपरक पाठ आदि।

1 उठो धरा के अमर सपूतो!

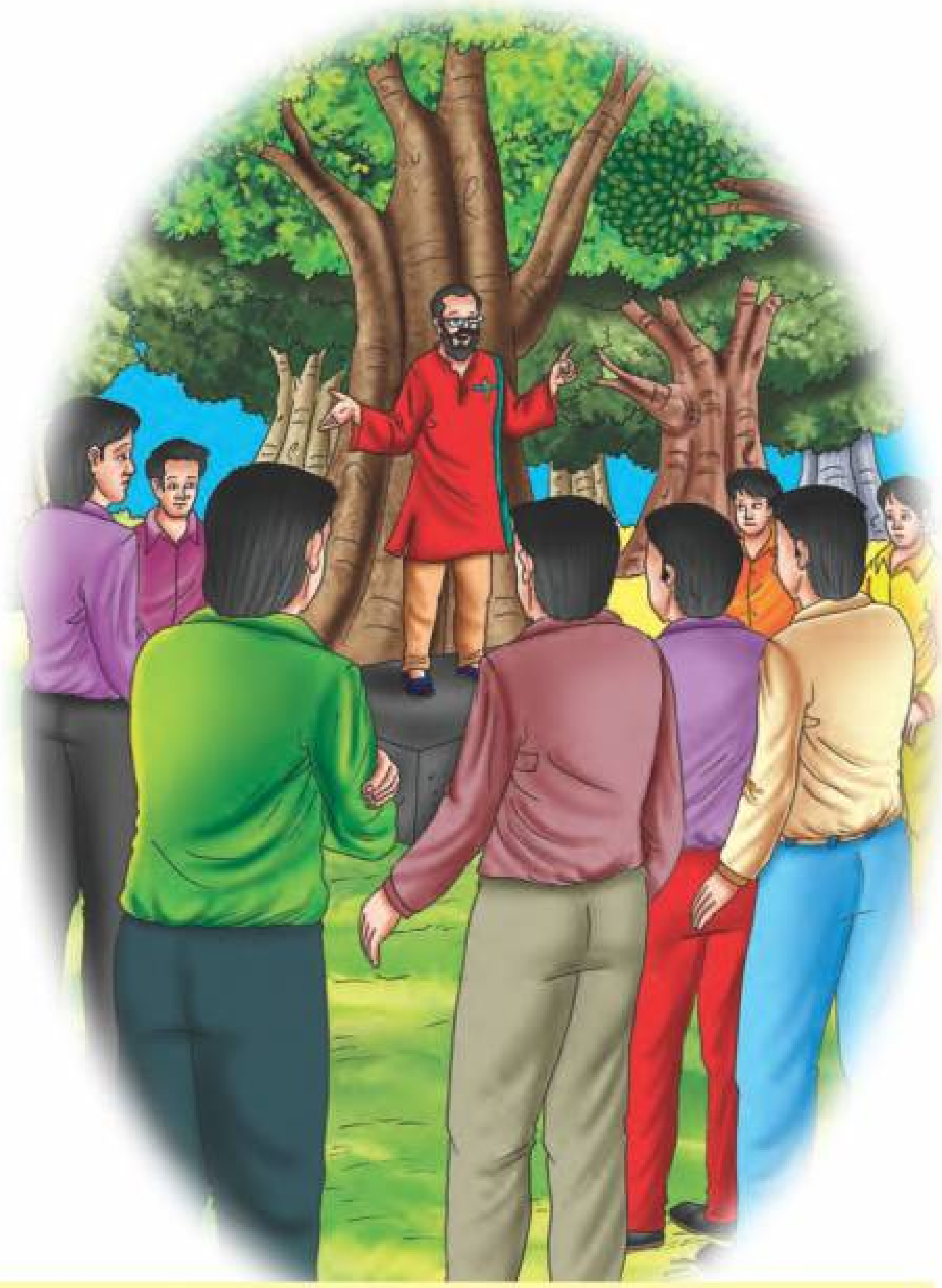

उठो धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से,
नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नया प्रभात है, नई बात है,
नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें,
नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में,
नई-नई मुसकान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मँडराते हैं।
नव युग की नूतन वीणा में,
नया राग, नव गान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह कविता आधुनिक युग के बाल-साहित्य रचनाकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा लिखी गई है। कवि ने इस कविता के माध्यम से नवयुवकों को देश के नव-निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया है।
- बच्चों को कविता का भाव समझाते हुए कविता पाठ करवाएँ। उन्हें बताएँ कि बच्चे ही देश का भविष्य हैं। अत: देश के निर्माण के लिए आशा, विश्वास और नई उमंग के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

कली–कली खिल रही इधर,
वह फूल–फूल मुसकाया है।
धरती माँ की आज हो रही,
नई सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से,
गुंजित जग–उद्यान करो।
उठो धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।
सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है।
शत–शत दीपक जला ज्ञान के,
नव युग का आह्वान करो।
उठो धरा के अमर सपूतो!
पुनः नया निर्माण करो।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शब्दार्थ

धरा	–	धरती	पुनः	–	फिर, दोबारा	स्फूर्ति	–	उत्साह, ताजगी
प्रभात	–	सवेरा	आस	–	आशा	विहग	–	पक्षी
नूतन	–	नया, नवीन	उद्यान	–	बगीचा	आह्वान	–	पुकार

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–

उद्यान – उद्यान   आह्वान – आह्वान

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

ज्योति   निर्माण   स्फूर्ति   ध्वनियाँ   गुंजित   आह्वान

2. सोचकर बताइए–

(क) कविता में किसको उत्साहित किया गया है?

(ख) देश के निर्माण के लिए नवयुवकों में किस प्रकार के विचारों की आवश्यकता है?

(ग) कवि ने 'सरस्वती का पावन मंदिर' किसे कहा है? उसके रक्षक व पुजारी कौन हैं?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) कवि ने लोगों को जीवन में क्या भरने के लिए प्रेरित किया है?

(ख) नई-नई मुसकान किसमें भरने के लिए कहा गया है?

(ग) धरती माँ की काया में क्या परिवर्तन हुआ है?

(घ) सरस्वती के मंदिर का रक्षक कौन है?

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) 'धरा के अमर सपूतों' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ख) धरती माँ की काया सुनहरी क्यों हो गई है?

(ग) कविता में नव युग का आह्वान किस प्रकार करने को कहा गया है?

(घ) 'नया निर्माण करने से' कवि का क्या तात्पर्य है?

3. नीचे दी पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

(क) नव युग की नूतन वीणा में नया राग, नव गान भरो।

(ख) नूतन मंगलमय ध्वनियों से, गुंजित जग-उद्यान करो।

(ग) शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नव युग का आह्वान करो।

4. **नीचे दिए काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर पर (✓) लगाइए–**

रास्ते का एक काँटा,
पाँव का दिल चीर जाता।
रक्त की दो बूँद गिरती,
एक दुनिया डूब जाती।
आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों।
कंटकों की इस अनोखी,
सीख का सम्मान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(क) पाँव का दिल कौन चीर जाता है?
(*i*) फूल (*ii*) काँटा (*iii*) पंखुड़ी (*iv*) पत्थर

(ख) आँखों में स्वर्ग होने पर भी पाँव कहाँ टिके होने चाहिए?
(*i*) आसमान में (*ii*) चाँद पर (*iii*) धरती पर (*iv*) सूरज पर

(ग) काँटे हमें क्या सीख देते हैं?
(*i*) चलने से पहले पथ की पहचान कर लेनी चाहिए।

(*ii*) चलने से पहले राह के काँटे साफ़ कर लेने चाहिए।

(*iii*) नंगे पाँव कभी नहीं चलना चाहिए।

(*iv*) वास्तविकता का हमेशा भान होना चाहिए।

(घ) चलने से पहले क्या कर लेना चाहिए?

(*i*) पथ की पहचान (*ii*) मित्रों की मंडली का निर्माण

(*iii*) पूर्ण स्नान (*iv*) विश्राम

(ङ) 'बटोही, बाट की पहचान कर ले।' पंक्ति में बाट और बटोही का क्या अर्थ है?

(*i*) काँटे और पथिक (*ii*) राह और आगंतुक

(*iii*) मित्र और राही (*iv*) पथ और पथिक

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों में प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

करुणा – करुणामय दुख – .... सुख – ....

दया – .... तन – .... जल – ....

2. नीचे दिए शब्दों के समानार्थी शब्द वर्ग-पहेली से ढूँढ़कर लिखिए–

त	ट	सु	ज	वि
न	पू	म	ल	ह
नू	त	न	ज	ग
वी	णा	वा	दि	नी

बेटा – .... पक्षी – ....

कमल – .... संसार – ....

किनारा – .... शरीर – ....

सरस्वती – .... नया – ....

पुष्प – .... पानी – ....

3. नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

नूतन – .... निर्माण – .... शुभ – ....

रक्षक – .... मान – .... सपूत – ....

4. नीचे दिए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

पूत – .... भौंरा – .... सूरज – ....

आस – .... अम्मा – .... अँधेरा – ....

कविता से आगे

- देश का नव-निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है?
- बच्चे देश के नव-निर्माण में क्या भूमिका निभा सकते हैं?

नन्हे हाथों से

- 'मेरा भारत महान' पर अपनी उत्तर पुस्तिका में निबंध लिखिए।
- 'बच्चे देश का भविष्य' पर अनुच्छेद लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- इंटरनेट या पुस्तकालय से द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कुछ अन्य कविताएँ खोजकर पढ़िए।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके कुछ मित्र असामाजिक तत्वों के साथ मिलकर देश की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाने की योजना बना रहे हों। बातों-बातों में यह बात आपको पता चल जाए तो आप क्या करेंगे?
- यदि आप अपने घर के आस-पास किसी पार्क में खेलने जा रहे हों और वहाँ कुछ लोग नशीले पदार्थों का क्रय-विक्रय करते दिखाई दें तो आप क्या करेंगे?

2 गिल्लू

सोनजूही पर आज एक पीली कली खिली है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे-से जीव का स्मरण हो आया, जो इसकी लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और मेरे निकट पहुँचते ही मेरे कंधे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की चिंता रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है। यह जानते हुए भी कि अब तक तो वह इस सोनजूही की जड़ में मिट्टी बनकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने आ गया हो।

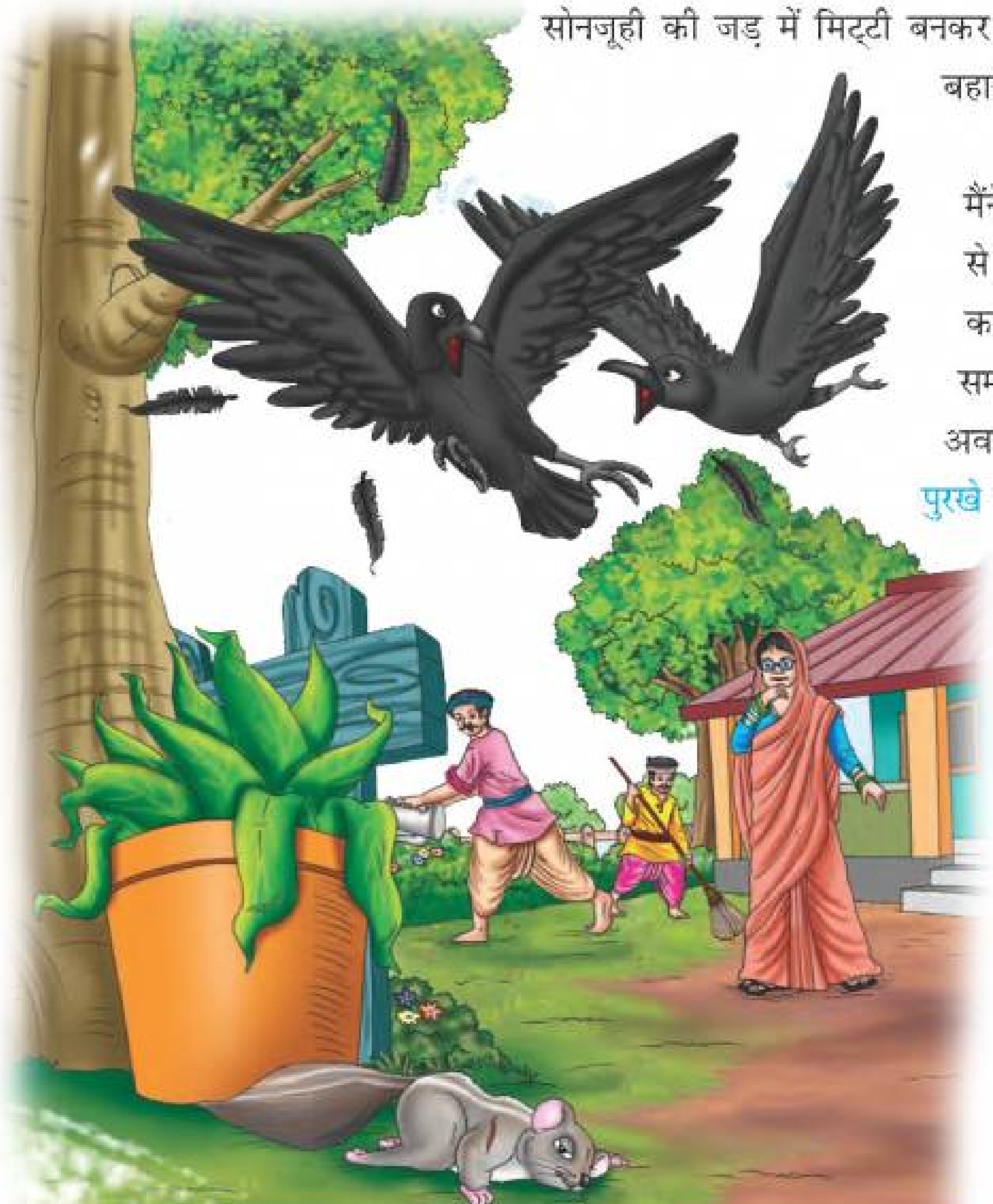

एक दिन सवेरे-सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, एक गमले के चारों ओर दो कौए चोंचों से छुआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित सारी विशेषताएँ स्वयं में समेटे है। हमारे पुरखे बेचारे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें हमसे कुछ पाने के लिए पितृपक्ष में काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं हमारे दूरस्थ प्रियजनों को अपने आने का मधुर संदेश इनके कर्कश स्वर में ही भिजवाना पड़ता है। फिर भी हम कौए और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में उस समय अचानक ही बाधा आ पड़ी, जब मेरी दृष्टि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर थम गई। निकट जाकर देखा

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि प्रस्तुत पाठ महादेवी वर्मा के संस्मरण पर आधारित है।
- हमारी पृथ्वी विभिन्न प्रकार के जीव-जंतुओं से भरी पड़ी है। उनके अद्भुत क्रियाकलाप मनुष्य के जीवन में किस प्रकार रोमांच भर देते हैं, बच्चों को समझाएँ।
- बच्चों के मन में जीव-जंतुओं के प्रति दया का भाव जागृत करें।

तो पाया कि गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा था और कौए उसमें सुलभ आहार खोज रहे थे, निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था। काकद्वय के दो चंचुल प्रहार ही उस लघुप्राण के लिए पर्याप्त थे।

मैं उस लघुप्राण के प्राणों की रक्षा हेतु आगे बढ़ी तो वहाँ मौजूद माली और नौकर ने कहा कि इसे ऐसे ही रहने देना चाहिए, कौए की चोंच का गहरा घाव लगने के बाद अब यह बच नहीं सकता परंतु मन नहीं माना। उसे हौले से उठाकर कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर उसके घावों पर मरहम लगाया। रुई की बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हे-से मुँह से लगाई, पर मुँह खुल न सकने के कारण दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं। कई घंटों के उपचार और प्रयास के उपरांत उसके मुँह में दो बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह अच्छा और आश्वस्त हो गया और मेरी अँगुली अपने नन्हे पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों-सी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। तीन-चार मास में उसकी देह में काफी परिवर्तन देखने को मिले। स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल आँखें सबको विस्मित करने लगीं। हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप दे दिया। हम सभी उसे 'गिल्लू' कहकर पुकारने लगे। मैंने फूल रखने की एक डलिया में रुई बिछाकर उसे तार के द्वारा खिड़की पर लटका दिया। यही डलिया पूरे दो वर्ष तक गिल्लू का घर बना रहा। वह अपने घर को स्वयं हिलाकर झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता और समझता रहता था। उसकी समझदारी व कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती, तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसकी तीव्र इच्छा ने एक अच्छा उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता, फिर तेज़ी से उतर जाता। उसका वह दौड़ने का क्रम तब तक चलता जब तक मैं उसे पकड़कर उठा न लेती।

उसकी चंचलता पर विराम लगाने हेतु मैं कभी-कभी गिल्लू को उठाकर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफ़ाफ़े के भीतर ढक जाता। इस अद्भुत स्थिति में कभी-कभी वह घंटों तक मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर अपनी चमकीली आँखों से मेरे कार्यकलाप देखता रहता। भूख लगने पर चिक-चिक करके वह मुझे सूचना देता और उसी स्थिति में काजू व बिस्कुट मिल जाने पर लिफ़ाफ़े के बाहर वाले पंजों से पकड़कर कुतरता रहता।

गिल्लू के जीवन का पहला वसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में आने लगी। साथ ही बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास 'चिक-चिक' का शोर मचाकर न जाने क्या-क्या कहने लगीं? गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देख मुझे उसे मुक्त करना आवश्यक

लगा। मैंने जाली की कीलें निकालकर एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच मुक्ति की साँस ली। उसके बाहर जाने का कोई और रास्ता मुझे उपयुक्त नहीं लगा, क्योंकि इतने छोटे जीव को घर में पले हुए कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या थी।

मेरे बाहर जाने पर मेरा कमरा बंद ही रहता था। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खुलता और मैं भीतर पैर रखती, वैसे ही गिल्लू जाली के द्‌वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ने लगता। यह उसका नित्य का काम बन गया था। मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की जाली से बाहर निकल जाता और दिनभर गिलहरियों के झुंड का नेता बनकर हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें बचपन से ही थी। यह इच्छा उसमें कब और कैसे उत्पन्न हो गई, यह न जान सकी। मुझे चौंकाने के लिए वह कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नटों में और कभी सोनजूही की पत्तियों में। मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी पले-बढ़े हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं था, परंतु उनमें से किसी की भी मेरे साथ थाली में खाने की हिम्मत हुई हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता। गिल्लू उनमें अपवाद था। मैं जैसे ही भोजन के लिए खाने की मेज़ तक पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार और बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठकर खाने की इच्छा रखता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया। जहाँ बैठकर वह मेरी थाली से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता। काजू उसका प्रिय खाद्‌य था। कई दिन तक काजू न मिलने पर वह खाने की अन्य चीजें खाना बंद कर देता था और झूले में रख देने पर उन्हें नीचे फेंक देता था।

एक मोटर दुर्घटना में आहत होने पर कुछ दिन मुझे अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खुलता तो वह अपने झूले से उतरकर दौड़ता, परंतु मेरी जगह किसी और को पाकर उसी तेज़ी से अपने झूले में वापस जा बैठता। इस दौरान उसका प्रिय खाद्‌य उसे प्रतिदिन दिया जाता रहा, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई करवाई तो उसमें काजू भरे पड़े थे। जिससे ज्ञात हुआ कि उस समय उसने अपना प्रिय खाद्‌य कितना कम खाया था।

उस अवस्था में मेरे घर लौटने पर वह मेरे सिरहाने तकिये पर बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता था।

गरमियों की छुट्‌टियों में मैं घर पर ही रहती थी। बाहर जाना लगभग न के बराबर होता था। जब मैं कमरे में बैठकर काम करती रहती तो गिल्लू न तो बाहर जाता और न ही अपने झूले में बैठता। मेरे निकट बैठकर गरमी से बचने का नया उपाय उसने खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और घंटों इसी प्रकार लेटा रहता। इस प्रकार वह मेरे समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

छोटे जीवों की आयु भी छोटी ही होती है और बहुधा इन जीवों को पालने में खुशी के साथ-साथ दुख भी जुड़ा होता है। गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती। अत: गिल्लू की जीवन यात्रा का अंतिम समय भी आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया, न बाहर ही गया। मेरे समीप ही बैठा रहा। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही अँगुली पकड़कर मेरे बिस्तर पर लेटा रहा। ठंडे पंजों से मेरी वही अँगुली पकड़कर हाथ से लिपट गया जिसे उसने अपने बचपन में मरणावस्था में पकड़ा था। पंजे इतने अधिक ठंडे हो रहे थे कि मैंने उसे ऊष्णता देने के लिए हीटर जलाया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सदा के लिए सो गया।

-महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को उ.प्र. के फरुखाबाद जिले में हुआ था। इनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। इनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। महादेवी जी की शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई। संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। ये सात वर्ष की आयु से ही कविताएँ लिखने लगी थीं। जब इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, ये एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। सन 1932 में जब इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया तब तक इनके दो कविता संग्रह–नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे। इनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं–

कविता संग्रह– नीहार, दीपशिखा, रश्मि, सांध्यगीत, अग्नि रेखा आदि।

गद्य साहित्य– रेखाचित्र– अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ। संस्मरण– पथ के साथी, निबंध–शृंखला की कड़ियाँ, संकल्पिता। ललित निबंध– क्षणदा। संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह– हिमालय, बाल साहित्य–ठाकुर जी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। सन 1943 में इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें 'पद्म भूषण' एवं मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। दिल्ली तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ने इन्हें डी॰ लिट की उपाधि से सम्मानित किया। महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिए 'सक्सेरिया पुरस्कार', 'स्मृति की रेखाएँ' के लिए 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए इन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इनका देहांत 11 सितम्बर, 1987 को हुआ।

शब्दार्थ

अनायास	– बिना प्रयास-परिश्रम के, आसानी से			**सघन**	– घना
हरीतिमा	– हरियाली	**लघुप्राण**	– छोटा जीव	**पुरखे**	– पूर्वज
अवतीर्ण	– अवतार के रूप में उत्पन्न	**उपचार**	– इलाज	**उपरांत**	– बाद में
आश्वस्त	– जिसका डर दूर कर दिया गया हो			**विस्मित**	– आश्चर्ययुक्त, चकित
मुक्ति	– आज़ादी	**अपवाद**	– सामान्य नियम को बाधित करने वाला विशेष उदाहरण		
मरणावस्था	– मरने की अवस्था	**ऊष्णता**	– गरमी		

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

स्वर्णिम   निश्चेष्ट   दुर्घटना   समादरित   परिचारिका

2. सोचकर बताइए–

(क) गिल्लू गमले के पास निश्चेष्ट-सा क्यों पड़ा था?

(ख) लेखिका ने गिल्लू के प्राणों की रक्षा कैसे की?

(ग) गिल्लू का अंत कैसे हुआ?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) किसे देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया था? ....

(ख) गिल्लू लेखिका को किस अवस्था में मिला था? ....

(ग) गिल्लू की आँखें कैसी थीं? ....

(घ) गिल्लू भूख लगने की सूचना किस प्रकार देता था? ....

(ङ) गिल्लू का प्रिय खाद्य पदार्थ क्या था? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) 'सोनजूही की जड़ में मिट्टी बनकर मिल गया होगा।' इस कथन से लेखिका का क्या अभिप्राय है?

....

....

(ख) गिल्लू लेखिका का ध्यान अपनी ओर कैसे आकर्षित करता था?

....

....

(ग) लेखिका गिल्लू की चंचलता पर कैसे विराम लगाती थी?

....

....

(घ) लेखिका ने खिड़की की जाली का कोना क्यों खोल दिया था?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) लेखिका द्वारा किए गए 'काकपुराण के विवेचन' का वर्णन कीजिए।

....

....

(ख) गिल्लू की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ग) लेखिका के प्रति गिल्लू का प्रेम किन बातों से झलकता है? पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) कौए गमले के चारों ओर क्यों मंडरा रहे थे?

(*i*) गमले के पास पड़े रोटी के टुकड़ों को खाने के लिए।

(*ii*) सोनजूही के फूलों की खुशबू लेने के लिए।

(*iii*) गिलहरी के बच्चे का भक्षण करने के लिए।

(*iv*) गरमी से बचने के लिए।

(ख) लेखिका ने गिल्लू का घर कैसे तैयार किया?

(*i*) खाली गमले में पत्ते बिछाकर उसे खिड़की पर लटकाकर।

(*ii*) पेड़ में सुराख बनाकर।

(*iii*) गत्ते के डिब्बे में रुई रखकर।

(*iv*) फूलों की डलिया में रुई बिछाकर उसे खिड़की पर लटकाकर।

(ग) गिल्लू को जाली से बाहर झाँकते देख लेखिका ने क्या किया?

(*i*) उसे उठाकर झूले में डाल दिया।

(*ii*) उसे अपने बिस्तर पर लिटा दिया।

(*iii*) जाली का कोना खोलकर उसके बाहर आने-जाने का रास्ता बना दिया।

(*iv*) उसे बाहर भगा दिया।

(घ) कई दिनों तक काजू न मिलने पर गिल्लू क्या करता था?

(*i*) चिक-चिक करके आसमान सिर पर उठा लेता था।

(*ii*) अलमारी में घुसकर स्वयं काजू उठा लाता था।

(*iii*) अन्य खाने की चीज़ों को खाना बंद कर देता था।

(*iv*) झूले से बाहर निकलना बंद कर देता था।

(ङ) गिल्लू ने गरमी से बचने का क्या उपाय खोज निकाला था?

(*i*) वह लेखिका के पास रखी सुराही पर घंटों लेटा रहता था।

(*ii*) वह पंखे के नीचे बैठ जाता था।

(*iii*) वह गमले की मिट्टी पर लेट जाता था।

(*iv*) वह पानी में घुसकर बैठ जाता था।

5. गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

एक मोटर दुर्घटना में आहत होने पर कुछ दिन मुझे अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खुलता तो वह अपने झूले से उतरकर दौड़ता परंतु मेरी जगह किसी और को पाकर उसी तेज़ी से अपने झूले में वापस जा बैठता। इस दौरान उसका प्रिय खाद्य उसे प्रतिदिन दिया जाता रहा, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई करवाई तो उसमें काजू भरे पड़े थे। जिससे ज्ञात हुआ कि उस समय उसने अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाया था। उस अवस्था में मेरे घर लौटने पर वह मेरे सिरहाने तकिये पर बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता था।

(क) लेखिका को अस्पताल में क्यों रहना पड़ा?

(*i*) गिल्लू के इलाज के लिए।

(*ii*) मोटर दुर्घटना में घायल हो जाने के कारण।

(*iii*) प्रियजन की देखभाल के लिए।

(*iv*) अस्पताल की कार्यप्रणाली को जानने के लिए।

(ख) लेखिका की अनुपस्थिति में कमरे का दरवाज़ा खुलने पर गिल्लू क्या करता था?

(*i*) झूले में बैठकर टुकुर-टुकुर देखता रहता था।

(*ii*) झूले से उतरकर दौड़ता और लेखिका को न पाकर वापस झूले में जाकर बैठ जाता था।

(*iii*) खिड़की की जाली से बाहर छलाँग लगा देता था।

(*iv*) अन्य गिलहरियों के साथ कमरे में धमा-चौकड़ी मचाता था।

(ग) सफ़ाई करवाने पर गिल्लू के झूले से क्या निकला?

(*i*) पेड़ों के ढेर सारे पत्ते।

(*ii*) फूलों की पंखुड़ियाँ।

(*iii*) उसका प्रिय खाद्य पदार्थ–काजू।

(*iv*) लेखिका की पुस्तक के पन्नों के टुकड़े।

(घ) लेखिका को गिल्लू का हटना परिचारिका के हटने के समान क्यों लगता था?

(*i*) वह सिरहाने बैठकर उनके बालों को हौले-हौले सहलाता था। ☐

(*ii*) वह सिर पर इधर-उधर घूमता रहता था। ☐

(*iii*) वह बालों को गूँथकर चोटी बना देता था। ☐

(*iv*) उसके स्पर्श से लेखिका को नींद आ जाती थी। ☐

(ङ) 'वह बालों को इतने हौले-हौले सहलाता था।' इस पंक्ति में हौले-हौले क्या है?

(*i*) विशेषण ☐ (*ii*) क्रियाविशेषण ☐ (*iii*) प्रविशेषण ☐ (*iv*) संबंधबोधक ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों का समास-विग्रह करके उनके भेद लिखिए–

समस्त पद		विग्रह	समास का नाम
मरणासन्न	–	....	....
दिनभर	–	....	....
जन्म-मरण	–	....	....
तीव्र बुद्धि	–	....	....
दोपहर	–	....	....
शरणागत	–	....	....

2. नीचे दिए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

कली – .... कौआ – ....

मयूर – .... हंस – ....

दूध – .... गात – ....

कुत्ता – .... बिल्ली – ....

3. नीचे दिए शब्दों से उपसर्ग अलग करके लिखिए–

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
समादरित	–	....	+	....
अनादरित	–	....	+	....
अपमानित	–	....	+	....
अवतीर्ण	–	....	+	....
अपवाद	–	....	+	....

उपयुक्त	–	....	+	....
अतिरिक्त	–	....	+	....

4. नीचे दिए शब्दों में प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

मूल शब्द		प्रत्यय		शब्द
हरा	+	....	–	....
चंचल	+	....	–	....
कठिन	+	....	–	....
ठंड	+	....	–	....
गरम	+	....	–	....
खुश	+	....	–	....

संस्मरण से आगे

- यदि लेखिका माली और नौकर की बात मान लेती तो क्या होता?
- पितृपक्ष में कौओं को भोजन क्यों खिलाते हैं?

नन्हे हाथों से

- अपने किसी पालतू जीव की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उत्तर पुस्तिका में उसका रेखाचित्र तैयार कीजिए।
- चित्र देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

कुछ करने को

- भारत में वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु कई अभ्यारण्य बनाए गए हैं। उनके विषय में जानकारी एकत्र करके सूची तैयार कीजिए।
- डिस्कवरी चैनल पर वन्य पशुओं पर दिखाए गए किसी कार्यक्रम का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
- वन्य जीवों का शिकार क्यों किया जाता है? पता लगाइए।

आप क्या करेंगे

- यदि लेखिका की तरह आपके समक्ष भी कोई जीव घायल अवस्था में पड़ा हो तो आप क्या करेंगे?
- सरकार द्वारा जीव-जंतुओं के शिकार पर रोक लगाई गई है। यदि आपके समक्ष कोई किसी वन्य-जीव का शिकार कर रहा हो तो आप क्या करेंगे?

3 बदला

सवेरे का समय था, बारह घंटों के निरंतर संग्राम के बाद प्रकाश ने अंधकार पर विजय प्राप्त की थी। बाग के फूल आनंदमग्न होकर झूम रहे थे और पक्षीगण मधुर संगीत में मस्त थे। वृक्षों की शाखाएँ सुगंधित पवन से खेल रही थीं और पत्ते हर्ष से तालियाँ बजा रहे थे। प्रकाश के राज्य में सर्वत्र आनंद की वर्षा हो रही थी।

भोर की स्वर्णिम बेला में साधुओं की एक मंडली आगरा नगर में पधारी। वे स्वतंत्र प्रकृति के ईश्वर-भक्त थे और हरिभजन में तल्लीन होकर संसार का परित्याग कर चुके थे। जो संसार का त्याग कर चुके थे, उन्हें सुर-ताल की भला क्या परवाह थी? कोई सुर ऊपर चढ़ता तो कोई गुनगुनाता था। वे अपने राग में मगन थे कि सिपाहियों ने आ घेरा। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, उन्हें हथकड़ियाँ पहनाकर सिपाही अकबर के दरबार में ले गए। मुगल बादशाह अकबर के प्रसिद्ध गवैये तानसेन ने यह शर्त रखी हुई थी कि जो मनुष्य गायन विद्या में मेरी बराबरी न कर सके, वह आगरे की सीमा के अंदर न गाए; और यदि कोई इस नियम को भंग करेगा तो उसे मृत्युदंड का पात्र समझा जाएगा। बेचारे साधु इस बात से अनभिज्ञ थे। परंतु अज्ञानता भी एक अपराध है। उन्हें अभियुक्त बनाकर दरबार में पेश किया गया। तानसेन ने गायन-विद्या के कुछ प्रश्न किए, साधु उत्तर में एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। अकबर के होंठ हिले और सबके-सब साधु तानसेन की दया पर छोड़ दिए गए। उसमें दया का भाव

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह कहानी सुदर्शन द्वारा लिखी गई है जिसमें बैजू बावरा द्वारा घमंडी तानसेन का घमंड गायन-युद्ध के द्वारा चूर-चूर किया गया।
- बच्चों को सिखाएँ कि अपनी योग्यता पर कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। साथ ही बैजू बावरा और तानसेन के बारे में जानकारी दें कि बैजू बावरा और तानसेन दोनों ही महान संगीतज्ञ थे।

कम था, मृत्युदंड की आज्ञा हुई। केवल एक दस वर्षीय बालक को छोड़ दिया गया। अबोध बालक रोते हुए आगरे के बाज़ार से निकलकर जंगल में जाकर अपनी कुटिया में लेटकर तड़पने लगा– "बाबा, तुम कहाँ चले गए? अब मुझे कौन प्यार करेगा और कौन मुझे भक्ति का मार्ग दिखाएगा? मेरे बाबा को क्यों छीन लिया और क्यों मुझे इस अथाह संसार में अनाथ बनाकर छोड़ दिया? अब कौन मेरा पालन–पोषण करेगा और घोर संकटों से कौन मेरी रक्षा करेगा?" इन्हीं विचारों में डूबा बालक देर तक रोता रहा।

बालक का रुदन सुनकर, वहाँ से गुजरते शंकरानंद कुटिया के अंदर आए और कहने लगे, "बैजू बेटा! अशांत मत हो।" बैजू घबराकर उठा और महात्मा के चरणों से लिपट गया। बिलख–बिलखकर रोते हुए बैजू ने कहा, "गुरुवर! मेरे साथ अनर्थ हुआ है। मुझ पर वज्रपात हुआ है।"

शंकरानंद बोले, "शांति, शांति।"

बैजू रोते हुए बोला, "गुरुवर! तानसेन ने मुझे तबाह कर दिया।"

शंकरानंद ने फिर कहा, "शांति–शांति।"

बैजू ने चरणों से लिपटकर कहा, "गुरुवर, शांति नहीं, अब मेरी प्रतिहिंसा की इच्छा है, प्रतिकार की आकांक्षा है।"

शंकरानंद ने व्याकुल बालक को उठाकर हृदय से लगा लिया और कहा, "मैं तुझे वह अचूक शस्त्र दूँगा, जिससे तू अपने पिता की मृत्यु का बदला ले सकेगा।"

बैजू उछल पड़ा, "कहाँ है वह शस्त्र? गुरुवर, शीघ्रता कीजिए।"

शंकरानंद बोले, "उसके लिए दस वर्ष तपस्या करनी होगी।"

गुस्से में पागल बैजू ने कहा, "दस वर्ष क्या मैं जीवनभर विपत्तियाँ उठाने, कष्ट सहने, भक्ति व तप करने को तैयार हूँ। मुझे वह शस्त्र चाहिए जिससे प्रतिहिंसा की अग्नि शांत हो सके। क्या दस वर्ष के बाद वह मिल पाएगा?"

शंकरानंद बोले, "अवश्य।"

बैजू चरणों में पुनः झुक गया, "आप साक्षात ईश्वर हैं। आपका यह उपकार आजन्म नहीं भूलूँगा।"

इस घटना को बारह वर्ष बीत गए। जगत में अनेक परिवर्तन हुए। कई बस्तियाँ उजड़ गईं, कई बस गईं, बूढ़े प्रभुधाम चले गए, नए पैदा हो गए, जो तरुण थे, वे श्वेतकेशी हो गए।

बैजू भी तरुण होता गया और गायन–विद्या में दिन–पर–दिन आगे बढ़ता गया। उसके स्वरों में जादू था और तान में आश्चर्यमयी मोहिनी आ गई थी। गाता था तो पत्थर तक पिघल जाते थे और पक्षी मुग्ध हो जाते थे। एक दिन शंकरानंद ने कहा, "मेरे पास जो कुछ था, तुझे दे डाला। अब मेरे पास तुझे देने के लिए कुछ नहीं है। अब तू पूर्ण गंधर्व हो गया है। लेकिन बिना गुरु दक्षिणा के कोई भी शिक्षा पूर्ण नहीं मानी जाती, तुम्हें भी गुरु दक्षिणा देनी होगी।"

बैजू नतमस्तक हो हाथ जोड़कर बोला, "गुरुवर! आपका उपकार जन्मभर सिर से न उतरेगा। आज्ञा करें।"

शंकरानंद बोले, "तो प्रतिज्ञा करो।"

बैजू ने बिना सोचे–विचारे कह दिया, "प्रतिज्ञा करता हूँ कि...।"

शंकरानंद ने वाक्य पूरा किया, "इस राग–विद्या से किसी को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।" सुनते ही बैजू का रक्त सूख गया, पैर लड़खड़ाने लगे। बारह वर्ष के कठिन परिश्रम पर पानी फिर गया। बदले के लिए छुरी हाथ में आई तो गुरु ने प्रतिज्ञा लेकर कुंद कर दी। बैजू ने होंठ काटे, दाँत पीसे और खून का घूँट पीकर रह गया।

इतने वर्षों में आगरा की सीमा में राग अलापते हुए प्रवेश करने की हिम्मत किसी की न हुई। आज एक सुंदर नवयुवक आगरे के बाज़ार में गाता हुआ जा रहा था। दुकानदारों और राहगीरों ने समझा कि मृत्यु इसके सिर पर मंडरा रही है। उनमें से कुछ ने सोचा कि उसे तानसेन की शर्त की सूचना दे दें। परंतु निकट आते ही मुग्ध होकर अपने-आपको भूल गए। यह समाचार नगर में दावानल की तरह फैल गया।

सिपाही हथकड़ियाँ लेकर नवयुवक की ओर आए, परंतु पास आते ही रंग पलट गया। नवयुवक के मुखमंडल से तेज़ की रश्मियाँ फूट-फूटकर निकल रही थीं। वे आश्चर्य से उसके मुख की ओर देखने लगे, जहाँ सरस्वती का वास था और संगीत की मधुर ध्वनियों की धारा बह रही थी। नवयुवक गाने में मस्त था और सुनने वाले भी मस्त थे। गाते-गाते नवयुवक चलता जा रहा था और श्रोताओं का समुदाय पीछे-पीछे आ रहा था। मुग्ध जन-समुदाय चलता जा रहा था, परंतु किसी को पता नहीं था कि किधर जा रहे हैं? जब एकाएक गाना बंद हुआ तो जादू का असर टूटा। तब लोगों ने देखा तानसेन के महल के आगे खड़े हैं। उन्होंने दुख और पश्चात्ताप से हाथ मले, "हाय रे! यह कहाँ आ गए? नवयुवक स्वयं मृत्यु के द्‌वार पर आ पहुँचा है।" तानसेन बाहर आया, अपार भीड़ को देख विस्मित हुआ और नवयुवक से बोला, "हाँ! आज शायद तुम्हारे सिर पर मृत्यु सवार हो गई है?"

नवयुवक मुसकराया और बोला, "जी हाँ, क्योंकि आपके साथ गायन-विद्‌या पर चर्चा करने की मेरी तीक्ष्ण अभिलाषा हो रही है।"

तानसेन ने लापरवाही से कहा, "विलंब क्यों करते हो? अपनी इच्छा पूरी करो।" तभी सिपाहियों का मोह टूटा। उन्हें हथकड़ियों का ध्यान आया। उन्होंने आगे बढ़कर नवयुवक को हथकड़ियाँ पहना दीं। उधर लोगों के श्रद्‌धा के भाव पकड़े जाने के भय से उड़ गए। लोग इधर-उधर भागने लगे। सिपाही कोड़े बरसाने लगे और लोगों के तितर-बितर हो जाने के बाद नवयुवक को दरबार की ओर ले गए। दरबार की ओर से शर्तें सुनाई गईं और बताया गया कि कल प्रातःकाल नगर के बाहर वन में तुम दोनों का गायन-युद्‌ध होगा। यदि तुम हार गए तो तुम्हें मृत्युदंड देने का अधिकार तानसेन को होगा और यदि तुमने उसे पराजित कर दिया तो उसका जीवन तुम्हारे हाथ में होगा।

वह नवयुवक कोई और नहीं बैजू बावरा ही था। उसने शर्तें सहर्ष स्वीकार कर लीं। इसी दिन के लिए उसने बारह वर्ष तक कठिन तपस्या की थी।

रवि की पहली किरण ने आगरे की जनता को नगर के बाहर का मार्ग दिखा दिया। बैजू की प्रार्थना पर सर्वसाधारण को भी उसके जीवन और मृत्यु का कौतुक देखने की इजाजत दे दी गई थी। बैजू की विद्‌वत्ता की धाक पूरे राज्य में जम चुकी थी। जो व्यक्ति कभी शाही सवारी या बड़े-बड़े त्योहारों पर भी बाहर नहीं निकलते थे, वे भी आज नई-नई पगड़ियाँ घोट-घोटकर बाँध रहे थे।

निर्धारित समय पर बादशाह अकबर सिंहासन पर बैठ गए। उनके समक्ष तानसेन और बैजू बावरा बैठे। अकबर ने प्रतियोगिता को आरंभ करने का आदेश दिया। सर्वप्रथम तानसेन ने संगीत विद्‌या के संबंध में बैजू बावरा से कुछ प्रश्न पूछे, जिनका बैजू ने उचित उत्तर दिया। सही उत्तर सुनकर लोगों ने हर्ष से तालियाँ बजाईं। उनके मुख से, "जय हो, जय हो, बलिहारी" की ध्वनियाँ स्वतः ही निकलने लगीं।

इसके पश्चात बैजू बावरा ने सितार पकड़ा और उसके तारों को झंकृत किया तो जनता ब्रह्मानंद में डूब गई। वृक्षों के पत्ते तक निश्चल हो गए, वायु रुक गई और सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो झूमने लगे। बैजू बावरा की अँगुलियाँ सितार के तारों पर दौड़ रही थीं। लोगों ने आश्चर्य से देखा कि हिरन छलाँगें मारते हुए आए और बैजू बावरा के पास खड़े हो गए। बैजू बावरा तल्लीन होकर सितार बजाते रहे, बजाते ही रहे।

हिरन मस्त थे। बैजू बावरा ने सितार रख दिया और अपने गले से फूल मालाएँ उतारकर उन्हें पहना दीं। फूलों के स्पर्श से हिरनों की सुधि लौटी और वे चौकड़ी भरते हुए झाड़ियों में छिप गए। बैजू ने कहा, "तानसेन! फूल-मालाओं को वापस यहाँ मँगवाइए, तब मैं आपको संगीत विद्या में पूर्ण निपुण मानूँगा।"

तानसेन भी संगीत विद्या में सिद्धहस्त थे। उन्होंने पूर्ण प्रवीणता के साथ सितार बजाया। इतना अच्छा सितार उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं बजाया था। सितार के साथ वह स्वयं सितार बन गए और पसीने में तर हो गए। बजाते-बजाते बहुत समय बीत गया। उनकी अँगुलियाँ दुखने लगीं। बहुत चेष्टा करने पर भी जब कोई हिरन नहीं आया, तब तानसेन की आँखों के सामने मृत्यु नाचने लगी। वह पसीना-पसीना हो गया और लज्जा से उसका मुख-मंडल तमतमा उठा। अंत में खिसियाकर बोले, "वे हिरन तो अकस्मात इधर आ निकले थे। राग का प्रभाव थोड़े ही था। साहस है तो दुबारा बुलाओ।"

बैजू बावरा ने मुसकराकर कहा, "बहुत अच्छा।" उसने सितार उठाया और एक बार फिर संगीत लहरी वायुमंडल में लहराने लगी और सुनने वाले फिर से उन संगीत लहरों में डूबने लगे, हिरन बैजू बावरा के पास फिर आ गए, वे ही हिरन जिनकी ग्रीवाओं में बैजू ने फूल-मालाएँ डाली थीं और जो राग की सुरीली ध्वनि के आकर्षण से खिंचे चले आए थे। बैजू बावरा ने जैसे ही उनकी ग्रीवा से मालाएँ उतारी, हिरन कूदते-फाँदते हुए पुनः लुप्त हो गए।

अकबर को तानसेन से अगाध प्रेम था। जब उसकी मृत्यु निकट देखी तो कंठ भर आया। लेकिन वे कर भी क्या सकते थे? तानसेन शर्त जो हार गए थे। विवश होकर उन्होंने संक्षेप में निर्णय सुना दिया, "बैजू बावरा की विजय और तानसेन की पराजय।"

तानसेन काँपते हुए बैजू बावरा की ओर बढ़े। जिसने किसी को मृत्यु के घाट उतारते समय दया नहीं की थी, वह दया की भीख माँगने लगा। तब बैजू बावरा ने कहा, "जहाँपनाह! मेरी प्राण लेने की इच्छा नहीं है। आप इस निष्ठुर नियम को हटा दीजिए कि जो आगरे की सीमाओं के अंदर गाएगा, तानसेन से हार जाने पर मरवा दिया जाएगा।"

अकबर ने अधीरता से कहा, "यह नियम आज, अभी और इसी क्षण समाप्त करता हूँ।" तानसेन बैजू बावरा के चरणों में गिर पड़ा और दीनता से कहने लगा, "मैं यह उपकार जीवनभर न भूलूँगा।"

बैजू बावरा ने उत्तर दिया, "यह उपकार नहीं प्रतिकार है। बारह वर्ष पहले तुमने मेरे पिता के प्राण लिए थे, यह उसी का बदला है।"

शब्दार्थ

संग्राम	– युद्‌ध, लड़ाई	भोर	– सुबह
अनभिज्ञ	– अनजान	अज्ञानता	– नादानी, बेवकूफ़ी
अभियुक्त	– अपराधी	अबोध	– नासमझ
रुदन	– रोना	वज्रपात	– भयंकर चोट, बिजली गिरना
प्रतिकार	– बदला	आकांक्षा	– चाह, इच्छा
अचूक	– जिसका निशाना न चूके	रश्मियाँ	– किरणें
कौतुक	– कौतूहल, उत्सुकता	चेष्टा	– कोशिश
अगाध	– अथाह, गहरा	निष्ठुर	– कठोर, निर्दयी

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–

विद्या – विद्‌या विपत्तियाँ – विपत्तियाँ युद्ध – युद्‌ध

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

सुगंधित परित्याग आकांक्षा रश्मियाँ श्रोताओं विद्‌वत्ता

2. सोचकर बताइए–

(क) साधुओं की मंडली को मृत्युदंड क्यों दिया गया?

(ख) शंकरानंद ने बैजू बावरा को कौन-सा शस्त्र दिया?

(ग) नवयुवक कौन था? वह आगरा के बाज़ार में गाता हुआ क्यों जा रहा था?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) भोर की बेला में साधुओं की मंडली ने कहाँ प्रवेश किया? ....

(ख) अकबर के प्रसिद्‌ध गवैये का नाम लिखिए। ....

(ग) बालक का रुदन सुनकर कुटिया में कौन आया? ....

(घ) बालक तानसेन से क्या लेना चाहता था? ....

(ङ) बालक को पूर्ण गंधर्व बनने में कितने वर्ष लगे? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) तानसेन कौन था?

....

....

(ख) तानसेन ने क्या शर्त रखी हुई थी?

....

....

(ग) बालक का रुदन सुनकर शंकरानंद ने क्या किया?

....

....

(घ) शंकरानंद ने बैजू बावरा से गुरु दक्षिणा में क्या माँगा?

....

....

(ङ) तानसेन के हारने पर क्या हुआ?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) साधुओं की मंडली को अज्ञानता का क्या मूल्य चुकाना पड़ा और क्यों?

....

....

....

....

(ख) बैजू बावरा ने अपना बदला कैसे लिया?

....

....

....

....

(ग) आगरे की जनता पर बैजू बावरा के गायन का क्या प्रभाव पड़ा?

....

....

....

....

(घ) बैजू बावरा की जीत किस आधार पर हुई?

....

....

....

....

(ङ) तानसेन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

....

....

....

....

(च) 'अज्ञानता भी एक अपराध है।' इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) साधु मंडली को क्यों पकड़ा गया था?

(*i*) उन्होंने शाही सवारी को रोकने की कोशिश की थी। ☐

(*ii*) उन्होंने आगरा नगर की शांति भंग की थी। ☐

(*iii*) उन्होंने अज्ञानतावश राजा के आदेश का उल्लंघन किया था। ☐

(*iv*) उन्होंने नगर में चोरी की थी। ☐

(ख) सिपाही बैजू बावरा को गिरफ़्तार क्यों नहीं कर पाए?

(*i*) बैजू बावरा बहुत शक्तिशाली था। ☐

(*ii*) बैजू बावरा उनकी पहुँच से बाहर था। ☐

(*iii*) वे बैजू बावरा के गायन से मुग्ध हो गए थे।
(*iv*) वे बैजू बावरा की दैवीय शक्ति से डर गए थे।

(ग) बैजू बावरा के सितार बजाने पर क्या हुआ?
(*i*) जनता ब्रह्मानंद में डूब गई।
(*ii*) वृक्षों के पत्ते निश्चल हो गए।
(*iii*) वायु थम गई।
(*iv*) उपरोक्त सभी।

(घ) मस्त हिरनों की सुधि कैसे लौटी?
(*i*) फूलों के स्पर्श से।
(*ii*) बैजू बावरा के स्पर्श से।
(*iii*) जनता की करतल ध्वनियों से।
(*iv*) सिपाहियों की खड्ग ध्वनियों से।

(ङ) बैजू बावरा ने तानसेन को मृत्युदंड क्यों नहीं दिया?
(*i*) अकबर का तानसेन के प्रति अगाध प्रेम देखकर।
(*ii*) अकबर के डर से।
(*iii*) गुरु के समक्ष की गई प्रतिज्ञा के कारण।
(*iv*) बैजू बावरा स्वयं तानसेन से बहुत प्रेम करता था।

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) प्रकाश की **विजय** के साथ ही अंधकार की .... निश्चित है।

(ख) साधु **स्वतंत्र** प्रकृति के होते हैं, उन्हें .... जीवन नहीं भाता।

(ग) साधु **निरपराधी** होते हुए भी .... घोषित कर मृत्यु के घाट उतार दिए गए।

(घ) शंकरानंद ने बालक के **अशांत** मन को .... किया।

(ङ) बैजू बावरा ने **अपकार** का बदला .... से चुकाया।

2. नीचे दिए रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर पुनः वाक्य बनाइए–

(क) दुखी प्राणी **भगवान** की शरण में जाकर शांति पाते हैं।

....

(ख) **साधु** प्रभु-भक्ति में लीन था।

....

(ग) **सम्राट** के आदेश का उल्लंघन करना, मृत्यु को वरण करने के समान था।

....

(घ) **गायकों** की मंडली ने भजनों से समा बाँध दिया।

....

(ङ) पिता की मृत्यु से **बालक** गहरे शोक में डूब गया।

....

(च) **गुरु** का आशीर्वाद पाकर बालक धन्य हो गया।

....

(छ) **हिरन** चौकड़ी भरते हुए झाड़ियों में छिप गए।

....

3. नीचे दिए संकेतों के आधार पर वर्ग-पहेली को पूरा कीजिए–

1. दु	____	____	2. ____	____	3. रा
____	4. र		5. ____	____	____
____	____	6. ई	____	____	____
	____	7. प	8. ____	____	____
9. ____	____		____		

बाएँ से दाएँ

(1) संसार का पर्यायवाची
(2) भोर का समानार्थी
(5) महिला का पर्यायवाची
(6) प्रभु का पर्यायवाची
(7) विजय का विलोम
(9) मित्र का विलोम

ऊपर से नीचे

(1) कमज़ोर का समानार्थी
(3) दिन का विलोम
(4) किरण का समानार्थी
(8) रहस्य का समानार्थी

कहानी से आगे

- क्या अज्ञानतावश हुए अपराध के लिए मृत्युदंड देना उचित है? तानसेन द्वारा साधुओं को दिए गए मृत्युदंड के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
- यदि आप बैजू बावरा की जगह होते तो क्या करते?
- इस कहानी में व्यक्ति के किस अधिकार का हनन दिखाई देता है? यदि आज के समय में सरकार द्वारा इस प्रकार की रोक लगा दी जाए तो उसके विरोध में क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

नन्हे हाथों से

- चित्र को देखकर अनुच्छेद लिखिए–

कुछ करने को

- भारत के प्रमुख संगीतज्ञों के चित्र एकत्रकर, उनके विषय में संक्षेप में लिखिए।
- अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से इस कहानी का नाट्य रूपांतरण कर मंचन कीजिए।
- नागरिकों के कौन–कौन से मौलिक अधिकार हैं? जानकारी एकत्र कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि बिना किसी गलती या अपराध के कोई आपको दंडित करने लगे तो आप क्या करेंगे?
- यदि आपका कोई सहपाठी भूलवश आपकी किसी मूल्यवान वस्तु को अपना समझकर अपने बैग में रख ले तो आप क्या करेंगे?

4 क्या निराश हुआ जाए?

वर्तमान समय में समाचार पत्र ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों से भरे रहते हैं। उन्हें पढ़कर मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है जैसे देश में कोई ईमानदार व्यक्ति रह ही नहीं गया है। आजकल हर व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। जो जितने ऊँचे पद पर है, उसमें उतने ही अधिक दोष दिखाई देते हैं।

एक बार एक सज्जन ने मुझसे कहा था कि इस समय सुखी व्यक्ति वही है जो कुछ नहीं करता। कोई कुछ भी करेगा, लोग उसमें दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाएगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि आजकल प्रत्येक व्यक्ति दोषी अधिक दिख रहा है और गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। यह वास्तविकता नहीं है, परंतु अगर ऐसी स्थिति है तो निश्चय ही यह चिंता का विषय है।

यह सही है कि इन दिनों ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। आजकल ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से में आ गई है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था डोलने लगी है।

भारतीय शास्त्रों ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को महत्त्व नहीं दिया है। शास्त्रों की दृष्टि में, मनुष्य के भीतर स्थिर भाव से बैठा महान आंतरिक गुण ही चरम और परम है।

परंतु जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक क़ायदे-कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बना सकें परंतु जिन लोगों को इन कार्यों को करना है, वे प्राय: अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं और कार्य की पूर्ति की बजाय अपनी सुख-सुविधाओं की ओर अधिक ध्यान देने लगते हैं।

भारत में कानून को सदा धर्म के रूप में देखा जाता रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि समाज में ऊपरी तौर पर चाहे जो भी होता रहा हो परंतु भीतर-ही-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ा है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह पाठ आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित है और इसमें सर्वत्र बुराई का उद्घाटन करने वालों पर कटाक्ष किया गया है।
- बच्चों को यह भी बताएँ कि संसार में अच्छाई की कमी नहीं है। अच्छी बातों को उजागर नहीं किया जाता, इसलिए बुरी बातों को सुनकर मन को उदास नहीं करना चाहिए।

मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी मनुष्य, मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति आवेश है, वह यही सिद्ध करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में ऐसे तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान का संग्रह करते हैं।

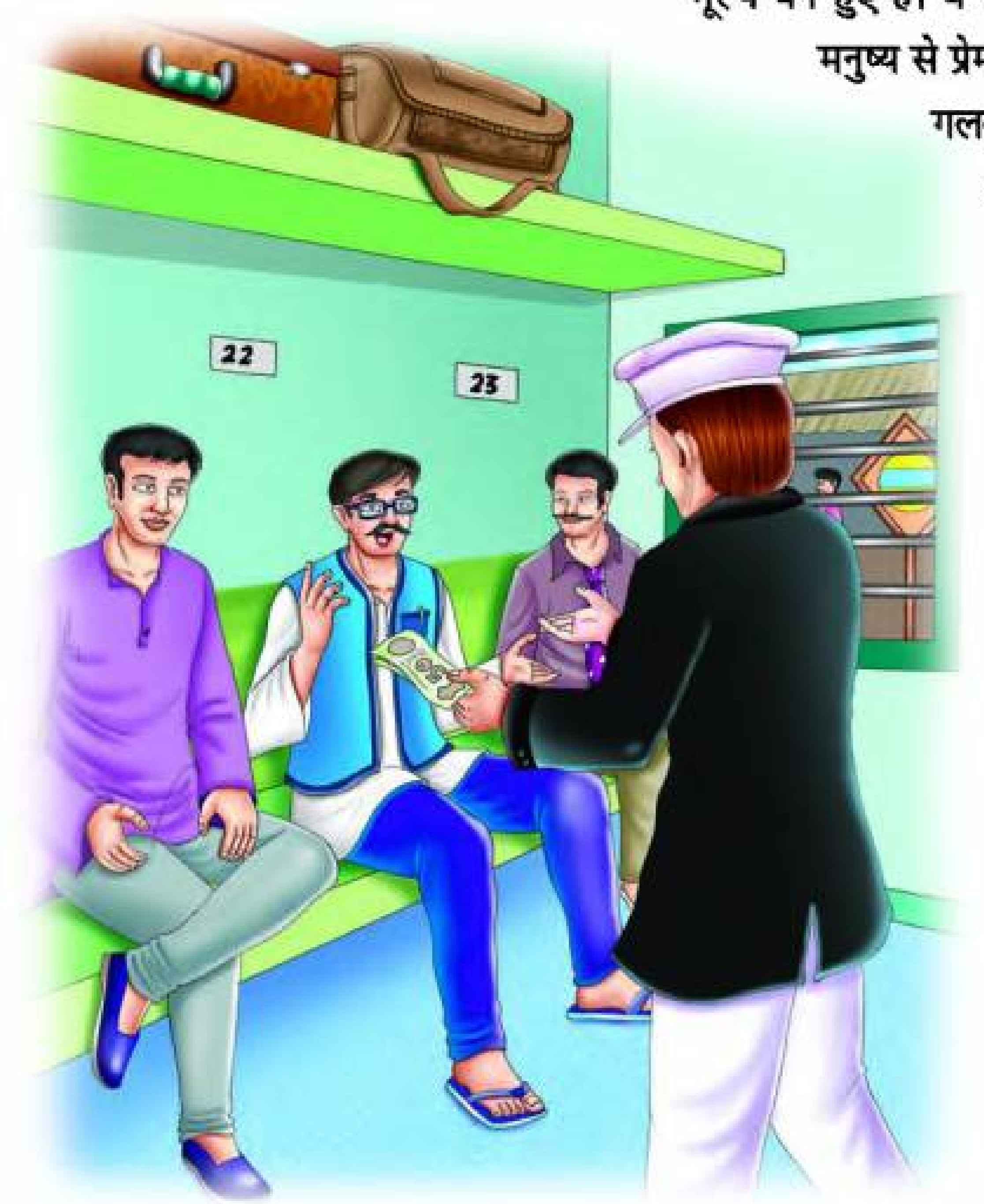

दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई तब होती है जब किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्त्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उसको उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जागती है पर लोग उस अच्छाई को उजागर करना उचित नहीं समझते।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस की बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और टिकट लेकर मैं जल्दी-जल्दी रेलगाड़ी में आकर बैठ गया। रेलगाड़ी चलने ही वाली थी कि तभी टिकट बाबू द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा देखता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता से मेरे हाथ पर नब्बे रुपये रख दिए और बोला, "बहुत बड़ी गलती हो गई। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" रुपये लौटाते समय उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी जिसे देखकर मैं चकित रह गया। कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसे अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं परंतु यह एक ऐसी घटना है जो ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अलग है।

एक बार मैं बस से यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुककर चल रही थी। गंतव्य से लगभग आठ किलोमीटर पहले ही एक सुनसान स्थान पर बस ने जवाब दे दिया। रात के दस बजे होंगे। सभी बस यात्री घबरा गए। परिचालक बस से नीचे उतरा और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि उनके साथ कोई दुर्घटना घटने वाली है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें करनी शुरू कर दीं। किसी ने कहा, "इस स्थान पर डकैती होती है। दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।" उस बस में परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे और पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से डाकुओं का डर मन में समा गया था। कुछ नौजवानों ने चालक को पकड़कर उसे मारने-पीटने की योजना बनाई। चालक के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह

बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, "हम लोग बस यात्रियों को अड्डे तक पहुँचाने का कोई उपाय ढूँढ़ रहे हैं। मुझे इनसे बचाइए, ये लोग मुझे बिना वजह ही मारेंगे।" डर तो मेरे मन में भी था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने क्रोधित थे कि मेरी बात सुनने को तैयार ही नहीं हुए और कहने लगे, "इसकी बातों में मत आइए, यह धोखा दे रहा है। पहले ही सूचना देने के लिए इसने परिचालक को डाकुओं के पास भेज दिया है।" मैं भी बहुत भयभीत था पर चालक को किसी प्रकार मार-पीट से बचाया।

परिचालक को गए हुए डेढ़-दो घंटे बीत गए। सुनसान सड़क पर सभी भयभीत थे। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने चालक को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर खड़े हो गए। कोई भी दुर्घटना हो तो पहले चालक को समाप्त कर देना, उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का उनपर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उसमें हमारी बस का परिचालक भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, "अड्डे से नई बस लाया हूँ। इस बस में बैठिए। वह बस चलने लायक नहीं है।" फिर मेरे पास एक लोटे में थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, "पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। अड्डे पर दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।" दूसरी बस में बैठकर यात्रियों की जान-में-जान आई। सबने परिचालक को धन्यवाद दिया। चालक से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए। कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई है! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-ममता नहीं रह गई है! जीवन में न जाने ऐसी कितनी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता।

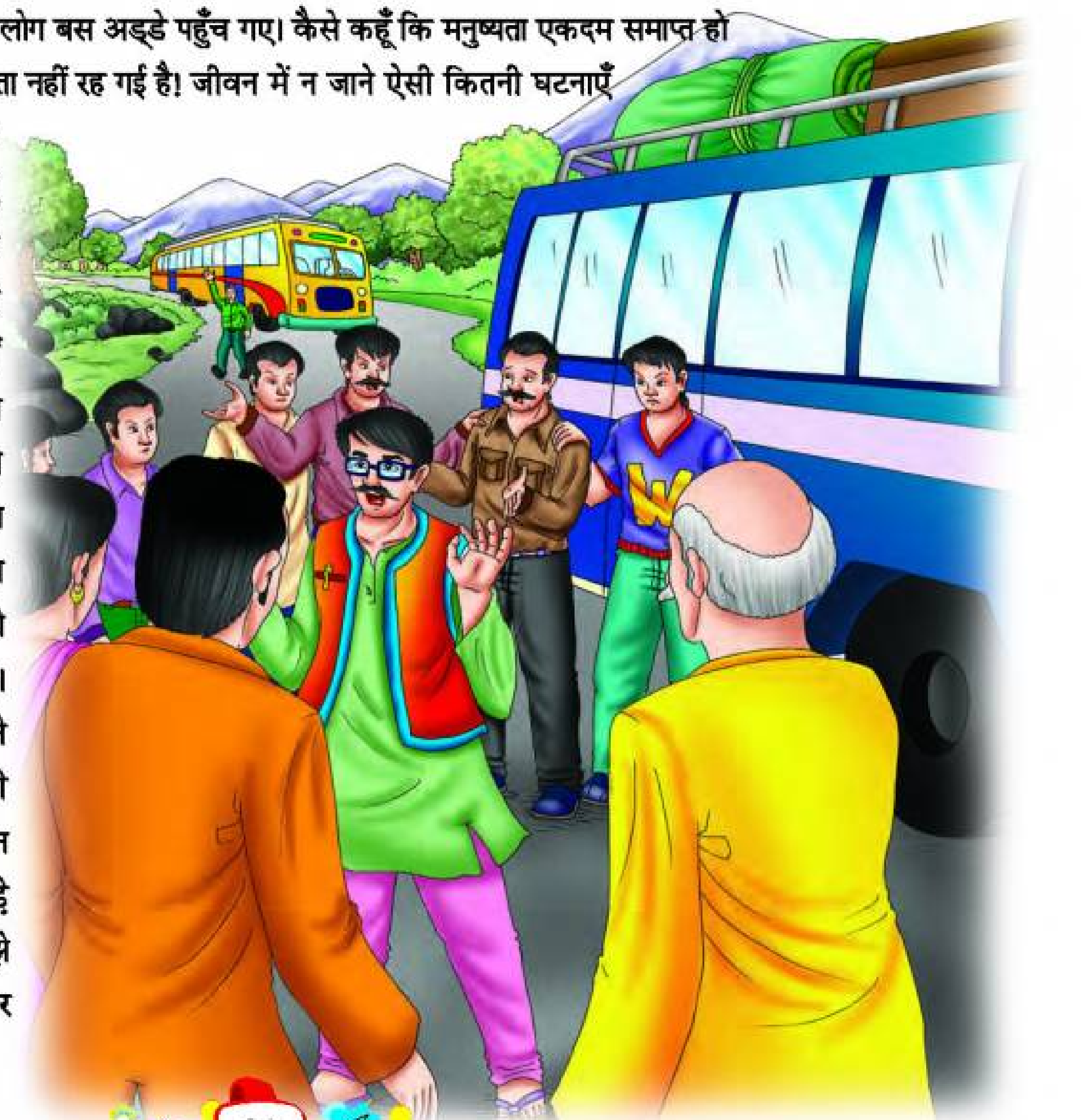

अनेक बार ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखा जाए, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा। परंतु ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढस दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि, "संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभु! मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न कर सकूँ।"

यदि मनुष्य की बनाई हुई विधियाँ गलत परिणाम पर पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। भारतवर्ष को महान बनाने की संभावना बनी हुई है और बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

– हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

आधुनिक युग के मौलिक निबंधकार, उत्कृष्ट समालोचक एवं सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उपन्यासकार आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म 19 अगस्त, 1907 को बलिया जिले के दुबे का छपरा नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता पं० अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई थी। इन्होंने इंटर की परीक्षा और ज्योतिष विषय लेकर आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात द्विवेदी जी शांति-निकेतन चले गए और कई वर्षों तक वहाँ हिंदी विभाग में कार्य करते रहे। शांति-निकेतन में रवींद्रनाथ ठाकुर ने आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रयासों से साहित्य का गहन अध्ययन और उसकी रचना प्रारंभ की। वे हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और बांग्ला भाषाओं के विद्वान थे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी० लिट० की उपाधि से सम्मानित किया। द्विवेदी जी की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं–

साहित्येतिहासः– कबीर, सूर साहित्य, साहित्य का मर्म, मध्यकालीन बोध का स्वरूप आदि।

निबंधः– अशोक के फूल, कुटज, आलोकपर्व आदि।

उपन्यासः– पुनर्नवा, चारू चंद्रलेख, अनामदास का पोथा आदि।

अन्य रचनाएँः– मृत्युंजय रवींद्र, महापुरुषों का स्मरण आदि।

द्विवेदी जी की भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है। इनकी भाषा के दो रूप दिखाई पड़ते हैं– प्राँजल व्यावहारिक भाषा एवं संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय भाषा। द्विवेदी जी का हिंदी निबंध और आलोचनात्मक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे उच्चकोटि के निबंधकार और सफल आलोचक थे। इन्होंने सूर, कबीर, तुलसी आदि पर जो विद्वतापूर्ण आलोचनाएँ लिखी हैं, वे हिंदी में पहले कभी नहीं लिखी गई थीं। विश्व-भारती के द्वारा द्विवेदी जी ने संपादन के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1957 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। हिंदी जगत के इस महान साहित्यकार का निधन 1979 में हुआ।

शब्दार्थ

आरोप-प्रत्यारोप	–	इलज़ाम -इलज़ाम के जवाब में इलज़ाम	संदेह	–	शक
श्रमजीवी	–	मेहनत से जीविका चलाने वाला	त्रुटियों	–	गलतियों, कमियों
आवेश	–	जोश, गुस्सा	कातर	–	भयभीत, डरपोक
विश्वासघात	–	धोखा			

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

भ्रष्टाचार आरोप–प्रत्यारोप दरिद्रजनों आध्यात्मिकता

2. सोचकर बताइए–

(क) धर्म को कानून से बड़ा क्यों कहा गया है?

(ख) प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में किस बात का अनुभव करता है?

(ग) चालक के चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही थीं?

(घ) लोगों ने चालक से माफ़ी क्यों माँगी?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) आजकल हर व्यक्ति को किस दृष्टि से देखा जाता है? ....

(ख) आजकल ईमानदारी को किसका पर्याय समझा जाने लगा है? ....

(ग) भारतवर्ष में कानून से बड़ा किसे माना जाता है? ....

(घ) भारतीय शास्त्रों ने किसे महत्त्व नहीं दिया है? ....

(ङ) चालक ने परिचालक को कहाँ भेज दिया था? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) आजकल प्रत्येक व्यक्ति दोषी अधिक दिखता है और गुणी कम। इसका क्या कारण है?

....

....

(ख) जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था क्यों डोलने लगी है?

....

....

(ग) बस–यात्री क्यों घबरा गए थे?

....

....

(घ) यात्री चालक को घेरकर क्यों खड़े थे?

....

....

(ङ) रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से क्या प्रार्थना की है?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) 'दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है।' 'बुराई में रस लेना बुरी बात है।' इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

....

....

....

....

(ख) 'कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है!' किस घटना से प्रेरित होकर लेखक ने ऐसा कहा है?

....

....

....

....

(ग) 'केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखा जाए, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।' इस पंक्ति के भावार्थ को स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) किसका पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है?

(*i*) दोषों का ☐	(*ii*) गुणों का ☐
(*iii*) अच्छाई का ☐	(*iv*) भ्रष्टाचार का ☐

(ख) रेलवे स्टेशन पर लेखक से क्या गलती हो गई थी?

(*i*) गलत रेलगाड़ी में बैठ गए थे।

(*ii*) अपना बैग टिकट खिड़की पर छोड़ आए थे।

(*iii*) टिकट बाबू को दस की बजाय सौ रुपये देकर चले आए थे।

(*iv*) बिना टिकट के यात्रा कर रहे थे।

(ग) चालक ने सुनसान स्थान पर बस क्यों रोकी?

(*i*) बस में लूटपाट करवाने के लिए (*ii*) थकान मिटाने के लिए

(*iii*) तबीयत खराब हो जाने के कारण (*iv*) बस खराब हो जाने के कारण

(घ) परिचालक बस अड्डे पर क्यों गया था?

(*i*) डाकुओं को सूचित करने के लिए।

(*ii*) दूसरी बस का प्रबंध करने के लिए।

(*iii*) खाने-पीने की सामग्री लाने के लिए।

(*iv*) बस ठीक करवाने हेतु मिस्त्री को बुलाने के लिए।

(ङ) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

(*i*) मन को निराश करने की आवश्यकता नहीं है।

(*ii*) मन के अनुसार कार्य संभव नहीं है।

(*iii*) मन को मारकर कार्य करना पड़ता है।

(*iv*) मन को वश में रखने की आवश्यकता है।

5. नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस की बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और मैं जल्दी-जल्दी रेलगाड़ी में आकर बैठ गया। रेलगाड़ी चलने ही वाली थी कि तभी टिकट बाबू द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता से मेरे हाथ पर नब्बे रुपये रख दिए और बोला, "बहुत बड़ी गलती हो गई। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" रुपये लौटाते समय उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी जिसे देखकर मैं चकित रह गया। कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है?

(क) लेखक कौन-सी श्रेणी के डिब्बे में सफ़र कर रहे थे?

(*i*) द्वितीय (*ii*) लोकल (*iii*) महिलाएँ (*iv*) वातानुकूलित

(ख) टिकट बाबू ने कितने रुपये लौटाए?

(*i*) दस (*ii*) पचास (*iii*) नब्बे (*iv*) चालीस

(ग) रुपये लौटाते समय टिकट बाबू ने क्या कहा?

....

....

(घ) लेखक क्या देखकर चकित रह गया?

....

....

(ङ) गद्यांश में प्रयुक्त कोई दो संबंधबोधक शब्द लिखिए।

....

भाषा ज्ञान

संज्ञा या सर्वनाम का जो रूप क्रिया अथवा अन्य किसी शब्द से संबंध स्थापित करे, उसे **कारक** कहते हैं; जैसे– नीरज ने पंकज के लिए सूरज के द्वारा मिठाई भिजवाई। उपरोक्त वाक्य में **ने**, **के लिए**, **के द्वारा** कारक शब्द हैं। इन्हें **परसर्ग** भी कहते हैं। कारक के आठ भेद हैं–

कर्ता (ने), कर्म (को), करण (से), संप्रदान (के लिए), अपादान (से), अधिकरण (में, पर), संबंध (का, के, की) एवं संबोधन (हे, अरे!)।

1. नीचे दिए वाक्यों में कारक शब्दों पर ◯ लगाइए और कारक के भेद लिखिए–

(क) देश (में) कोई ईमानदार व्यक्ति रह ही नहीं गया है। **अधिकरण**

(ख) ईमानदार को मूर्ख समझा जाने लगा है। ....

(ग) कानून धर्म से बड़ा है। ....

(घ) उसने मुझे पहचान लिया है। ....

(ङ) हे प्रभु! मुझे शक्ति दो। ....

(च) अड्डे पर दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया। ....

(छ) दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए अनेक कानून बनाए गए हैं। ....

2. नीचे दिए शब्दों को छाँटकर उचित स्थान पर लिखिए–

रवींद्रनाथ ठाकुर	ईमानदारी	महिला	भारतवर्ष	सच्चाई	हजारी प्रसाद द्विवेदी
दरिद्रता	समाचार पत्र	बस	मूर्खता	व्यक्ति	नई दिल्ली

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

3. नीचे दिए वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्दों को रेखांकित कीजिए–

(क) आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है।

(ख) जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

(ग) यात्री इतने घबरा गए थे कि मेरी बात सुनने को तैयार ही नहीं थे।

(घ) अनेक बार ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है परंतु बहुत कम स्थलों पर।

4. नीचे दिए वाक्यों को रेखांकित शब्दों के विलोम शब्दों से पूरे कीजिए–

(क) आजकल हर जगह <u>बेईमानी</u> ही नज़र आती है, ... तो जैसे लुप्त ही हो गई है।

(ख) हमें <u>निराशा</u> को त्यागकर .... की किरण को जगाए रखना चाहिए।

(ग) हर समय <u>अधिक</u> की आशा न करके कभी-कभी .... में ही संतोष कर लेना चाहिए।

(घ) <u>नालायक</u> बनकर मत बैठो, किसी .... बनकर दिखाओ।

लेख से आगे

- प्रायः लोग दूसरों के दोषोद्घाटन को तत्पर रहते हैं। सोचिए, यदि किसी के दोषों का उद्घाटन न किया जाए तो समाज में कौन-सी स्थिति देखने को मिलेगी?
- यदि टिकट बाबू रुपये लौटाने नहीं आता तो लेखक के मन पर उस घटना का क्या प्रभाव पड़ता और वे अपने विचार किस प्रकार प्रकट करते?
- यदि बस यात्रियों का संदेह सही निकलता तो लेखक को किस घटना का सामना करना पड़ता? कल्पना के आधार पर उत्तर दीजिए।

नन्हे हाथों से

- **अपने या अपने परिचित के साथ घटी किसी ऐसी घटना का वर्णन कीजिए जिसमें किसी व्यक्ति ने बिना किसी स्वार्थ के भलाई और ईमानदारी का कार्य किया हो।**

....

....

....

....

....

....

....

....

• चित्र देखकर घटना का वर्णन कीजिए।

कुछ करने को

- आजकल समाचार पत्रों और टीवी चैनलों पर धड़ल्ले से दोषों का पर्दाफ़ाश किया जाता है। समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? तथा समाज में मीडिया की भूमिका व सार्थकता पर कक्षा में विचार-विमर्श कीजिए।
- समाचार पत्रों में छपी अच्छाई व भलाई से संबंधित घटनाओं की कतरन अपनी प्रोजेक्ट फ़ाइल में लगाइए।

आप क्या करेंगे

- यदि कोई व्यक्ति, दुर्घटना में घायल हुए व्यक्ति की सहायता न करके, उसका बहुमूल्य सामान हड़पने में लगा हो तो उसे देखकर आप क्या करेंगे?
- यदि आपके पड़ोसी कुछ दिनों के लिए कहीं घूमने गए हों और उनकी अनुपस्थिति में उनके घर से आपको कुछ आवाज़ें सुनाई दें तो आप क्या करेंगे?

क्या आप जानते हैं?

(क) सफदरजंग का मकबरा किसने बनवाया था?

(i) शाहजहाँ
(ii) शुजा-उद्दौला
(iii) अकबर
(iv) जहाँगीर

(ख) योजना आयोग के पहले अध्यक्ष कौन थे?

(i) महात्मा गांधी
(ii) सरदार बल्लभभाई पटेल
(iii) जवाहरलाल नेहरू
(iv) इंदिरा गांधी

(ग) दक्षिणी ध्रुव की खोज किसने की थी?

(i) जॉन लॉक ने
(ii) रूसो ने
(iii) एडविन ने
(iv) एमंडसन ने

(घ) 'उठो, जागो और आगे बढ़ते रहो, जब तक सफलता नहीं मिल जाती।' उक्त कथन किसका है?

(i) स्वामी विवेकानंद का
(ii) सरदार बल्लभभाई पटेल
(iii) जवाहरलाल नेहरू का
(iv) स्वामी रामाकृष्णन का

(ङ) 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है', यह कथन किसका है?

(i) कौटिल्य का
(ii) अरस्तु का
(iii) स्वामी विवेकानंद का
(iv) स्वामी रामाकृष्णन का

(च) 'मोनालिसा' नामक चित्र की रचना किसने की थी?

(i) कौटिल्य
(ii) अलेक्जेंडर
(iii) लियोनार्डो द विंसी
(iv) जॉन लॉक

(छ) सर्वप्रथम कागज का अविष्कार कहाँ हुआ था?

(i) भारत
(ii) चीन
(iii) अफ्रीका
(iv) जापान

(ज) प्रकृति को महान शिक्षक किसने बताया है?

(i) स्वामी विवेकानंद
(ii) रवींद्रनाथ टैगोर
(iii) जवाहरलाल नेहरू
(iv) स्वामी रामाकृष्णन

(झ) चीनी यात्री फाह्यान किसके शासनकाल में भारत आया था?

(i) चंद्रगुप्त मौर्य
(ii) विक्रमादित्य
(iii) चंद्रगुप्त द्वितीय
(iv) अकबर

(ञ) 'मुद्राराक्षस' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?

(i) चंद्रगुप्त मौर्य (ii) जयदेव
(iii) विशाखदत्त (iv) कालीदास

(ट) 'गीत गोविंद' के रचनाकार कौन हैं?

(i) जयदेव (ii) रामधारी सिंह दिनकर
(iii) कालीदास (iv) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(ठ) मानव द्वारा सर्वप्रथम किस धातु का प्रयोग किया गया?

(i) अभ्रक (ii) ताँबा
(iii) स्टील (iv) लोहा

(ड) घरेलू मक्खी द्वारा फैलाया जाना वाला रोग कौन-सा है?

(i) अतिसार (ii) हैजा
(iii) कालाजार (iv) मलेरिया

(ढ) भारत का प्रधानमंत्री बनने के लिए न्यूनतम आयु कितनी होनी चाहिए?

(i) 20 वर्ष (ii) 25 वर्ष
(iii) 30 वर्ष (iv) 35 वर्ष

(ण) 'साँची के स्तूप' का निर्माण किसने करवाया था?

(i) चंद्रगुप्त (ii) विक्रमादित्य
(iii) अशोक (iv) अकबर

(त) 'ऐन एरिया ऑफ डार्कनेस' किसकी रचना है?

(i) जॉन लॉक (ii) विलियम शेक्सपियर
(iii) जवाहर लाल नेहरू (iv) वी॰एस॰ नॉयपाल

(थ) ब्रह्मा जी का एकमात्र मंदिर कहाँ स्थित है?

(i) पुष्कर में (ii) अजमेर में
(iii) सुरजकुंड में (iv) आगरा में

(द) 'गरबा' कहाँ का लोक नृत्य है?

(i) बंगाल का (ii) गुजरात का
(iii) अरुणाचल प्रदेश का (iv) हरियाणा का

(ध) 'छऊ' किस राज्य का प्रमुख लोकनृत्य है?

(i) महाराष्ट्र का (ii) उत्तर प्रदेश का
(iii) झारखंड का (iv) पंजाब का

5 तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
नहीं छायादार पेड़,
वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार।
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्मरत मन।
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार।
सामने तरु मालिका अट्टालिका प्राकार,
चढ़ रही थी धूप।
गरमियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप।
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू।
गर्द चिनगी छा गई,
प्रायः हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार,
उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह कविता हिंदी के प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी द्वारा रचित है। जिन्होंने छंद-बद्ध काव्य शृंखला को तोड़कर मुक्त छंद की स्थापना की है और अनेक कालजयी कविताओं की रचना की है। इस कविता में कवि ने नारी के सुदृढ़ मनोबल और सतत संघर्षशीलता का सुंदर चित्रण किया है।
- बच्चों को कर्म की महत्ता के बारे में बताएँ।
- बच्चों में मज़दूरों के प्रति सम्मान एवं समानता का भाव जागृत करें।

देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
"मैं तोड़ती पत्थर!"

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शब्दार्थ

पथ	–	राह	श्याम	–	काला
नत	–	झुके हुए	कर्मरत	–	कार्य में लगा हुआ
गुरु	–	भारी, बड़ा	प्रहार	–	चोट
अट्टालिका	–	ऊँची इमारत, अटारी	प्राकार	–	चारदीवारी
दिवा	–	दिन	सुघर	–	सुघड़, सुडौल, सुंदर
ढुलक	–	नीचे की ओर बहना	सीकर	–	पसीने की बूँदें
इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–			अट्टालिका	–	अट्टालिका

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

पत्थर अट्टालिका चिनगी दृष्टि कर्म

2. सोचकर बताइए–

(क) कवि ने स्त्री को कहाँ देखा?

(ख) स्त्री धूप में क्यों बैठी थी?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) स्त्री क्या तोड़ रही थी? ....

(ख) कविता में कौन-से मौसम का वर्णन किया गया है? ....

(ग) स्त्री के हाथ में क्या था? ....

(घ) धरती किसके समान जल रही थी? ....

(ङ) मज़दूर स्त्री के माथे से क्या बह रहा था? ....

2. **नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–**

(क) स्त्री क्या कर रही थी?

....

....

(ख) स्त्री की स्थिति का वर्णन कीजिए।

....

....

(ग) कवि ने स्त्री की कर्मठता का वर्णन किस प्रकार किया है?

....

....

(घ) इस कविता से क्या संदेश मिलता है?

....

....

3. **निम्न पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए–**

(*i*) उठी झुलसाती हुई लू, रुई ज्यों जलती हुई भू।

....

....

....

....

....

(ii) देखा मुझे उस दृष्टि से, जो मार खा रोई नहीं।

....

....

....

....

(iii) लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा– "मैं तोड़ती पत्थर!"

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) कवि ने पत्थर तोड़ते हुए किसे देखा था?

(i) बच्चे को ☐ (ii) स्त्री को ☐ (iii) बुढ़िया को ☐ (iv) आदमी को ☐

(ख) स्त्री कौन-से वृक्ष के नीचे बैठी थी?

(i) छायादार ☐ (ii) फलदार ☐ (iii) छायारहित ☐ (iv) काँटों युक्त ☐

(ग) स्त्री का मन कहाँ लगा हुआ था?

(i) गायन में ☐ (ii) कार्य में ☐ (iii) मनोविनोद में ☐ (iv) भक्ति में ☐

(घ) धरती क्यों जल रही थी?

(i) लू चलने के कारण ☐ (ii) आग जलने के कारण ☐

(iii) रुई के गट्ठर में आग लगने के कारण ☐ (iv) ज्वालामुखी के कारण ☐

5. नीचे दिए काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।

देव, मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चूँ पड़ूँगी या कमल के फूल में।

(क) बूँद कहाँ से निकली थी?

(*i*) आसमान की गोद से (*ii*) बादलों की गोद से

(*iii*) तारों की गोद से (*iv*) हवा की गोद से

(ख) बूँद को किस बात का दुख था?

(*i*) अँगारे पर गिरने का (*ii*) धूल में मिलने का

(*iii*) कमल के फूल पर गिरने का (*iv*) घर से निकलने का

(ग) बूँद की सोच में क्या झलक रहा है?

(*i*) अनिश्चितता (*ii*) चिंतन (*iii*) दुविधा (*iv*) खुशी

(घ) बूँद देव से क्या जानना चाहती है?

(*i*) घर का रास्ता (*ii*) मंज़िल का रास्ता

(*iii*) भाग्य के बारे में (*iv*) अंत का रहस्य

(ङ) काव्यांश से क्रियाविशेषण शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

....

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

पत्थर – .... पथ – ....

पेड़ – .... नयन – ....

हाथ – .... दिन – ....

भू – .... भवन – ....

माथा – .... तन – ....

2. नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

स्वीकार – .... श्याम – ....

नत – .... दिवा – ....

गुरु – .... कर्मरत – ....

3. नीचे दिए शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए–

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
छायादार	–	....	+	....

मज़दूरी – .... + ...

दुपहरी – .... + ...

अट्टालिका – .... + ...

दृष्टिवान – .... + ...

4. नीचे दिए वाक्यों में सहायक क्रिया पदों पर ◯ लगाइए–

(क) झुलसाने वाली लू चल रही थी।

(ख) स्त्री तपती दोपहर में भी कार्य किए जा रही थी।

(ग) उसके माथे से पसीना टपक रहा था।

(घ) मज़दूर लू चलने पर भी कार्य में लगे रहते हैं।

कविता से आगे

- यदि मज़दूर मौसम को ध्यान में रखकर कार्य करने लगें तो क्या होगा?
- यदि सभी मनुष्य कर्म की महत्ता को समझ लें तो समाज में क्या परिवर्तन देखने को मिलेंगे?

नन्हे हाथों से

- **'श्रम ही जीवन है' पर अनुच्छेद लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

- चित्र को देखकर कुछ वाक्य लिखिए।

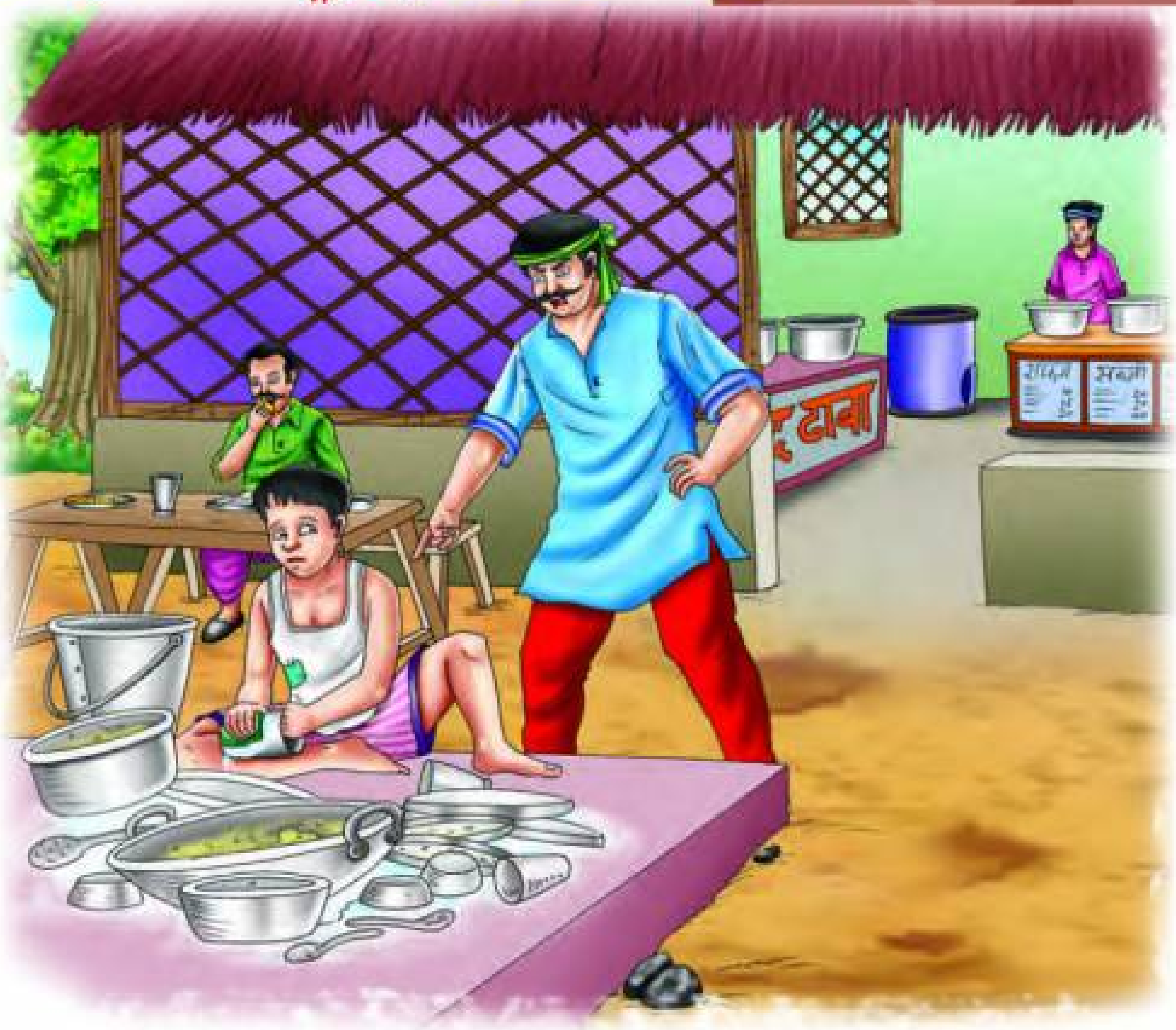

कुछ करने को

- 'निराला' जी की कविताएँ एकत्र करके पढ़िए।
- श्रमिकों का जीवन बहुत ही कठिन होता है, तब भी महिलाओं एवं बाल श्रमिकों का शोषण एक सामान्य बात है। चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों से श्रम करवाना कानूनी अपराध है। बाल श्रमिकों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए और एक प्रोजेक्ट फ़ाइल तैयार कीजिए।
- श्रम कानून के अनुसार श्रमिकों के क्या-क्या अधिकार हैं? जानकारी एकत्र कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके घर में काम करने वाली बाई स्वयं न आकर अपनी दस-बारह वर्षीया बेटी को काम करने हेतु भेजना शुरू कर दे तो आप क्या करेंगे?
- यदि आपके घर के आस-पास निर्माण कार्य में लगे किसी श्रमिक को भयंकर चोट लग जाए तो आप क्या करेंगे?

6 सदाचार का तावीज़

किसी राज्य में हो-हल्ला मचा था कि सर्वत्र भ्रष्टाचार फैल गया है। फैलते-फैलते यह बात राजा के कानों में पहुँची।

एक दिन राजा ने सभा बुलाकर दरबारियों से कहा, "प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सर्वत्र भ्रष्टाचार फैला हुआ है। बहुत ढूँढ़ा पर हमें तो कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।"

दरबारियों ने कहा, "हुज़ूर, जब आपको नहीं दिखा, तो हमें कैसे दिख सकता है?"

राजा ने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं है। कभी-कभी जो मुझे नहीं दिखता है, वह तुम्हें अवश्य दिखता होगा; जैसे- मुझे बुरे सपने नहीं दिखते, पर तुम्हें तो दिखते ही होंगे।"

दरबारियों ने कहा, "जी हुज़ूर, दिखते हैं। पर वह सपनों की बात है।"

राजा ने कहा, "फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं छिपा बैठा है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना अवश्य लेते आना। हम भी तो देखें कि यह होता कैसा है!"

एक दरबारी ने कहा, "हुज़ूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज़ें दिखती ही नहीं। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है, पर हमारे राज्य में एक जाति रहती है जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास ऐसा अंजन होता है जिसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज़ भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि उन विशेषज्ञों को बुलाकर, उन्हें ही भ्रष्टाचार को ढूँढ़ने का कार्य सौंपा जाए।"

राजा ने विशेषज्ञ जाति के लोगों को बुलाने का आदेश दिया। विशेषज्ञ जाति के पाँच आदमी आए। उन्हें देखकर राजा ने कहा, "सुना है, हमारे राज्य में बहुत भ्रष्टाचार फैला हुआ है, पर वह है कहाँ, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना।"

विशेषज्ञों ने उसी दिन से भ्रष्टाचार को ढूँढ़ने के लिए छानबीन शुरू कर दी। दो महीने बाद वे पुनः दरबार में उपस्थित हुए।

राजा ने पूछा, "विशेषज्ञो, तुम्हारी जाँच पूरी हो गई?"

"जी सरकार!" विशेषज्ञों ने नम्रता से कहा।

"क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला?" राजा ने तुरंत प्रश्न किया।

"जी, बहुत-सा मिला।" एक विशेषज्ञ बोलता हुआ आगे बढ़ा।

राजा ने हाथ बढ़ाया, "लाओ, मुझे दिखाओ। देखूँ, कैसा होता है?"

शिक्षण संकेत

- बच्चों को समझाएँ कि भ्रष्टाचार समाज को खोखला कर देता है। अतः अपने कार्य के लिए न तो किसी को रिश्वत देनी चाहिए और न ही किसी लालच में आकर गलत कार्य करना चाहिए।

एक विशेषज्ञ बोला, "महाराज, वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है, पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है।"

राजा सोच में पड़ गए। बोले, "विशेषज्ञो, तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के होते हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?"

विशेषज्ञों ने कहा, "हाँ, महाराज! भ्रष्टाचार अब ईश्वर हो गया है।"

एक दरबारी ने पूछा, "पर वह है कहाँ? उसे कैसे अनुभव किया जा सकता है?"

विशेषज्ञों ने जवाब दिया, "वह सर्वत्र है। वह इस भवन में भी है। यहाँ तक कि महाराज के सिंहासन में भी है।"

"सिंहासन में है?" यह कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए।

विशेषज्ञों ने कहा, "हाँ सरकार, सिंहासन में भी है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के लिए जिस बिल का भुगतान किया गया था, वह बिल झूठा था। वह वास्तव में दुगुने दाम का था। आधा पैसा बीच वाले खा गए। इसी तरह आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार फैला है और वह मुख्यतः घूस के रूप में है।"

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हो गए और भ्रष्ट दरबारियों के कान खड़े हो गए।

राजा ने कहा, "यह तो बड़ी चिंता की बात है। हम भ्रष्टाचार को पूर्णरूप से मिटा देना चाहते हैं। विशेषज्ञो, क्या तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है?"

विशेषज्ञों ने कहा, "हाँ महाराज, हमने उसकी भी योजना तैयार कर ली है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए राज्य की व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के सारे अवसर मिटाने होंगे; जैसे– ठेका है, तो ठेकेदार है और ठेकेदार है तो अधिकारियों के लिए घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस स्वतः ही मिट जाएगी। इसी तरह और भी बहुत-सी चीज़ें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है।"

राजा ने कहा, "अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारे दरबारी उस पर विचार करेंगे।"

विशेषज्ञ चले गए। राजा ने दरबारियों के साथ मिलकर भ्रष्टाचार मिटाने की योजना पर विचार किया। विचार करते-करते दिन बीतने लगे। भ्रष्टाचार का कोई समाधान न निकलते देख राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। तब एक दिन एक दरबारी ने कहा, "महाराज, चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने तो आपको ऐसी योजना देकर झंझट में डाल दिया।"

राजा ने कहा, "पर करें क्या? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है? क्या उसे प्रयोग में लाया जाना चाहिए?"

दरबारियों ने कहा, "महाराज, यह योजना क्या है, एक मुसीबत है। इसके अनुसार तो राज्य में कितने ही उलट-फेर करने पड़ेंगे। उनसे जनता को कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट-पलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब निकालनी चाहिए, जिससे बिना कुछ उलट-फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।"

राजा साहब बोले, "मैं भी यही चाहता हूँ, पर यह संभव कैसे हो? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था, हमें वह भी नहीं आता। तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।" फिर दरबारी दूसरा उपाय खोजने में जुट गए।

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा, "महाराज, यह एक पहुँचे हुए साधक हैं। इन्होंने कठिन तपस्या करके सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह तावीज़ मंत्रों से सिद्ध है और उसे बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।"

राजा ने आश्चर्य से साधु को देखा। राजा की मनःस्थिति को समझते हुए साधु ने अपने झोले से तावीज़ निकालकर उनको दिया। राजा ने उसे देखा और बोले, "हे साधु, इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?"

साधु ने समझाया, "महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं आता। जब विधाता मनुष्य को बनाता है, तब किसी की आत्मा में ईमानदारी की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमानदारी या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमानदारी के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी चिंतन में लगा था। मैंने कई वर्षों की तपस्या के बाद यह सदाचार का तावीज़ बनाया है, यह जिस आदमी की भुजा पर बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी इसका प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने पर कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। इसका अर्थ यह है कि इस तावीज़ से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है, तब इस तावीज़ की शक्ति उस आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ से ईमानदारी के स्वर सुनाई देने लगते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। सदाचार की प्रेरणा पाकर वह ईमानदारी को अपनाकर बेईमानी को त्याग देता है। महाराज! यही इस तावीज़ का गुण है। यह महीने के पूरे तीस दिन काम करेगा।" यह सुनकर दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ-उठकर तावीज़ को देखने लगे।

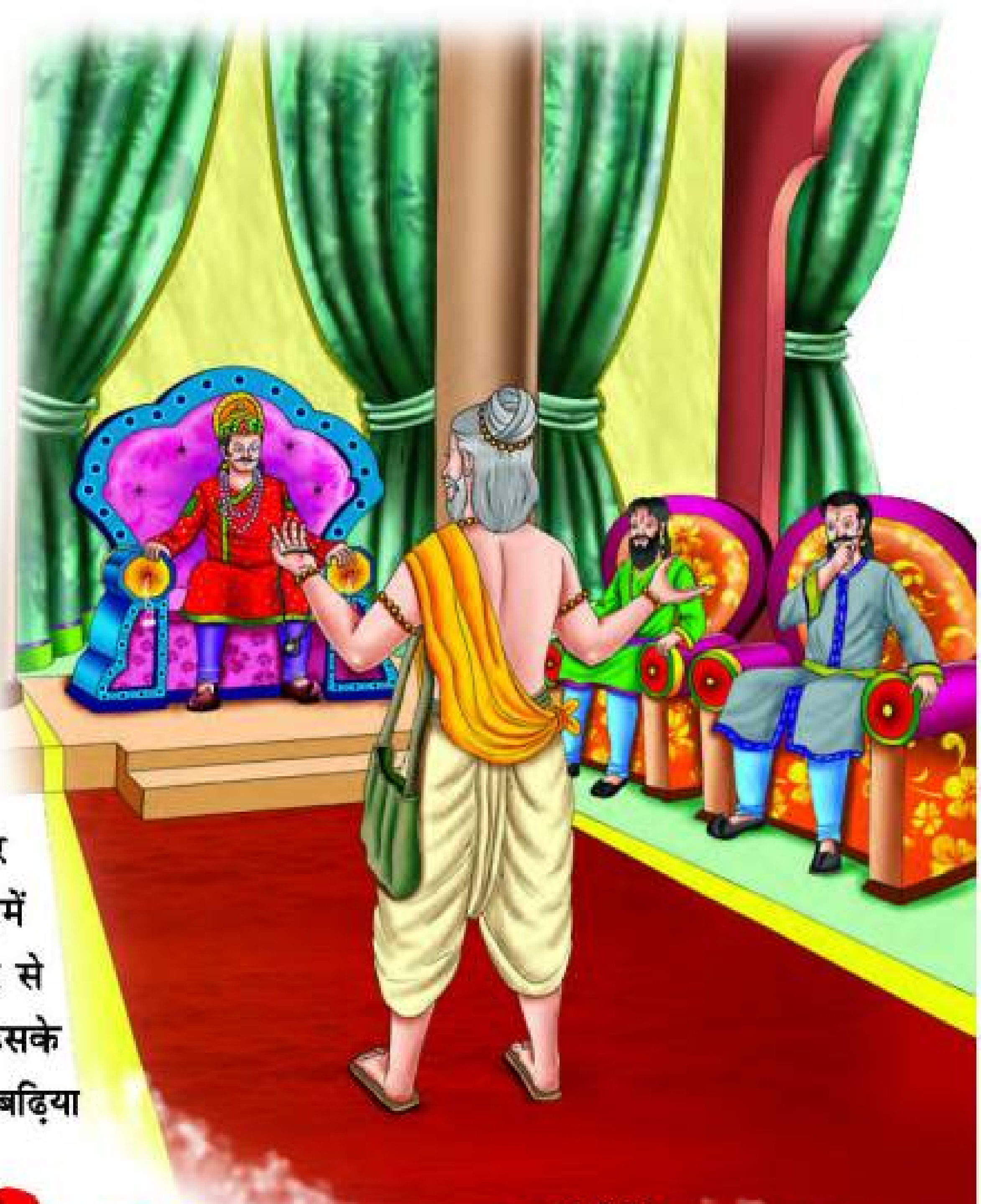

राजा ने प्रसन्न होकर कहा, "मुझे मालूम नहीं था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन, हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत दुखी थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से तावीज़ बनाने का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके मुख्य प्रबंधक बन जाएँ और अपनी देखरेख में शीघ्रता से बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।"

तब मंत्री ने कहा, "महाराज, राज्य इस झंझट में क्यों पड़े? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ही इसका ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर हमें दे देंगे।" राजा को मंत्री का यह सुझाव पसंद आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया। उसी समय तावीज़ का कारखाना खोलने के लिए साधु को पाँच करोड़ रुपये की पेशगी दे दी गई।

कुछ दिनों बाद राज्य के समाचार पत्रों में यह समाचार छपा– "सदाचार के तावीज़ की खोज। तावीज़ बनाने का कारखाना खुला।" लाखों तावीज़ बनाए गए। राजा की आज्ञा से प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक-एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी भी खुश थे। एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। उन्होंने सोचा– "देखें तो सही कि यह तावीज़ कैसे काम करता है?" वे वेश बदलकर एक कार्यालय में गए। उस दिन दो तारीख थी। एक दिन पहले ही वेतन मिला था। वे एक कर्मचारी के पास गए और कई कार्य बताकर उसे पाँच सौ रुपये का नोट देने लगे।

कर्मचारी ने उन्हें डाँटा– "भाग जाओ यहाँ से! घूस लेना पाप है।"

राजा बहुत प्रसन्न हुए। तावीज़ ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था। कुछ दिन बाद वह फिर से वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी– महीने का आखिरी दिन। राजा ने कार्य बताकर उसे पाँच सौ रुपये का नोट दिखाया तो उसने लेकर जेब में रख लिया। राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोले– "मैं तुम्हारा राजा हूँ। क्या तुम आज सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए?"

"बाँधा है सरकार, यह देखिए।" उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया। राजा असमंजस में पड़ गए, फिर ऐसा कैसे हो गया? उन्होंने तावीज़ कान पर लगाकर सुना। तावीज़ से स्वर निकल रहे थे– "अरे! आज इकतीस है। आज तो ले ले!"

–हरिशंकर परसाई

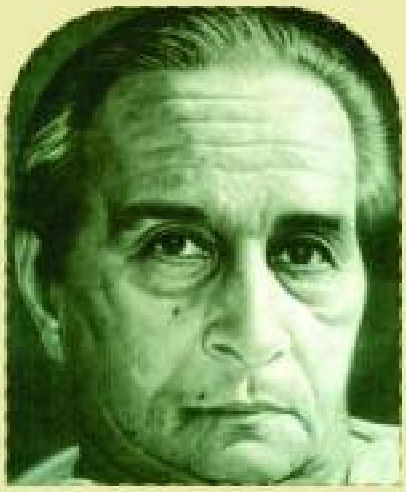

हरिशंकर परसाई का जन्म सन 1922 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में जमानी नामक गाँव में हुआ था। गाँव से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ये नागपुर चले आए। नागपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने हिंदी से एम०ए० की परीक्षा पास की। कुछ दिनों तक इन्होंने अध्यापन कार्य किया। इसके बाद इन्होंने स्वतंत्र-लेखन प्रारंभ कर दिया। इन्होंने जबलपुर में साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को बहुत निकटता से पकड़ा। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं:-

कहानी संग्रह:- हँसते हैं, रोते हैं, भोलाराम का जीव।

उपन्यास:- रानी नागफनी की कहानी, ज्वाला और जल आदि।

निबंध संग्रह:- तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, काग-भगोड़ा आदि।

व्यंग्य संग्रह:- वैष्णव की फिसलन, तिरछी रेखाएँ, विकलांग श्रद्धा का दौर आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ:- पाखंड, बेईमानी आदि पर परसाई जी ने अपने व्यंग्यों से गहरी चोट की है। वे बोलचाल की सामान्य भाषा का प्रयोग करते थे। चुटीला व्यंग्य करने में परसाई जी बेजोड़ थे। हरिशंकर परसाई की भाषा में व्यंग्य की प्रधानता है। उनकी भाषा सामान्य संरचना के कारण विशेष महत्त्व रखती है। उनके एक-एक शब्द में व्यंग्य के तीखेपन को देखा जा सकता है। लोक-प्रचलित हिंदी के साथ-साथ उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का भी इन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। इनका निधन 10 अगस्त, 1995 को हो गया।

शब्दार्थ

- **भ्रष्टाचार** – बेईमानी, दूषित आचार
- **अंजन** – काजल
- **सूक्ष्म** – बारीक
- **सर्वव्यापी** – सब ओर फैला हुआ
- **सदाचार** – अच्छा आचरण
- **कल** – यंत्र, मशीन, चैन, अगला या पिछला दिन
- **विराट** – बहुत बड़ा, भारी, प्राधान्य
- **स्थूल** – मोटा, सहजता से दिखाई देने योग्य
- **अगोचर** – अप्रकट, अप्रत्यक्ष
- **घूस** – रिश्वत
- **तावीज़** – कागज, भोजपत्र आदि पर अंकित मंत्र, चक्र आदि जिसे संपुट में बंद करके गले, बाँह, कमर आदि में धारण करते हैं।
- **पेशगी** – अग्रिम, किसी वस्तु के मूल्य या किसी कार्य के पारिश्रमिक का वह अंश जो करने वाले को कार्य पूरा होने से पहले दिया जाता है।

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

भ्रष्टाचार   विशेषज्ञ   सर्वव्यापी   स्वास्थ्य   व्यवस्था

2. **सोचकर बताइए–**

(क) राज्य में सर्वत्र फैला भ्रष्टाचार क्यों नहीं दिखाई दे रहा था?

(ख) क्या सचमुच ऐसा तावीज़ बनाया जा सकता है जो मनुष्य को ईमानदार बना दे?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) राज्य में सर्वत्र क्या फैला था? ....

(ख) राजा ने भ्रष्टाचार को ढूँढ़ने का कार्य किसे सौंपा? ....

(ग) सदाचार का तावीज़ बनाने का ठेका किसे दिया गया? ....

(घ) भ्रष्टाचार और सदाचार कहाँ होता है? ....

(ङ) साधु ने तावीज़ का प्रयोग किस जानवर पर किया? ....

2. **नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–**

(क) 'विशेषज्ञ' जाति की क्या विशेषता थी?

....

....

(ख) 'क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?' राजा ने ऐसा क्यों कहा?

....

....

(ग) विशेषज्ञ जाति के लोगों ने भ्रष्टाचार मिटाने का क्या उपाय बताया?

....

....

(घ) राजा की समस्या का हल कैसे निकला?

(ङ) राजा वेश बदलकर कार्यालय में क्यों गए?

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) लेखक ने 'आत्मा की पुकार' की बात कही है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

(ख) भ्रष्टाचार समाज में कोढ़ के समान है। इसे कैसे मिटाया जा सकता है? उपाय सुझाइए।

(ग) "अरे, आज इकतीस है। आज तो ले ले!" पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) ऐसी कौन-सी चीज़ थी जो दरबारियों को दिखती थी, मगर राजा को नहीं?

(*i*) भ्रष्टाचार (*ii*) सदाचार (*iii*) बुरे सपने (*iv*) अच्छे सपने

(ख) विशेषज्ञ जाति बारीक चीज़ों को कैसे देख लेती थी?

(*i*) सूक्ष्मदर्शी के द्वारा (*ii*) दिव्य-दृष्टि के द्वारा

(*iii*) विशेष प्रकार का अंजन आँखों में आँजकर (*iv*) विशेष ऐनक के द्वारा

(ग) 'वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है।' पाठ में ये सारे गुण किसके बताए गए हैं?

(*i*) राजा के (*ii*) ईश्वर के (*iii*) सदाचार के (*iv*) भ्रष्टाचार के

(घ) पूरे शासन में भ्रष्टाचार किस रूप में फैला था?

(*i*) शान के रूप में (*ii*) दान के रूप में

(*iii*) घूस के रूप में (*iv*) लूट के रूप में

(ङ) विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई भ्रष्टाचार मिटाने की योजना क्रियान्वित क्यों नहीं की जा सकी?

(*i*) राज्य की व्यवस्था में बहुत-से परिवर्तन करने पड़ते।

(*ii*) उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए धन की कमी पड़ गई थी।

(*iii*) योजना से भ्रष्टाचार को और बढ़ावा मिलता।

(*iv*) राजा को उस योजना पर विश्वास नहीं था।

(च) बेईमानी व ईमानदारी के स्वर कहाँ से निकलते हैं?

(*i*) परमात्मा से (*ii*) आत्मा से (*iii*) धरती से (*iv*) आकाश से

(छ) तावीज़ कैसे काम करता था?

(*i*) तावीज़ से निकले सदाचार के स्वर आत्मा से निकले ईमानदारी के स्वरों को दबा देते थे।

(*ii*) तावीज़ से निकले सदाचार के स्वर आत्मा से निकले बेईमानी के स्वरों को दबा देते थे।

(*iii*) तावीज़ बेईमानी करने वाले के गले में कसने लगता था।

(*iv*) बेईमानी करते ही तावीज़ से आवाज़ें आने लगती थीं।

(ज) राजा ने कर्मचारी के तावीज़ को कान से लगाया तो उससे क्या स्वर निकले?

(*i*) घूस लेना पाप है। (*ii*) अरे! आज इकतीस है। आज तो ले ले!

(*iii*) राजा बहुत चालाक है। (*iv*) घूस के बिना काम नहीं चल सकता।

5. नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

राजा ने प्रसन्न होकर कहा, "मुझे मालूम नहीं था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन, हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत दुखी थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से तावीज़ बनाने का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके मुख्य प्रबंधक बन जाएँ और अपनी देखरेख में शीघ्रता से बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।" तब मंत्री ने कहा, "महाराज, राज्य क्यों इस झंझट में पड़े? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ही इसका ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर हमें दे देंगे।" राजा को मंत्री का यह सुझाव पसंद आया। साधु को तावीज़ का ठेका दे दिया गया। उसी समय तावीज़ बनाने का कारखाना खोलने के लिए साधु को पाँच करोड़ रुपये की पेशगी दे दी गई।

(क) राजा किससे दुखी थे?

(*i*) साधु से (*ii*) जनता से (*iii*) दरबारियों से (*iv*) भ्रष्टाचार से

(ख) राजा ने कितने तावीज़ बनवाने की बात की?

(*i*) हज़ारों (*ii*) लाखों (*iii*) करोड़ों (*iv*) अरबों

(ग) तावीज़ बनवाने का ठेका किसे दिया गया?

(*i*) मंत्री को (*ii*) साधु को (*iii*) दरबारी को (*iv*) विशेषज्ञों को

(घ) गद्यांश से कोई दो विशेषण शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

....

(ङ) 'आप मुख्य प्रबंधक बन जाएँ और अपनी देखरेख में शीघ्रता से बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।' इस वाक्य में समुच्चयबोधक शब्द कौन-सा है?

....

भाषा ज्ञान

अव्यय – वाक्य में जो पद लिंग, वचन या कारक के बदलने पर भी नहीं बदलते, वे **अव्यय** कहलाते हैं।

अव्यय के पाँच भेद हैं–

क्रियाविशेषण – क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द; जैसे– तेज़ी से, धीरे-धीरे, ज़ोर-ज़ोर से, इधर, उधर, यहाँ, वहाँ, नीचे, ऊपर आदि।

संबंधबोधक – संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगकर वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध को दर्शाने वाले शब्द; जैसे– की तरफ़, की जगह, के बदले, के साथ, के सामने, के बिना आदि।

समुच्चयबोधक – दो शब्दों, उपवाक्यों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द; जैसे– और, तथा, परंतु, लेकिन, या, इसलिए, कि, फिर आदि।

विस्मयादिबोधक – हर्ष, शोक, घृणा, पीड़ा आदि मनोभावों को प्रकट करने वाले शब्द; जैसे– शाबाश!, ओह!, अरे!, हाय! आदि।

निपात – किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल लाने वाले शब्द; जैसे– ही, भी, तो, भर आदि।

1. नीचे दिए वाक्यों में अव्यय शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए–

(क) प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सर्वत्र भ्रष्टाचार फैला हुआ है। ....

(ख) अगर कहीं मिल जाए तो हमारे लिए नमूना अवश्य लेते आना। ....

(ग) भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है। ....

(घ) दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया। ....

(ङ) आप मुख्य प्रबंधक बन जाएँ और अपनी देख-रेख में शीघ्रता से बढ़िया तावीज़ बनवाएँ। ....

(च) राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए। ....

(छ) एक दिन पहले ही वेतन मिला था। ....

(ज) अरे! आज इकतीस है। आज तो ले ले! ....

2. नीचे दिए वाक्यों में कारक शब्दों पर ◯ लगाइए–

(क) वह सपनों की बात है।

(ख) हमें आपकी ही छवि दिखेगी।

(ग) भ्रष्ट दरबारियों के कान खड़े हो गए।

(घ) हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत दुखी हैं।

(ङ) राज्य इस झंझट में क्यों पड़े?

3. नीचे दिए विशेष्यों के लिए पाठ में आए विशेषण शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

....	दिन	....	सपने	....	राज्य
....	आँखें	....	दरबारी	....	साधु
....	कर्मचारी	....	तावीज़	....	प्रबंधक

व्यंग्य से आगे

- यदि चमत्कारी साधु तावीज़ न बनाता तो क्या राज्य को भ्रष्टाचार से मुक्ति मिल पाती? अपनी कल्पना से उत्तर दीजिए।
- विशेषज्ञ जाति आँखों में अंजन लगाकर बारीक वस्तु को भी देख लेती थी। क्या यह संभव है? कल्पना से उत्तर दीजिए।
- कल्पना कीजिए, यदि वैज्ञानिकों द्वारा ऐसा अंजन तैयार कर लिया जाए जिससे किसी भी वस्तु के भीतर देखा जा सके तो कौन-कौन सी हास्यात्मक स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं?

नन्हे हाथों से

- **अपनी उत्तर पुस्तिका में भ्रष्टाचार पर निबंध लिखिए।**

- **चित्र देखकर संवाद की पूर्ति कीजिए–**

अधिकारी– इतने दिन बाद तुम्हें जन्म प्रमाण-पत्र की याद आई है? पहले क्यों नहीं आए?

व्यक्ति– श्रीमान जी, कार्य की अधिकता के कारण अवकाश नहीं मिल पाया था।

अधिकारी– तो अब कैसे मिल गया? अब जन्म प्रमाण-पत्र मिलना संभव नहीं। जाओ, पहले किसी राजपत्रित अधिकारी से लिखवाकर लाओ।

व्यक्ति – आप ही कुछ कीजिए।

अधिकारी – ....

व्यक्ति – ....

अधिकारी – ....

व्यक्ति – ....

अधिकारी – ....

व्यक्ति – ....

कुछ करने को

- 'सूचना-अधिकार' (आर.टी.आई.) के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। भ्रष्टाचार को मिटाने में 'सूचना-अधिकार' किस प्रकार सहायक है? इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि आप किसी कार्य को कराने हेतु सरकारी कार्यालय में जाएँ और संबंधित अधिकारी आपसे उस कार्य को शीघ्रता से करने हेतु रिश्वत की माँग करे तो आप क्या करेंगे?
- यदि आप किसी सरकारी अस्पताल या औषधालय में जाएँ और वहाँ चिकित्सक मरीजों को बारी-बारी से बुला रहा हो लेकिन आपकी बारी से ठीक पहले वहाँ का कोई कर्मचारी तत्काल आए कुछ लोगों को अंदर भेज दे तो आप क्या करेंगे?

7 किरण बेदी

किरण बेदी भारत की पहली महिला आई॰पी॰एस॰ अधिकारी हैं। कर्मठ व्यक्तित्व की स्वामिनी किरण बेदी बचपन से ही अलग थीं। प्रतिभा उनमें कूट-कूटकर भरी थी। बुद्धि-कौशल आदि में उन्होंने स्वयं को लड़कों से कम नहीं समझा। लोग क्या कहेंगे– इस बात की उन्होंने कभी परवाह नहीं की। अपने जीवन का अर्थ स्वयं निर्धारित किया। अपने जीवन व पेशे की हर चुनौती का हँसकर सामना करने वाली किरण बेदी साहस व कुशाग्र-बुद्धि की एक मिसाल हैं जिसका अनुसरण इस समाज को एक सकारात्मक परिवर्तन की राह दिखाता है। 'क्रेन बेदी' के नाम से विख्यात इस महिला ने बहादुरी की जो इबारत लिखी है, उसे वर्षों-वर्ष पढ़ा जाएगा। डॉ॰ बेदी का जन्म सन 1949 में पंजाब के अमृतसर शहर में हुआ। ये श्रीमती प्रेमलता तथा श्री प्रकाश लाल पेशावरिया की चार पुत्रियों में से दूसरी पुत्री हैं। इन्होंने अमृतसर खालसा कॉलेज में राजनीति विज्ञान में व्याख्याता (1970-1972) के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। जुलाई 1972 में ये भारतीय पुलिस सेवा में सम्मिलित हो गईं। डॉ॰ किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा की प्रथम वरिष्ठ महिला अधिकारी रह चुकी हैं। इन्होंने विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी कार्य-कुशलता का परिचय दिया है। भारतीय पुलिस सेवा के कई निर्णयों में किरण बेदी ने नशीले पदार्थों के नियंत्रण, यातायात प्रबंधन और वीआईपी सुरक्षा के क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रभावित किया। निरीक्षक कारागार तिहाड़ जेल (दिल्ली) (1993-1995) और जनरल के रूप में कार्य किया। जेल में किए सुधार कार्यों हेतु उन्हें 1994 में 'रमन मैगसेसे' पुरस्कार (एशिया का नोबेल पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त 'जवाहरलाल नेहरू फैलोशिप' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। निःस्वार्थ कर्त्तव्यपरायणता के लिए इन्हें 'शौर्य पुरस्कार' मिला। इन्होंने समाज और देश के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। समय-समय पर इस कर्मठ महिला के साक्षात्कार समाचार और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उनसे पूछे गए प्रश्नों को यहाँ संकलित किया गया है।

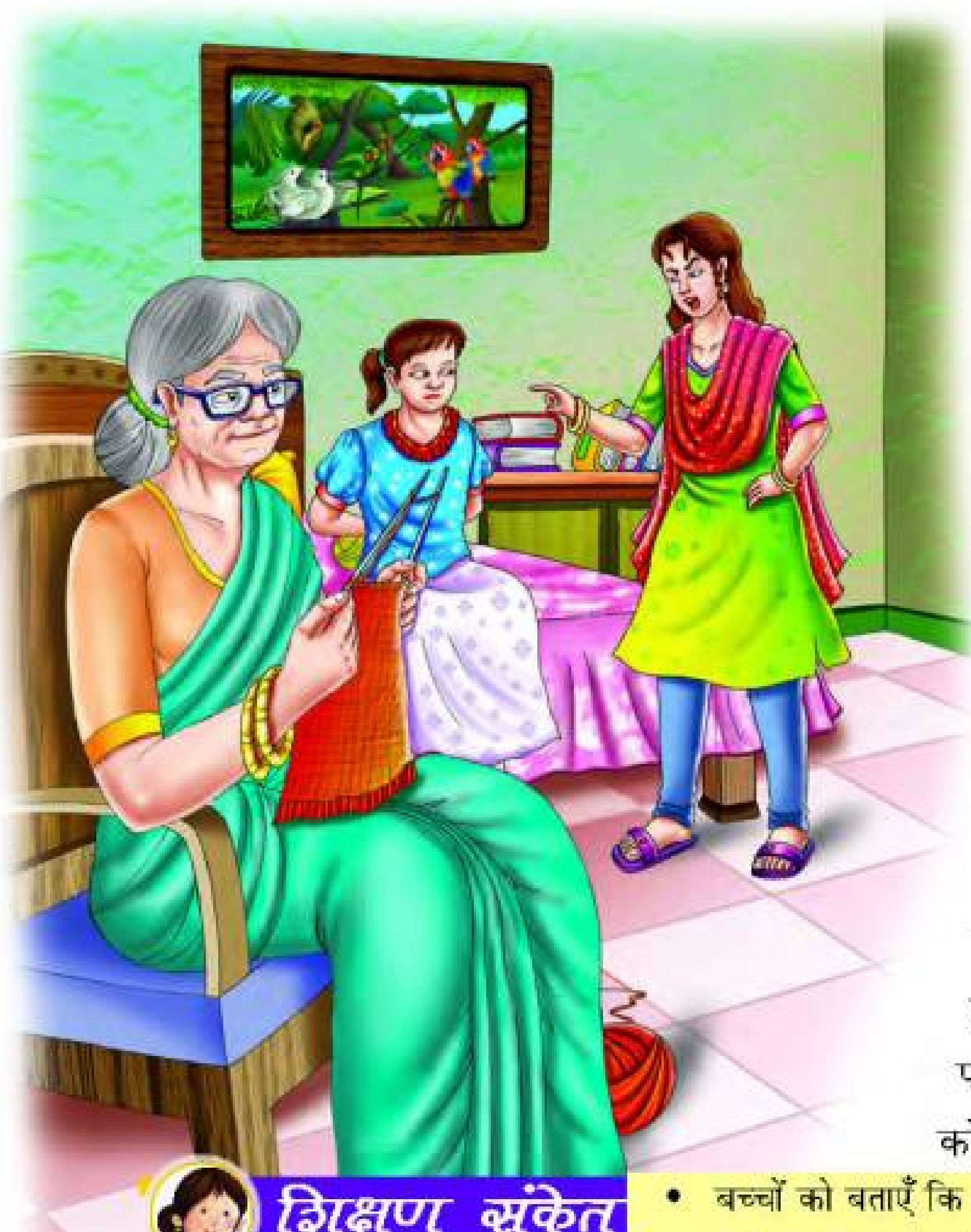

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह पाठ भारत की प्रथम आई॰पी॰एस॰ महिला अधिकारी किरण बेदी के जीवन से जुड़ी कुछ घटनाओं को दर्शाता है।
- बच्चों को उनके कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेने की सीख दें।

संपादक – आपका बचपन कैसा रहा? बचपन की शरारतों से आपकी किस प्रकार की यादें जुड़ी हैं?

किरण बेदी – मैं खेलती भी बहुत थी और पढ़ती भी बहुत थी। हम घर-घर बहुत खेलते थे। रज़ाई, गद्दा, तकिया, चादर आदि का ढेर लगा देते थे। घर की सारी सेटिंग खराब कर देते थे। सोफा, बेड, कुर्सियाँ–सब कुछ उलट-पलट देते थे। मैं शरारती थी, पर मेरी शरारत नुकसान करने वाली नहीं थी, तोड़-फोड़ वाली नहीं थी परंतु मुझे हल्ला-गुल्ला पसंद था। आठ साल की उम्र से मैंने टेनिस खेलना शुरू कर दिया था, उसके बाद तो बाहरी खेलों पर ही मेरा ध्यान लगा रहा।

संपादिका – अध्यापिकाओं की दृष्टि में आपकी छवि कैसी थी?

किरण बेदी – मैं एक होनहार विद्यार्थी थी। मैंने कभी किसी अध्यापिका को तंग नहीं किया, किसी का अपमान नहीं किया। अपनी सीमा का कभी उल्लंघन नहीं किया। अध्यापिकाएँ मुझे 'फुल ऑफ लाइफ' (जीवन से भरी हुई) कहा करती थीं। उनका कहना था– इसे कुछ भी करने को कह दो, कर लेगी। भाषण भी याद कर लेगी, वाद-विवाद भी तैयार कर लेगी, गाना भी गा लेगी। सब कुछ कर लेगी, कभी घबराएगी नहीं। मुझमें अनुशासनहीनता बिलकुल नहीं थी, इसलिए मैं सबकी प्रिय थी।

संपादक – अपनी शिक्षा के बारे में बताइए।

किरण बेदी – बारहवीं तक मैं कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ी हूँ। पंजाब विश्वविद्यालय से मैंने अंग्रेज़ी में स्नातक की डिग्री ली। उसके बाद राजनीति विज्ञान से एम.ए. किया। फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. करके सोशल साईंस में पी-एच डी. की। मैंने दो साल पंजाब विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के पद पर अध्यापन कार्य भी किया।

संपादक – स्कूली जीवन की कोई ऐसी याद जो आज भी आपको गुदगुदा देती हो।

किरण बेदी – आठवीं कक्षा में मैं एक चीज़ से घबराती थी, वह थी– बुनाई-कढ़ाई। मेरा गृहकार्य हमेशा अधूरा रह जाता था। नानी से सिलाई-कढ़ाई करवाया करती थी। मैं एक जगह टिककर नहीं बैठ सकती थी। दीदी मेरी चोरी पकड़ लेती थीं क्योंकि कभी कोई बाजू, कभी कोई बूटी और कभी कोई टोपी नानी के पास ही रह जाती थी। दीदी गुस्सा करती थीं– सजा भी मिलती। कमरे में बंद कर देतीं पर मैं कोई-न-कोई तरीका ढूँढ़ ही लेती थी, बाहर निकलने का।

संपादिका – आपका यह नज़रिया आगे भी शायद जीवनभर चला कि समस्या आई है तो उससे बाहर निकलना ही है, फिर चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े?

किरण बेदी – बिलकुल-बिलकुल! जैसे भी हो निकलना है। कहाँ से भागूँ, कहाँ से खिसकूँ, कोई-न-कोई बहाना लेकर निकल भागो। काम न आता हो तो दूसरे से कराओ, पर समस्या का समाधान होना ही चाहिए।

संपादक – आजकल के बच्चों में और अपने बचपन में आप क्या अंतर देखती हैं?

किरण बेदी – मेरा लक्ष्य मेरी आँखों के सामने था। मुझे पता था कि मुझे कुछ बनना है। बहुत सारे इनाम लेने हैं। मम्मी मुझे रात को दो बजे उठाती थीं कि चलो अभ्यास करो, सुबह मैच है, तो मैं बिना किसी आनाकानी के ही उठ जाती थी। माँ-बाप पर मेरी अंध-श्रद्धा थी कि वे जो कुछ भी कहते हैं, वह मेरे भले के लिए ही कहते हैं। आजकल माँ-बाप और बच्चों के लक्ष्य में द्वंद्व है। रिश्ता उतना

मज़बूत नहीं है। आज बच्चों के मन में त्याग की भावना भी नहीं है। मुझमें त्याग की भावना भरपूर थी। मैं पैसे बचाया करती थी। ज़्यादा जमा हो जाने पर वापस दे दिया करती थी। सादा जीवन था मेरा। सादा पहनावा। मुझमें दिखावटीपन बिलकुल भी नहीं था। हमारे घर में टी॰ वी॰ नहीं था। अतः हम रेडियो पर ही समाचार सुनते थे। पिता जी की सख्त हिदायत थी कि संपादकीय पढ़कर उसका अनुवाद करना है। अनुवाद करने में बहुत समय लग जाता था। शब्दकोश लेकर बैठ जाते। हाँ, जो शब्द एक बार अनुवाद कर लिया, वह फिर ज़िंदगीभर नहीं भूला। यही कारण है कि हिंदी और अंग्रेज़ी– दोनों भाषाओं पर मेरी अच्छी पकड़ है। आजकल के बच्चों का लक्ष्य ही निश्चित नहीं होता है। माता-पिता और बच्चों के विचारों में मतभेद है। मैं माँ-बाप के आदेशों का आँख मूँदकर पालन करती थी, पर आज के बच्चों में वैसा विश्वास देखने को नहीं मिलता है।

संपादिका – आपके आदर्श कौन थे?

किरण बेदी – मेरे आदर्श मेरे माता-पिता हैं। इनके अलावा सभी स्वाधीनता सेनानी मेरे आदर्श हैं, पर वर्तमान में राष्ट्रीय नेतृत्व करने वाला कोई आदर्श हमारे सामने नहीं दिखता। हमारे वक्त में यदि कोई आदर्श न मिले तो भी नैतिक मूल्य होते थे। वातावरण ही अच्छे और बुरे में अंतर सिखाता था, पहले काले और सफ़ेद में अंतर था। आज हाफ़ ब्लैक (आधा काला) और हाफ़ व्हाइट (आधा सफ़ेद) अपनाया जाने लगा है अर्थात आज ग्रे स्वीकार है। थोड़ा सही, थोड़ा गलत। यही व्यवहार में अपनाया जाने लगा है। यही कारण है कि युवा-वर्ग में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। आज यही सबसे बड़ी चुनौती है।

संपादक – इस चुनौती का सामना कैसे किया जा सकता है?

किरण बेदी – इसके लिए शुरुआत बचपन से करनी होगी। बच्चों को संवेदनशील बनाना होगा। इसके लिए उन्हें छुट्टियों में ऐसे कार्य करने के लिए देने होंगे जो पाठ्यक्रम से संबंधित न हों, बल्कि जीवन से जुड़े हों; जैसे– बीमार की मदद, दादी की देखभाल, झुग्गी-झोपड़ियों का दौरा आदि। उन्हें समाज से जोड़ना होगा। उन्हें सही व गलत का अंतर खुद महसूस करने देना होगा। जो गलत है, वह हर स्थिति में हर एक के लिए गलत है। इसके लिए दोहरे मापदंड को छोड़ना होगा। बच्चों को दृढ़ बनाना होगा, जिससे कि वे गलत चीज़ का विरोध करना सीखें। वातावरण ही यह सब सिखा सकता है। अतः परिवार व विद्यालय के वातावरण पर काफ़ी कुछ निर्भर करता है।

संपादक – भारतीय पुलिस सेवा में पहले दिन का अनुभव कैसा रहा?

किरण बेदी – भारतीय पुलिस सेवा में 16 जुलाई, 1972 को मेरा पहला दिन था। उस दिन को मैं कभी नहीं भूल सकती। भारतीय पुलिस सेवा में मैं पहली और अकेली महिला अधिकारी थी। मुझे देखकर असंख्य प्रश्नों की झड़ी लगा दी गई थी। आप वास्तव में ऐसा करना चाहती हैं? आपको यकीन है कि आप कर पाएँगी? आपने इस क्षेत्र को ही क्यों चुना? आपने अपने परिवार के बारे में सोचा है? आदि अनेक विस्मय और संदेशात्मक प्रश्नों का मुझे सामना करना पड़ा था। पर मैंने अपने दिमाग को नहीं बदला। मैं अपने निर्णय पर अटल रही।

संपादिका – आप प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में सफल रही हैं। जीवन की कोई असफलता, जिसकी आप चर्चा करना चाहेंगी।

किरण बेदी – नहीं, ऐसी कोई असफलता नहीं। मुझे जो करना था, मैंने कर लिया। हाँ, कई बार मैच जीती, कई बार हारी। हारकर जीती, जीतकर हारी। पर मैं इसे असफल होना नहीं मानती। हारना मेरे लिए सबक है। जीवन के प्रति भी मेरा यही दृष्टिकोण है।

संपादक – ईश्वर पर अटूट विश्वास ही क्या आपको इतनी शक्ति देता है?

किरण बेदी – शक्ति का संबंध शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति से होता है। रही प्रार्थना की बात तो मैं प्रार्थना करती हूँ, पर धन्यवाद के रूप में। मैं माँगती कम हूँ और धन्यवाद ज़्यादा देती हूँ। मैं हमेशा यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझे गलती से बचाना और सुरक्षित रखना ताकि मुझे किसी पर निर्भर न रहना पड़े।

संपादिका – आपने वर्षों तक अपराधियों के सुधार का कार्य किया। उनके बारे में कुछ बताएँ।

किरण बेदी – कोई भी बुरा नहीं होता। सब सुधर सकते हैं– उनमें अच्छाई है, पर बुराई उभरकर सामने आ गई है। उनमें दया भी है, करुणा भी है, प्रेम भी है और हिंसा भी है– सभी का मिश्रण है। सभी में यह मिश्रण होता है। आप पर निर्भर करता है कि आप वातावरण से क्या लेते हैं? मुझे दस हज़ार अपराधियों की एक संस्था चलाने का मौका मिला, उनके जीवन को नई परिभाषा देने का मौका मिला। यदि मुझे दस लाख लोगों की संस्था चलानी पड़े तो भी मैं उसे इसी प्रकार पूरी ईमानदारी से चलाने की क्षमता रखती हूँ। मैं चालक थी। अतः मुझे पता था कि जेल को आश्रम में बदलने के लिए क्या करना है?

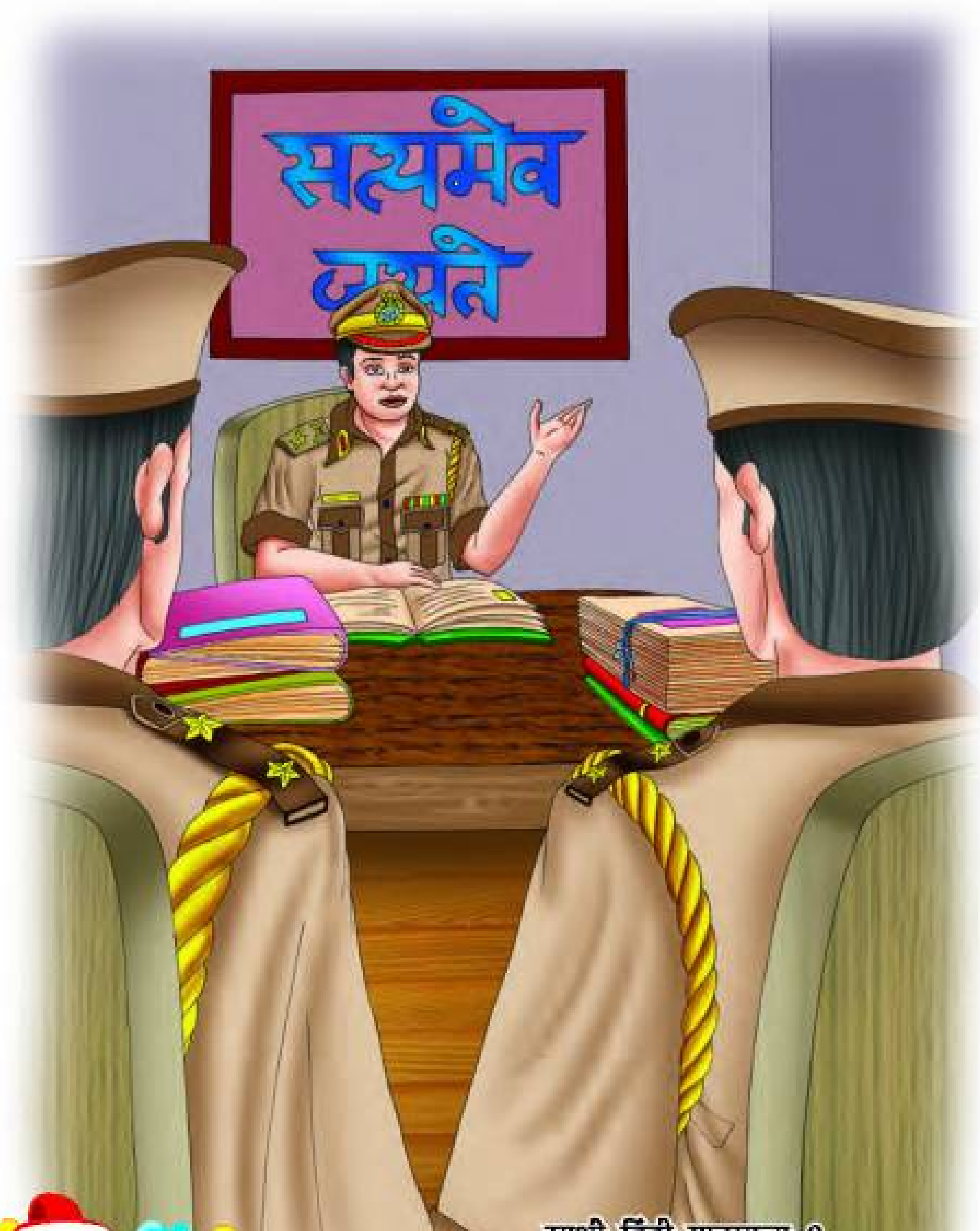

संपादक – आप 'किरण' से 'क्रेन' कैसे बन गईं?

किरण बेदी – एशियाई खेलों के दौरान दिल्ली की यातायात व्यवस्था में सुधार के लिए मैंने विभाग की सभी क्रेनों को काम पर लगा दिया।

उस समय अमीर वर्ग के पास ही गाड़ियाँ हुआ करती थीं। अतः उच्च वर्ग को कोई हाथ नहीं लगाता था, पर पहली बार समाज के उच्च वर्ग व सरकारी उच्च अधिकारियों को यह अहसास दिलाया गया कि उनके ऊपर भी कानून है। फिर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की गाड़ी भी इसी चपेट में आ गई। जनता खुश थी क्योंकि इस बार उच्च वर्ग पर प्रहार हुआ था। बस तभी से मेरा नाम 'क्रेन बेदी' पड़ गया।

संपादक – आप टी.वी. सीरियल 'आपकी कचहरी' के माध्यम से सीधे जनता से जुड़ीं। उस समय आपका अनुभव कैसा रहा?

किरण बेदी – इस कार्यक्रम के माध्यम से मुझे लोगों की समस्याओं को सुलझाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैंने अपनी तरफ़ से पूरी ईमानदारी से कोशिश की। उस समय हम एक सामाजिक ज़रूरत से रू-ब-रू हुए। आज हमारे समाज को एक ऐसे फोरम की आवश्यकता है जिसमें लोगों को त्वरित न्याय मिल सके।

संपादिका – क्या आपको लगता है कि हमारी न्याय-प्रणाली सुस्त है और न्यायालयों में मुकदमे कई वर्षों तक लंबित पड़े रहते हैं?

किरण बेदी – यह वास्तविकता है कि न्यायालयों में मामले लंबित पड़े रहते हैं। मुकदमो की सुनवाई में सालों-साल लग जाते हैं, जिसके कारण लोगों का न्याय व्यवस्था से विश्वास डोलने लगा है।

संपादिका – आप भारत का भविष्य कैसा देखती हैं?

किरण बेदी – बहुत कठिनाई भरा दिखता है। बढ़ती आबादी और उस पर प्रगतिशील युवा वर्ग। इस युवा शक्ति को सँभालने के लिए एक नहीं, एक हज़ार नेताओं की ज़रूरत है। आज जो भी नेता एवं पथ-प्रदर्शक हैं, वे ही इस समाज को विभाजित कर रहे हैं। जोड़ने वाला कोई नहीं है। ऊर्जा से भरे इस युवा वर्ग को सभी उसके अधिकार याद दिला रहे हैं, लेकिन कोई यह याद नहीं दिलाता कि इस समाज और राष्ट्र के प्रति उनका क्या कर्त्तव्य है? आज हमें ऐसे नेता चाहिए जो अलग-अलग स्थानों पर इनका नेतृत्व कर सकें। बॉलीवुड नेता नहीं दे सकता, क्रिकेटर भी नेता नहीं बन सकते, फिर कहाँ से आएँगे ऐसे मार्गदर्शक नेता? यही सबसे बड़ी चुनौती है और चिंता भी।

संपादक – आज के युवाओं के लिए क्या संदेश देना चाहेंगी?

किरण बेदी – युवाओं के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश यह है कि वे मन में शांति बनाए रखें। याद रखें कि हर दिन उपलब्धि के लिए अवसर लाता है। अपने अवसरों को उपलब्धि में बदल लेना चाहिए। अच्छा अवसर हर किसी के लिए आता है। अपने अधिकारों के लिए खड़े हों। बोल्ड और ईमानदार बनें। मन और बुद्धि की प्रगति करते हुए कहीं से भी शुरुआत करें। जीवन में परिवर्तन भी एक नियम है। विकास के भरपूर विकल्प हैं। बुद्धिमत्ता से चुनाव करें। आगे बढ़ने और स्वयं को विकसित करने के लिए प्रयास जारी रखें। हमारे योगदान और जीवन की गुणवत्ता में तभी परिवर्तन आएगा जब हम सही निर्णय लेंगे।

शब्दार्थ

स्वामिनी	– मालकिन		कुशाग्र-बुद्धि	– तीक्ष्ण-बुद्धि
कर्मठ	– परिश्रमी		उल्लंघन	– लाँघना, अवज्ञा करना, विरुद्ध आचरण
समाधान	– हल		लक्ष्य	– उद्देश्य
हिदायत	– अनुदेश, निर्देश		मापदंड	– मानक
पथ प्रदर्शक	– रास्ता दिखानेवाला			

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–

बुद्धि – बुद्धि छुट्टियाँ – छुट्टियाँ विद्यार्थी – विद्यार्थी

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

निर्धारित साक्षात्कार व्याख्याता कर्त्तव्यपरायणता अनुशासनहीनता

2. सोचकर बताइए–

(क) समस्याओं के प्रति किरण बेदी का नज़रिया कैसा है?

(ख) बच्चों को समाज से कैसे जोड़ा जा सकता है?

(ग) किरण बेदी भगवान से क्या प्रार्थना करती हैं?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) किरण बेदी किस नाम से विख्यात हैं? ....

(ख) किरण बेदी का जन्म कहाँ हुआ था? ....

(ग) किरण बेदी को भारतीय पुलिस सेवा में कब नियुक्त किया गया? ....

(घ) किरण बेदी स्कूली अवस्था में किस चीज़ से घबराती थीं? ....

(ङ) किरण बेदी ने युवाओं द्वारा अपने अवसरों को किसमें बदलने की सलाह दी है?

....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) किरण बेदी का बचपन कैसा था?

(ख) किरण बेदी सभी अध्यापिकाओं की प्रिय क्यों थी?

(ग) किरण बेदी को 'रमन मैगसेसे पुरस्कार' क्यों दिया गया?

(घ) आजकल के माता-पिता और बच्चों का रिश्ता मज़बूत क्यों नहीं है?

(ङ) आज की सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) किरण बेदी की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

(ख) 'समस्या आई है तो उससे बाहर निकलना ही है, फिर चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े?' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'हर दिन उपलब्धि के लिए अवसर लाता है।' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) किरण बेदी का जन्म कब हुआ था?

(*i*) 1950 में ☐ (*ii*) 1949 में ☐ (*iii*) 1932 में ☐ (*iv*) 1940 में ☐

(ख) भारत की प्रथम महिला आई.पी.एस. अधिकारी कौन हैं?

(*i*) कविता चौधरी ☐ (*ii*) विजयलक्ष्मी पँडित ☐

(*iii*) किरण बेदी ☐ (*iv*) अनीता बेदी ☐

(ग) किरण बेदी को 'रमन मैगसेसे' पुरस्कार कब मिला?

(*i*) 1980 में ☐ (*ii*) 1950 में ☐ (*iii*) 1970 में ☐ (*iv*) 1994 में ☐

(घ) एशिया का नोबेल पुरस्कार किसे कहा जाता है?

(*i*) भारत रत्न को ☐ (*ii*) पद्म भूषण को ☐

(*iii*) रमन मैगसेसे को ☐ (*iv*) खेल रत्न को ☐

(ङ) किरण बेदी ने किस जेल में निरीक्षक के पद पर रहते हुए सुधार कार्य किए?

(*i*) रोहिणी जेल, दिल्ली ☐ (*ii*) यरवदा जेल, मुंबई ☐

(*iii*) सेंट्रल जेल, मुंबई ☐ (*iv*) तिहाड़ जेल, दिल्ली ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए–

शब्द		मूल शब्द		प्रत्यय
साक्षात्कार	=	....	+	....
शारीरिक	=	....	+	....
दिखावटीपन	=	....	+	....
राष्ट्रीय	=	....	+	....
सफलता	=	....	+	....
कर्त्तव्यपरायणता	=	....	+	....

मानसिक	=	....	+	....
अनुशासनहीनता	=	....	+	....
संपादकीय	=	....	+	....
स्वाधीनता	=	....	+	....
ईमानदारी	=	....	+	....

2. नीचे दिए शब्दों के शब्द-परिवार बनाइए–

राष्ट्र	–	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता	राष्ट्रपिता	राष्ट्रगौरव
राज्य	–	....	....	....	....
कर्म	–	....	....	....	....
विद्‌या	–	....	....	....	....
गुण	–	....	....	....	....

3. पाठ में आए शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए–

....

4. नीचे दिए शब्दों का समास-विग्रह कीजिए–

विद्‌यालय	=	....	आजकल	=	....
कार्यकुशल	=	....	पंजाब	=	....
माता-पिता	=	....			

साक्षात्कार से आगे

- सफलता किसी एक के प्रयासों से नहीं मिलती अपितु उसके पीछे परिवारजनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आप इस बात से कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार व्यक्त कीजिए।
- यदि किरण बेदी को अपने परिवार का पूर्ण सहयोग न मिला होता तो क्या वे इतनी सफल हो पातीं?

नन्हे हाथों से

- 'देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका' पर अपनी उत्तर पुस्तिका में निबंध लिखिए।

- चित्र देखकर इनके विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

इंदिरा गांधी

प्रतिभा पाटिल

चंदा कोचर

कुछ करने को

- समाचार पत्रों या इंटरनेट की सहायता से विश्व की शीर्षस्थ महिलाओं की सूची ज्ञात कीजिए। इस सूची में देखिए कि किन भारतीय महिलाओं को इसमें स्थान मिला है तथा वे किस पायदान पर हैं?
- राजनीति में महिलाओं को आरक्षण दिया जाना चाहिए या नहीं? अध्यापक–अध्यापिका की सहायता से कक्षा को दो समूहों में विभाजित करके, इस विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके समक्ष किसी महिला के साथ अभद्र व्यवहार किया जा रहा हो तो आप क्या करेंगे?
- यदि आपके पड़ोस में किसी वृद्ध महिला के साथ उनके बेटे–बहू बुरा व्यवहार करते हों तो आप क्या करेंगे?

8 ठेले पर हिमालय

ठेले पर हिमालय। खासा दिलचस्प शीर्षक है न! और यकीन कीजिए, इसे बिलकुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे-बिठाए मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दुकान पर मैं अपने अल्मोड़ावासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी ठेले पर बरफ़ की सिल्लियाँ लादे हुए बरफ़वाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बरफ़ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र की जन्मभूमि अल्मोड़ा है। वे क्षणभर उस बरफ़ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खो गए और खोए-खोए से ही बोले, "यही बरफ़ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया– ठेले पर हिमालय।

मुझे लगा कि वह बरफ़ कहीं मेरे मन को खरोंच गई है और ईमान की बात यह है कि जिसने पचास मील दूर से बादलों के बीच नीले आकाश में हिमालय की शिखर रेखा को चाँद-तारों से बातें करते देखा है, चाँदनी में उजली बरफ़ को धुँधले हलके नीले जल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है, उसके मन पर हिमालय की बरफ़ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है जो याद आने पर हर बार पीरा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बरफ़ मैंने भी देखी है। सच तो यह है कि सिर्फ़ बरफ़ को बहुत निकट से देखने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए हम कोसी पहुँचे। कोसी से एक सड़क अल्मोड़ा चली जाती है और दूसरी कौसानी।

कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता! पानी का कहीं नामोनिशान नहीं, सूखे-भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाए गए टेढ़े-मेढ़े रास्ते। कोसी पहुँचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

कोसी बस स्टैंड पर बैठकर हम कौसानी जाने वाली बस का इंतज़ार कर रहे थे। इसी बीच एक लारी से प्रसन्न-बदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान-में-जान आई। शुक्ल जी जैसा सफ़र का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। उन्होंने ही हमें कौसानी आने के लिए उत्साहित किया था। शुक्ल जी के साथ मशहूर चित्रकार सेन भी थे। थोड़ी ही देर में सेन हम लोगों के साथ घुल-मिल गए।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य ही बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी! हरी-भरी! एक के बाद एक बस स्टैंड पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दुकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरनेवाले नदी-नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क चीड़ के निर्जन जंगलों से गुज़रती थी।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि किसी यात्रा का अपने शब्दों में वर्णन करना यात्रा-वृत्तांत कहलाता है। यह यात्रा-वृत्तांत हिंदी के प्रसिद्ध लेखक धर्मवीर भारती द्वारा लिखा गया है।
- बच्चों को देशाटन के लाभ बताएँ। साथ ही प्राकृतिक वातावरण से मन पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की भी जानकारी दें। प्रकृति का सान्निध्य मन की व्याकुलता को कम करता है। बच्चों को प्रकृति से जुड़ने को प्रेरित करें।

टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर-नीचे रेंगती हुई, कंकरीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें और भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी। कौसानी सिर्फ़ छह मील दूर रह गया था पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना था।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उसके बिलकुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बरफ़ का तो कहीं नामोनिशान नहीं। ऐसा लगा जैसे हम ठगे गए। बस से उतरते समय मैं बहुत खिन्न था।

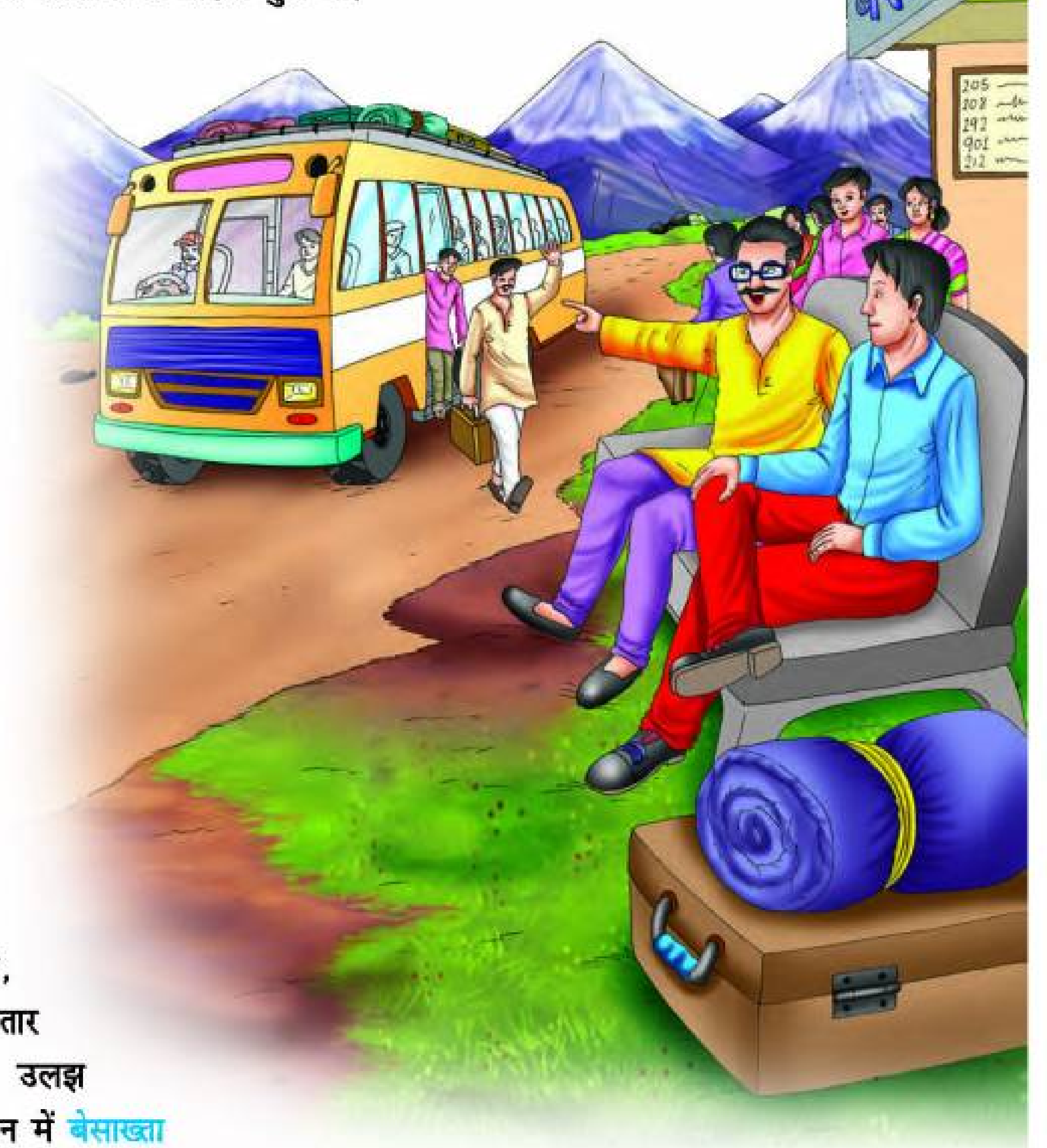

बस से उतरा ही था कि जहाँ-का-तहाँ पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में! पर्वतमाला ने अपने आँचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे! पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफ़ेद-सफ़ेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ। आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे ही लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर ही आगे बढ़ना चाहिए।

धीरे-धीरे मेरी निगाह ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत, नदियाँ और वन, क्षितिज धुँधलेपन में नीले कोहरे में घुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास हुआ। उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात फिर एक हलका-सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन-सी चीज़ है, जो अटल है। यह छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा और कैसा अजब रंग है इसका! न सफ़ेद, न रुपहला, न हलका नीला... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बरफ़ तो नहीं है। हाँ जी!

बरफ़ नहीं है तो क्या है? और बिजली-सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज पर्वत सम्राट हिमालय है। इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह जो सामने है, उसका कोई एक छोटा-सा बाल स्वभाववाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, "वह देखो बरफ़!"

शुक्ल जी, सेन और अन्य सभी ने देखा, पर अचानक वह फिर-से लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल-शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े। पर उस एक क्षण के हिम-दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा और थकावट, सब छूमंतर हो गई। हम सब व्याकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जाएँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा निरावृत। असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी-अभी अपना घूँघट धीरे-से खिसका देगी। और ...... और तब .... ? सचमुच! मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था।

डाक बंगले के खानसामा ने बताया कि आप लोग खुशकिस्मत हैं! आपसे पहले चौदह पर्यटक आए थे। हफ़्ते भर पड़े रहे, बरफ़ नहीं दिखी। आज तो आपके आते ही खुलने के आसार हो रहे हैं।

सामान रख दिया गया। पर सभी बिना चाय पीये सामने के बरामदे में बैठे रहे और अपलक देखते रहे। बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए-नए शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत हो रही थीं और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू होकर दाईं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिम शिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी और रोमांचक शृंखला। हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं, अगर बता पाता जो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती? इसका सिर्फ़ एक धुँधला-सा संवेदन अवश्य था कि जैसे बरफ़ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठंडी-ठंडी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही थी।

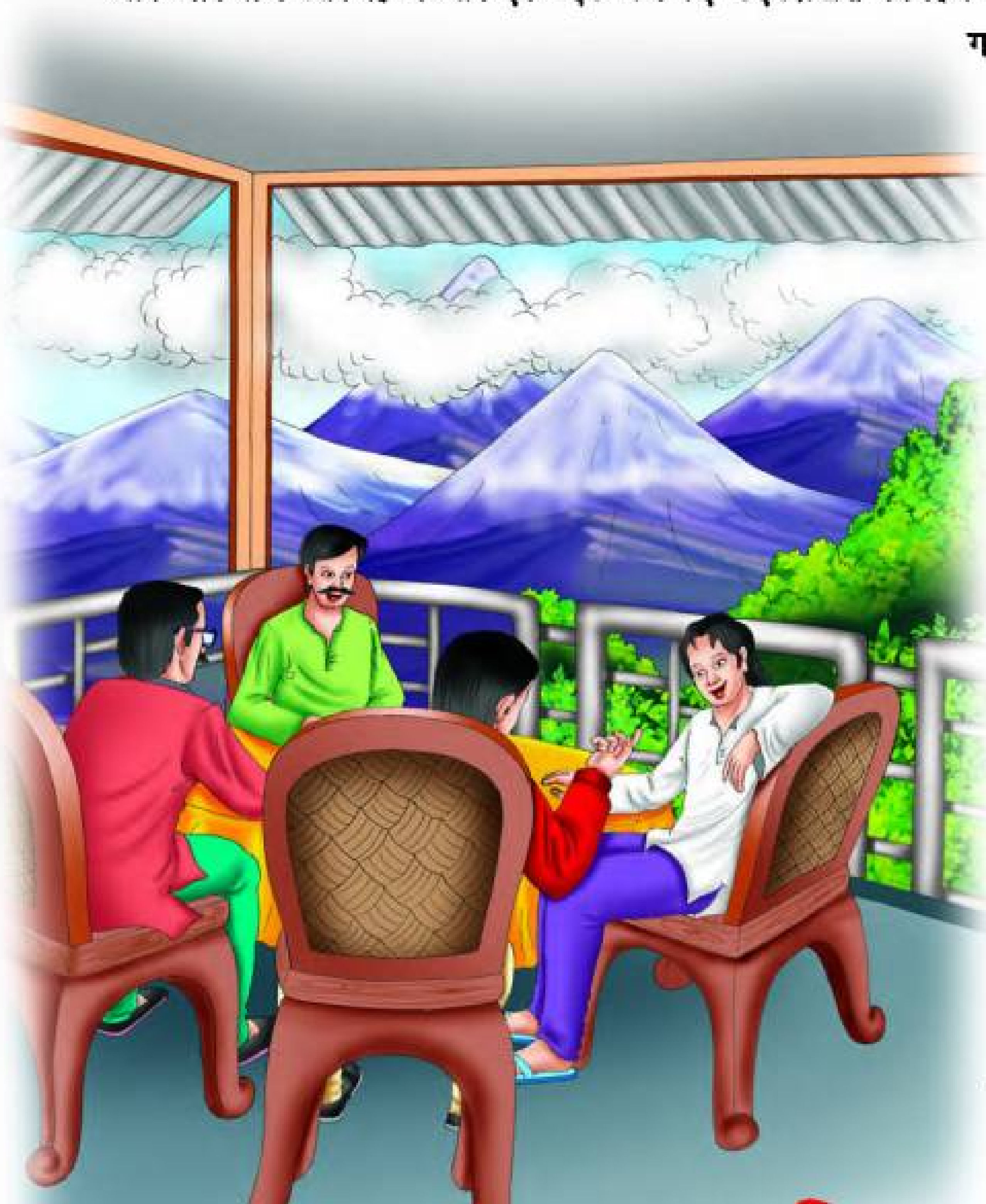

सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बरफ़ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी। घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे। मुँह-हाथ धोकर चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप और गुमसुम थे; जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर-ही-अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

दूसरे दिन घाटी में उतरकर मीलों चलकर हम बैजनाथ पहुँचे, जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फ़ीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन शिखरों पर फिर कब पहुँचू, इसीलिए उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठाता है। कल ठेले पर बरफ़ को देखकर अल्मोड़ा के मेरे मित्र जिस तरह स्मृतियों में डूब गए, उस दर्द को मैं समझता हूँ। इसीलिए जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। वे बरफ़ की ऊँचाइयाँ बार-बार बुलाती हैं, और हम हैं कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलनेवाली बरफ़ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने कहा था– "कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो.... क्या मैं कभी ऐसे भी रह सकूँगा वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर?" तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ यह संदेशा भेज दूँ– "नहीं, बंधु आऊँगा! फिर लौट-लौटकर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है ... मैं करुँ तो क्या करुँ?"

–धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर, 1926 को प्रयाग में हुआ। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम॰ ए॰ करने के बाद डॉ॰ धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध प्रबंध लिखकर पी-एच.डी की डिग्री प्राप्त की। डॉ॰ भारती की शिक्षा-दीक्षा और काव्य संस्कारों की प्रथम संरचना प्रयाग में हुई। उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रारंभिक रचनाओं पर पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य संस्कारों का काफी प्रभाव पड़ा। इनका प्रथम काव्य-संग्रह 'ठंडा लोहा' और प्रथम उपन्यास 'गुनाहों का देवता' अत्यंत लोकप्रिय हुए। इनके द्वारा लिखा गया प्रथम काव्य नाटक 'अंधा युग' संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपने ढंग की अलग रचना है। 'ठंडा लोहा' के अतिरिक्त इनका एक कविता-संग्रह 'सात गीत वर्ष' भी प्रकाशित हुआ। लंबी कविता के क्षेत्र में राधा के चरित्र को लेकर 'कनुप्रिया' नामक इनकी कविता अत्यंत प्रसिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त इन्होंने प्रयोग के स्तर पर 'सूरज का सातवां घोड़ा' नामक एक सर्वथा नए ढंग का उपन्यास लिखा। 'चाँद और टूटे लोग' तथा 'बंद गली का आखिरी मकान' इनके दो कथा संग्रह हैं।

धर्मवीर भारती 1948 में 'संगम' में सहकारी संपादक नियुक्त हुए। दो वर्ष वहाँ काम करने के बाद हिंदुस्तानी अकादमी में अध्यापक नियुक्त हुए। इन्होंने 'निकष' पत्रिका निकाली तथा इन्होंने 'आलोचना' का संपादन भी किया। उसके बाद 'धर्मयुग' में प्रधान संपादक के पद पर मुंबई आ गए। 1987 में डॉ॰ भारती ने अवकाश ले लिया। 1999 में युवा कहानीकार उदय प्रकाश के निर्देशन में साहित्य अकादमी, दिल्ली के लिए डॉ॰ भारती पर एक वृत्तचित्र का निर्माण भी किया गया। 1972 में पद्मश्री से अलंकृत डॉ॰ धर्मवीर भारती को अपने जीवनकाल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें प्रमुख हैं–1984 हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार, महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन-1988, सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी दिल्ली-1989, भारत भारती पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव सम्मान, महाराष्ट्र सरकार। 1994, व्यास सम्मान, के. के. बिड़ला फाउंडेशन आदि। इनका निधन 4 सितंबर, 1997 को हो गया।

शब्दार्थ

दिलचस्प	–	मनोरंजक	कष्टप्रद	–	पीड़ादायक
स्तब्ध	–	सुन्न, निश्चेष्ट	बेसाख्ता	–	स्वाभाविक, अकृत्रिम
निष्कलंक	–	बेदाग, कलंक रहित	हर्षातिरेक	–	हर्ष की अधिकता, अत्यधिक प्रसन्नता
निरावृत	–	बिना ढका हुआ	अपलक	–	बिना पलक झपकाए

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

शीर्षक सौंदर्य विस्मय ग्लेशियरों उज्ज्वल स्मृतियों

2. सोचकर बताइए–

(क) कौसानी कहाँ बसा हुआ है?

(ख) किसे देखकर सारी खिन्नता व थकावट दूर हो गई थी?

(ग) लेखक ने बरफ़ का मानवीकरण किस प्रकार किया है?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) लेखक के मन में 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक क्या देखकर आया? ....

(ख) लेखक व उसके मित्र क्या देखने के लिए कौसानी गए थे? ....

(ग) शुक्ल जी के साथ कौन थे? ....

(घ) किस घाटी में अतुलित सौंदर्य बिखरा पड़ा था? ....

(ङ) सूरज डूबते समय बरफ़ किस रंग की दिखाई दे रही थी? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक लेखक को कब, कहाँ और कैसे मिला?

....

....

(ख) लेखक कौसानी क्यों गए थे?

....

....

(ग) कौसानी पहुँचकर लेखक को ऐसा क्यों लगा कि वह ठगे गए हैं?

....

....

(घ) खानसामा ने लेखक और उनके मित्रों को खुशकिस्मत क्यों कहा?

....

....

(ङ) सूरज डूबते ही सब गुमसुम क्यों हो गए?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) सोमेश्वर घाटी के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ख) लेखक ने हिम-दर्शन का वर्णन कैसे किया है?

....

....

....

....

(ग) 'उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

4. **नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–**

(क) कोसी तक पहुँचने का रास्ता कैसा था?

(*i*) बहुत ही सुहावना और सुघड़ ☐ (*ii*) बहुत ही दुरूह और कष्टदायक ☐

(*iii*) टेढ़ा-मेढ़ा पर सौंदर्य से भरा ☐ (*iv*) सीधा-सरल और हरा-भरा ☐

(ख) बस से कौसानी गाँव कैसा दिखाई दे रहा था?

(*i*) सुंदर और बरफ़ से ढका हुआ ☐

(*ii*) उजड़ा-सा गाँव और बरफ़ का नामोनिशान तक नहीं था ☐

(*iii*) मखमली कालीन जैसे खेतों से हरा-भरा ☐

(*iv*) बादलों से ढका हुआ ☐

(ग) लेखक ने किन्नर और यक्ष के वास करने की कल्पना किस क्षेत्र में की है?

(*i*) कोसी में ☐ (*ii*) कौसानी में ☐ (*iii*) अलमोड़ा में ☐ (*iv*) सोमेश्वर घाटी में ☐

(घ) बैजनाथ में कौन-सी नदी बहती है?

(*i*) कावेरी ☐ (*ii*) कृष्णा ☐ (*iii*) गोमती ☐ (*iv*) नर्मदा ☐

भाषा ज्ञान

> पद का व्याकरणिक परिचय **पद परिचय** कहलाता है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तो पद बन जाता है। उसके साथ व्याकरणिक बिंदु– लिंग, वचन, कारक आदि जुड़ जाते हैं; जैसे–शुक्लजी–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन।

1. **नीचे दिए रेखांकित पदों के सही पद परिचय पर (✓) लगाइए–**

(क) ठेले पर बरफ़ की सिलें लादे बरफ़वाला आया।

(*i*) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, कर्ता कारक

(*ii*) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, कर्ता कारक

(*iii*) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, कर्म कारक

(*iv*) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, कर्ता कारक

(ख) कितना कुरूप है वह रास्ता।

(*i*) परिमाणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन ☐

(*ii*) सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन ☐

(*iii*) संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन ☐

(*iv*) गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन ☐

(ग) धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन-सी चीज़ है, जो अटल है!

(*i*) संबंधबोधक अव्यय ☐ (*ii*) समुच्चयबोधक अव्यय ☐

(*iii*) क्रियाविशेषण अव्यय ☐ (*iv*) विस्मयादिबोधक अव्यय ☐

(घ) इसी घाटी के पार वह नगाधिराज पर्वत सम्राट हिमालय है।

(*i*) समुच्चयबोधक अव्यय (*ii*) संबंधबोधक अव्यय

(*iii*) विस्मयादिबोधक अव्यय (*iv*) निपात

(ङ) फिर लौट-लौटकर वहीं आऊँगा।

(*i*) अकर्मक क्रिया, भविष्यतकाल, एकवचन

(*ii*) सकर्मक क्रिया, भविष्यतकाल, एकवचन

(*iii*) द्विकर्मक क्रिया, भूतकाल, एकवचन

(*iv*) सकर्मक क्रिया, वर्तमानकाल, एकवचन

2. नीचे दिए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) चेहरा पीला पड़ना– ....

....

(ख) जान-में-जान आना– ....

....

(ग) आँखों में चमक आना– ....

....

(घ) चार चाँद लगना– ....

....

(ङ) दिल बाग-बाग होना– ....

....

(च) हाथ मलते रह जाना– ....

....

जिस समस्त-पद में दोनों पद समान हों, वहाँ द्वंद्व समास होता है। इसमें समस्त-पद का विग्रह करते समय योजक चिह्न लगाया जाता है; जैसे– माता-पिता = माता और पिता।

3. नीचे दिए समस्तपदों का समास-विग्रह कीजिए–

नामोनिशान = ... सूखे-भूरे = ...

मुँह-हाथ = ... पाप-पुण्य = ...

भला-बुरा = ... सुख-दुख = ...

भूख-प्यास = ... अपना-पराया = ...

4. पाठ में आए शब्द युग्म-शब्द ढूँढ़कर लिखिए–

....

....

यात्रा-वृत्तांत से आगे

- यदि पहाड़ों की चोटियों पर बरफ़ और घाटियों में अतुलित सौंदर्य न भरा हो तो क्या लोग ऐसे दुर्गम स्थानों पर जाना पसंद करेंगे?

नन्हे हाथों से

- **किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा पर जाने हेतु अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

- प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन करते हुए अनुच्छेद लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा धर्मवीर भारती पर निर्मित वृत्तचित्र (वीडियो) देखने का प्रयास कीजिए।
- पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? इस पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि आप अपने परिवार के साथ भ्रमण हेतु किसी पर्वतीय स्थल पर जा रहे हों और रास्ते में कोई अपने साथ हुई लूटपाट की घटना की जानकारी देकर आपको सचेत रहने की सलाह दे तो आप क्या करेंगे?
- यदि किसी पर्यटक-स्थल की यात्रा के दौरान शाम के समय सुनसान रास्ते पर आपके वाहन के समक्ष हाथियों का झुंड आ जाए तो आप क्या करेंगे?

क्या आप जानते हैं?

(क) पीतल किन धातुओं से मिलकर बना है?

(*i*) स्टील
(*ii*) चाँदी और ताँबा
(*iii*) लोहा, ताँबा
(*iv*) ताँबा और जिंक

(ख) कौन-सा ग्रह 'नीले ग्रह' के नाम से जाना जाता है?

(*i*) पृथ्वी
(*ii*) मंगल
(*iii*) बुध
(*iv*) बृहस्पति

(ग) भारतीय राज्यों में सर्वाधिक लंबी तट रेखा किस राज्य की है?

(*i*) आंध्रप्रदेश
(*ii*) गुजरात
(*iii*) महाराष्ट्र
(*iv*) तमिलनाडु

(घ) भारत की सबसे लंबी नहर कौन-सी है?

(*i*) बेतवा नहर
(*ii*) शारदा नहर
(*iii*) इंदिरा नहर
(*iv*) कृष्णा नहर

(ङ) भूकंप की तीव्रता किस यंत्र के द्वारा मापी जाती है?

(*i*) रिक्टर स्केल
(*ii*) कैलीपर्स
(*iii*) वायुदाब मापी
(*iv*) सिस्मोग्राफ

(च) निम्नलिखित में से किस महाद्वीप में ज्वालामुखी नहीं है?

(*i*) एशिया
(*ii*) अफ्रीका
(*iii*) आस्ट्रेलिया
(*iv*) अंटार्कटिका

(छ) प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत कब हुई थी?

(*i*) 1915 ई॰
(*ii*) 1914 ई॰
(*iii*) 1916 ई॰
(*iv*) 1918 ई॰

(ज) विश्व में केले का सर्वाधिक उत्पादक देश कौन-सा है?

(*i*) भारत
(*ii*) नेपाल
(*iii*) चीन
(*iv*) श्रीलंका

(झ) विश्व में कोयले का सर्वाधिक उत्पादक देश कौन-सा है?

(*i*) रूस
(*ii*) चीन
(*iii*) भारत
(*iv*) जापान

(ञ) कौन-सा वृक्ष सर्वाधिक ऑक्सीजन छोड़ता है?

(*i*) पीपल
(*ii*) अशोक
(*iii*) नीम
(*iv*) जामुन

(ट) इनमें से कौन-सी वास्तविक मछली है?

(*i*) हाइड्रो (*ii*) शार्क
(*iii*) सितारा (*iv*) जैली

(ठ) चंद्रमा को प्रकाश कहाँ से प्राप्त होता है?

(*i*) पृथ्वी से (*ii*) स्वयं से
(*iii*) सूर्य से (*iv*) अंतरिक्ष से

(ड) बीज अपना भोजन किससे प्राप्त करते हैं?

(*i*) डंठल से (*ii*) जड़ों से
(*iii*) पत्तियों से (*iv*) बीज रंध्र से

(ढ) पौधे किससे सांस लेते हैं?

(*i*) फूलों द्वारा (*ii*) स्टोमैटा द्वारा
(*iii*) तने द्वारा (*iv*) पंखुड़ियों द्वारा

(ण) हँसाने वाली गैस का क्या नाम है?

(*i*) कार्बन डाईऑक्साइड (*ii*) ऑक्सीजन
(*iii*) नाइट्रस ऑक्साइड (*iv*) कार्बन मोनो-ऑक्साइड

(त) वायुमंडल में सर्वाधिक मात्रा में कौन-सी गैस उपस्थित है?

(*i*) नाइट्रोजन (*ii*) ऑक्सीजन
(*iii*) कार्बन डाईऑक्साइड (*iv*) मिथेन

(थ) 'सांडों की लड़ाई' किस देश का राष्ट्रीय खेल है?

(*i*) युगोस्लाविया का (*ii*) स्पेन का
(*iii*) युक्रेन का (*iv*) कनाडा का

(द) 'आइस हॉकी' किस देश का राष्ट्रीय खेल है?

(*i*) स्पेन का (*ii*) चीन का
(*iii*) कनाडा का (*iv*) इंग्लैंड का

(ध) 'द टेस्ट ऑफ माई लाइफ' पुस्तक के लेखक कौन हैं?

(*i*) कपिल देव (*ii*) सहवाग
(*iii*) सुनील गावस्कर (*iv*) युवराज सिंह

(न) लंदन किस नदी के किनारे स्थित है?

(*i*) टेम्स नदी (*ii*) हिडन नदी
(*iii*) नील नदी (*iv*) कृष्णा नदी

9 सुभागी

(तुलसी महतो अपनी बेटी सुभागी से बहुत प्रेम करते थे। वह घर के कार्यों में चतुर तथा खेती-बाड़ी में निपुण थी। जबकि महतो का बेटा रामू बड़ा ही कामचोर, उजड्ड और आवारा था। महतो ने दोनों की शादी कर दी। थोड़े ही दिन बीते थे कि सुभागी विधवा हो गई। सुभागी के दुख की सीमा न थी। कुछ वर्ष बीते तो लोग महतो पर लड़की की दूसरी शादी का दबाव डालने लगे।)

पहला दृश्य

एक ग्रामीण – भाई महतो! लड़की की दूसरी शादी कर दो। आजकल कोई इसे बुरा नहीं मानता, तो तुम क्यों सोच-विचार करते हो?

महतो – भाई, मैं तो तैयार हूँ, लेकिन सुभागी भी माने तब न। वह किसी तरह राज़ी नहीं होगी। तुम ही उससे बात करके देख लो।

हरिहर – *(सुभागी को समझाते हुए)* बेटी, हम तेरे भले के लिए ही कहते हैं। माँ-बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा? तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?

सुभागी – *(सिर झुकाकर)* आपकी बात समझ रही हूँ, लेकिन मेरा मन शादी करने को नहीं करता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ। जो काम आप कहो, वह सिर के बल करूँगी, मगर शादी के लिए मुझसे न कहिए।

रामू – अगर तुम सोचती हो कि भैया कमाएँगे और मैं बैठी मौज करूँगी तो इस भरोसे न रहना।

सुभागी – मैंने कभी आपका आसरा किया ही नहीं और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं।

(माँ बाप के साथ रहते हुए सुभागी ने घर का सारा काम सँभाल लिया। बेचारी रात के तीसरे पहर से उठकर कूटने-पीसने लग जाती, चौका-बरतन करती, गोबर पाथती और फिर खेत में काम करने चली जाती। दोपहर में आकर जल्दी-जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती। रात में माँ के सिर में हौले-हौले तेल लगाती। माँ-बाप को कोई काम न करने देती। हाँ, भाई को न रोकती। रामू को यह बुरा लगता। एक दिन वह आपे से बाहर हो गया और चिल्लाने लगा।)

रामू – अगर इन लोगों से इतना ही मोह है तो अलग लेकर क्यों नहीं रहती हो? तब सेवा करो तो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है कि मीठी। दूसरों के बल पर वाहवाही लूटना आसान है। बहादुर वह होता है जो अपने बल पर काम करे। *(सुभागी चुपचाप सुनती रही।)*

शिक्षण संकेत

- प्रस्तुत पाठ मुंशी प्रेमचंद की कहानी का एकांकी रूपांतरण है। इस कहानी के माध्यम से बेटा-बेटी में अंतर करने वालों को सीख दी गई है।
- बच्चों को समझाएँ कि इस तरह का भेदभाव अनुचित है। लड़कियाँ किसी भी तरह लड़कों से कम नहीं होती हैं।

महतो – क्या बात है रामू, इस गरीबन से क्यों लड़ते हो?

रामू – तुम क्यों बीच में कूद पड़े? मैं तो उसको कह रहा हूँ।

महतो – जब तक मैं जीवित हूँ, तुम उसे कुछ नहीं कह सकते। मेरे पीछे जो चाहे करना। बेचारी का घर में रहना मुश्किल कर दिया है।

रामू – आपको बेटी प्यारी है तो उसे गले में बाँधकर रखिए। मुझसे अब इसके साथ निर्वाह न होगा।

महतो – अच्छी बात है। अगर तुम्हारी यह मर्ज़ी है, तो यही होगा। कल मैं गाँव के आदमियों को बुलाकर बँटवारा कर दूँगा। तुम चाहे अलग हो जाओ, सुभागी अलग नहीं होगी।

(उस रात तुलसी महतो को नींद न आई। वह रातभर सोचते रहे। रामू के जन्मोत्सव पर उन्होंने कर्ज़ लेकर जलसा किया और सुभागी पैदा हुई तो घर में रुपये होते हुए भी एक कौड़ी खर्च न की। पुत्र को रत्न समझा था और पुत्री को पूर्व जन्म के पापों का दंड। रत्न कितना कठोर निकला और दंड कितना मंगलमय।)

दूसरा दृश्य

(महतो गाँव के मुखिया सज्जन सिंह व अन्य गाँववालों के समक्ष अपनी समस्या रखते हुए।)

महतो – पंचो, अब रामू का और मेरा एक घर में निर्वाह नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि आप लोग इंसाफ़ से जो कुछ मुझे दे दो, वह लेकर अलग हो जाऊँ। रात-दिन की बहस अच्छी नहीं।

सज्जन सिंह – क्यों रामू, तुम अपने बाप से अलग रहना चाहते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती, माँ-बाप को बुढ़ापे में अलग किए देते हो? राम! राम!

रामू – जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा। इतना कहकर रामू वहाँ से चला गया।

महतो – देख लिया न आप लोगों ने इसका मिज़ाज? भगवान ने बेटी को दुख दे दिया, नहीं तो मुझे खेती-बाड़ी लेकर क्या करना था? जहाँ रहता, वहीं कमाता-खाता। भगवान ऐसा बेटा किसी बैरी को भी न दे। लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय।

सुभागी – दादा! यह बँटवारा मेरे ही कारण तो हो रहा है, मुझे क्यों नहीं अलग कर देते?

महतो – बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। चाहे संसार छूट जाए।

सज्जन सिंह – यह इस जन्म की देवी है। दो मर्दों का काम भी करती है। माँ-बाप की सेवा भी करती है।

(गाँववालों ने रामू और महतो का बँटवारा कर दिया। सुभागी अपने माँ-बाप के साथ रहने लगी।)

तीसरा दृश्य

(महतो को बहुत तेज़ बुखार है। उनके हाथ-पाँव ठंडे हो गए। सुभागी पिता की यह दशा देख रामू के पास गई।)

सुभागी – भैया, चलो! देखो आज दादा न जाने कैसे हुए जाते हैं? सात दिन से बुखार नहीं उतरा।

रामू – *(चारपाई पर लेटे-लेटे)* तो क्या मैं डॉक्टर, हकीम हूँ कि देखने चलूँ? जब तक अच्छे थे, तब तक तो तुम उनके गले का हार बनी हुई थी। अब जब मरने लगे तो मुझे बुलाने आई हो।

(सुभागी फिर कुछ न बोली। सीधे सज्जन सिंह के पास गई। महतो की हालत सुनते ही वे तुरंत सुभागी के साथ चले आए।)

सज्जन सिंह – अब कैसी तबीयत है?

महतो – बहुत अच्छी है भैया! अब तो चलने की बेला है। सुभागी के पिता अब तुम्हीं हो। उसे तुम्हीं को सौंपे जाता हूँ।

सज्जन सिंह – भैया महतो, घबराओ मत। भगवान ने चाहा तो तुम अच्छे हो जाओगे। सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी समझा है और जब तक जिऊँगा ऐसे ही समझता रहूँगा। तुम निश्िंचत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।

महतो – और नहीं कहूँगा भैया! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।

सज्जन सिंह – रामू को बुलाकर लाता हूँ। उससे जो भूल-चूक हो गई हो, क्षमा कर दो।

महतो – नहीं भैया! उस पापी का मुँह मैं नहीं देखना चाहता।

(इतना कहकर महतो ने आँखें बंद कर लीं। अंत्येष्टि करने के लिए गाँववालों ने रामू को समझाया पर वह तैयार नहीं हुआ।)

रामू – जिस पिता ने मरते समय मेरा मुँह देखना स्वीकार न किया, न वह मेरा पिता है, न मैं उसका बेटा हूँ।

(महतो की पत्नी लक्ष्मी ने दाह-संस्कार की क्रिया की, सुभागी ने सारी व्यवस्था की। तेरहवीं के दिन सारे गाँव के लोगों का भोज हुआ। चारों तरफ़ वाहवाही मच गई। लोग भोजन करके चले गए। लक्ष्मी थककर सो गई। केवल सुभागी चीज़ों को समेटने में लगी थी।)

सज्जन सिंह – अब तुम भी आराम करो बेटी, सवेरे यह सब काम कर लेना।

सुभागी – अभी थकी नहीं हूँ दादा! आपने जोड़ लिया? कुल कितने रुपये खर्च हुए?

सज्जन सिंह – वह पूछकर क्या करोगी बेटी?

सुभागी – कुछ नहीं, यों ही?

सज्जन सिंह – कोई तीन हज़ार रुपये हुए होंगे।

सुभागी – *(कुछ सकुचाते हुए)* मैं इन रुपयों की देनदार हूँ।

(पति के देहांत के बाद से ही लक्ष्मी का दाना-पानी छूट गया। सुभागी के आग्रह पर वह चौके

में जाती, मगर निवाला गले से न उतरता। पचास वर्ष हुए, एक दिन भी ऐसा न हुआ कि पति के बिना खाए उसने खुद खाया हो। अब उस नियम को कैसे तोड़े? आखिर दुर्बलता ने शीघ्र ही उसे खाट पर डाल दिया। माँ की दशा देखकर सुभागी समझ गई कि इनका भी अंतिम समय आ पहुँचा। सज्जन सिंह दोनों वक्त आते। लक्ष्मी की दशा बिगड़ती गई। पंद्रहवें दिन वह भी संसार से विदा ले गईं। माँ के जाने के बाद सुभागी के जीवन का एक ही

लक्ष्य रह गया था– सज्जन सिंह के रुपये चुकाने का। उसने तीन साल तक रात-को-रात और दिन-को-दिन न समझा। उसकी कार्य-शक्ति और हिम्मत देखकर लोग दाँतों तले अँगुली दबा लेते थे। तीसवें दिन तीन सौ रुपये लेकर वह सज्जन सिंह के पास पहुँच जाती थी। इसमें कभी नागा न होती थी।)

चौथा दृश्य

(सुभागी ने देनदारी की आखिरी किस्त चुकाई तो उसकी खुशी का ठिकाना न था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो गया था।)

सज्जन सिंह – बेटी, तुमसे एक प्रार्थना है। कहो कहूँ, कहो न कहूँ, मगर वचन दो मानोगी।

सुभागी – *(कृतज्ञ भाव से देखकर)* दादा, आपकी बात न मानूँगी तो किसकी बात मानूँगी?

सज्जन सिंह – मैंने अब तक तुमसे इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि तुम अपने को मेरा देनदार समझ रही थी। अब तुमने रुपये चुका दिए। मेरा तुम्हारे ऊपर कोई एहसान नहीं है। बोलो कहूँ?

सुभागी – आपकी जो आज्ञा हो।

सज्जन सिंह – देखो इनकार न करना, नहीं तो मैं तुम्हें अपना मुँह फिर न दिखाऊँगा।

सुभागी – क्या आज्ञा है?

सज्जन सिंह – मेरी इच्छा है कि तुम मेरे घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो। मैं जात-पात में विश्वास रखता था, मगर तुमने मुझे सारे बंधन तोड़ने पर मजबूर कर दिया। मेरा लड़का तुम्हारा पुजारी है। तुमने उसे देखा है। बोलो, मंजूर करती हो?

सुभागी – दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।

सज्जन सिंह – तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं, बेटी! तुम साक्षात भगवती का अवतार हो।

सुभागी – मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए ही करेंगे। आपका आदेश कैसे टाल सकती हूँ?

सज्जन सिंह – *(उसके सिर पर हाथ रखकर)* बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर रहे। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा, जो तुम जैसी कुलवंती को बहू के रूप में पाएगा।

–मुंशी प्रेमचंद

शब्दार्थ

आसरा	–	सहारा, भरोसा	आपे से बाहर होना	–	उत्तेजना में विवेक खो देना
जलसा	–	उत्सव, समारोह	मिज़ाज	–	स्वभाव
अंत्येष्टि	–	अंतिम क्रिया	आग्रह	–	निवेदन
निवाला	–	कौर	नागा	–	व्यतिक्रम, अवकाश

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं– उजड्ड – उजड्ड

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

उजड्ड जन्मोत्सव निर्वाह डॉक्टर अंत्येष्टि साक्षात

2. सोचकर बताइए–

(क) महतो सुभागी का दूसरा विवाह क्यों नहीं कर पा रहे थे?

(ख) रामू को क्या बुरा लगता था?

(ग) रामू महतो की अंत्येष्टि में शामिल क्यों नहीं हुआ?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) सुभागी कौन थी? ....

(ख) किसके जन्मोत्सव पर महतो ने कर्ज़ लेकर जलसा किया था? ....

(ग) महतो ने किसे पूर्व जन्मों का दंड समझा था? ....

(घ) महतो के दाह-संस्कार की क्रिया किसने की? ....

(ङ) महतो की तेरहवीं के लिए किसने सुभागी की सहायता की? ....

(च) सुभागी पर सज्जन सिंह का कितना कर्ज़ था? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) विवाह के पश्चात भी सुभागी अपने माता-पिता के साथ क्यों रहती थी?

....

....

(ख) महतो ने बँटवारा क्यों किया?

....

....

(ग) 'लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय।' महतो ने ऐसा क्यों कहा?

....

....

(घ) पति की मृत्यु का लक्ष्मी पर क्या प्रभाव पड़ा?

....

....

(ङ) सज्जन सिंह ने सुभागी की सहायता क्यों की?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) पाठ के आधार पर सुभागी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

....

....

(ख) इस नाटक से क्या शिक्षा मिलती है तथा यह किस परिवेश को दर्शाता है?

(ग) अंतिम समय में महतो को किस बात का पछतावा हो रहा था?

(घ) नीचे दी पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(*i*) भाई महतो! लड़की की दूसरी शादी कर दो। आजकल कोई इसे बुरा नहीं मानता, तो तुम क्यों सोच-विचार करते हो?

(*ii*) भगवान ऐसा बेटा किसी बैरी को भी न दे।

(*iii*) दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।

4. **नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–**

(क) सुभागी के दुख का क्या कारण था?

(*i*) वह पढ़ी-लिखी नहीं थी। ☐ (*ii*) उसकी शादी नहीं हो पा रही थी। ☐

(*iii*) वह कम उम्र में विधवा हो गई थी। ☐ (*iv*) वह अपाहिज थी। ☐

(ख) सुभागी रामू के पास क्यों गई थी?

(*i*) आर्थिक सहायता माँगने के लिए। ☐

(*ii*) पिता की बुरी दशा से घबराकर मदद माँगने के लिए ☐

(*iii*) उसे नीचा दिखाने के लिए। ☐

(*iv*) उसका मज़ाक उड़ाने के लिए। ☐

(ग) लक्ष्मी के मरने के बाद सुभागी के जीवन का क्या लक्ष्य रह गया था?

(*i*) अधिक-से-अधिक धन कमाकर ठाठ-बाट से रहना। ☐

(*ii*) सज्जन सिंह का कर्ज़ उतारना। ☐

(*iii*) भाई को सबक सिखाना। ☐

(*iv*) सज्जन सिंह के बेटे से विवाह करना। ☐

(घ) कर्ज़ उतर जाने के बाद ही सज्जन सिंह ने सुभागी के सामने अपने घर की बहू बनने का प्रस्ताव क्यों रखा?

(*i*) वह नहीं चाहते थे कि सुभागी किसी दबाव में आकर निर्णय ले। ☐

(*ii*) वह पहले अपना पैसा वापस लेना चाहते थे। ☐

(*iii*) वह सुभागी की परीक्षा लेना चाहते थे। ☐

(*iv*) वह चाहते थे कि सुभागी स्वयं उनसे उनकी बहू बनने का निवेदन करे। ☐

5. **नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

पति के देहांत के बाद से ही लक्ष्मी का दाना-पानी छूट गया। सुभागी के आग्रह पर वह चौके में जाती, मगर निवाला गले से न उतरता। पचास वर्ष हुए, एक दिन भी ऐसा न हुआ कि पति के बिना खाए उसने खुद खाया हो। अब उस नियम को कैसे तोड़े? आखिर दुर्बलता ने शीघ्र ही उसे खाट पर डाल दिया। माँ की दशा देखकर सुभागी समझ गई कि इनका अंतिम समय भी आ पहुँचा। सज्जन सिंह दोनों वक्त आते। लक्ष्मी की दशा बिगड़ती गई। पंद्रहवें दिन वह भी संसार से विदा ले गईं। माँ के जाने के बाद सुभागी के जीवन का एक ही लक्ष्य रह गया था– सज्जन सिंह के रुपये चुकाने का। उसने तीन साल तक रात-को-रात और दिन-को-दिन न समझा। उसकी कार्य-शक्ति और हिम्मत देखकर लोग दाँतों तले अँगुली दबा लेते थे।

(क) लक्ष्मी का दाना-पानी कब छूट गया था?

(*i*) बेटे के अलग होने के बाद। ☐ (*ii*) बेटी के विधवा होने के बाद। ☐

(*iii*) पति की मृत्यु के बाद। ☐ (*iv*) सज्जन सिंह से कर्ज़ लेने के बाद। ☐

(ख) किसके आग्रह पर लक्ष्मी चौके में जाती थी?

(*i*) सज्जन सिंह के ☐ (*ii*) सुभागी के ☐

(*iii*) रामू के ☐ (*iv*) महतो के ☐

(ग) महतो की मृत्यु के कितने दिन बाद लक्ष्मी की मृत्यु हुई?

(*i*) दस दिन बाद ☐ (*ii*) बारह दिन बाद ☐

(*iii*) पंद्रह दिन बाद ☐ (*iv*) बीस दिन बाद ☐

(घ) सज्जन सिंह का कर्ज़ चुकाने के लिए सुभागी ने कितने साल तक दिन-रात मेहनत की?

(*i*) एक साल तक ☐ (*ii*) दो साल तक ☐

(*iii*) चार साल तक ☐ (*iv*) तीन साल तक ☐

(ङ) सुभागी की शक्ति और हिम्मत देखकर लोग क्या करते थे?

(*i*) नाखून चबाते थे। ☐ (*ii*) दाँतों तले अँगुली दबाते थे। ☐

(*iii*) आँसू बहाते थे। ☐ (*iv*) चैन की बंसी बजाते थे। ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए वाक्यों में क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए–

(क) सुभागी जल्दी-जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती थी। ....

(ख) रात को वह माँ के सिर में हौले-हौले तेल लगाती, उनकी देह दबाती थी। ....

(ग) जितना सोचो उतना ही बोलो। ....

(घ) वह थककर बिलकुल चूर हो गई। ....

(ङ) लक्ष्मी अंदर सो रही थी। ....

2. संकेतों के आधार पर उचित विशेषण शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) .... मंदिर जीर्ण होकर खंडहर में बदलने लगा। (गुणवाचक विशेषण)

(ख) .... मक्खन देखकर उसका मन ललचा गया। (परिमाणवाचक विशेषण)

(ग) केले वाले के पास .... ही केले बचे थे। (संख्यावाचक विशेषण)

(घ) आपसे .... आदमी मिलने आया है। (सार्वनामिक विशेषण)

(ङ) .... काम को करना न हो तो विचार करना मूर्खता है। (सार्वनामिक विशेषण)

3. नीचे दिए वाक्यों में क्रिया शब्दों को रेखांकित कर उनके भेद भी बताइए–

सकर्मक/अकर्मक

(क) जंगल में मोर नाच रहा था। ....

(ख) अनुराग ने मीरा के लिए फूल खरीदे। ....

(ग) निशा ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। ....

(घ) राकेश खाना खाने लगा। ....

4. नीचे दिए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) आपे से बाहर होना– ....

....

(ख) हाथ-पाँव ठंडे होना– ....

....

(ग) आँखों में चुभना– ....

....

(घ) दाना-पानी उठना– ....

....

(ङ) संसार से विदा लेना– ....

....

(च) दाँतों तले अँगुली दबाना– ....

....

5. नीचे दिए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

बेटी	....	....	लड़की	....	....
लक्ष्मी	....	....	भाई	....	....
आदमी	....	....	बहू	....	....
मुँह	....	....	मुखिया	....	....

एकांकी से आगे

- सोचिए, हमारे समाज में लड़के और लड़कियों में अंतर क्यों किया जाता है और इसके पीछे क्या मानसिकता है? यदि माता-पिता अपने बेटे व बेटी में अंतर करना बंद कर दें तो समाज में हमें कौन-से परिवर्तन देखने को मिलेंगे?
- स्त्री-रहित समाज की कल्पना कीजिए और बताइए कि स्त्री के बिना समाज को कौन-कौन सी जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ेगा?

नन्हे हाथों से

- 'नारी शोषण' पर अपनी उत्तर पुस्तिका में निबंध लिखिए।
- चित्र को देखकर कुछ वाक्य लिखिए।

कुछ करने को

- घरेलू हिंसा क्या होती है तथा इसका शिकार कौन होते हैं? जानकारी एकत्र कीजिए।
- महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को दिखाता हुआ एक नाटक तैयार करके उसका मंचन कीजिए तथा उसमें सीख दीजिए कि महिलाओं के बिना घर, गाँव, शहर तथा देश का कोई अस्तित्व नहीं है।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके समक्ष किसी महिला के साथ कोई अभद्र व्यवहार करे या फब्तियाँ कसे तो आप क्या करेंगे?
- यदि आपको आपके सहपाठी के व्यवहार में अचानक कोई परिवर्तन देखने को मिले और वह डरा और सहमा हुआ लगे तो आप क्या करेंगे?

10 लोकगीत

लोकगीत जनता के गीत हैं। ये घर, गाँव और नगर के लोगों के गीत हैं। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। ये त्योहारों और विशेष अवसरों पर गाए जाते हैं। ये सदा से गाए जाते रहे हैं और इनके रचयिता भी अधिकतर गाँव के लोग ही होते हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न होते हैं। ये गीत वाद्य यंत्रों के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की सहायता से गाए जाते हैं।

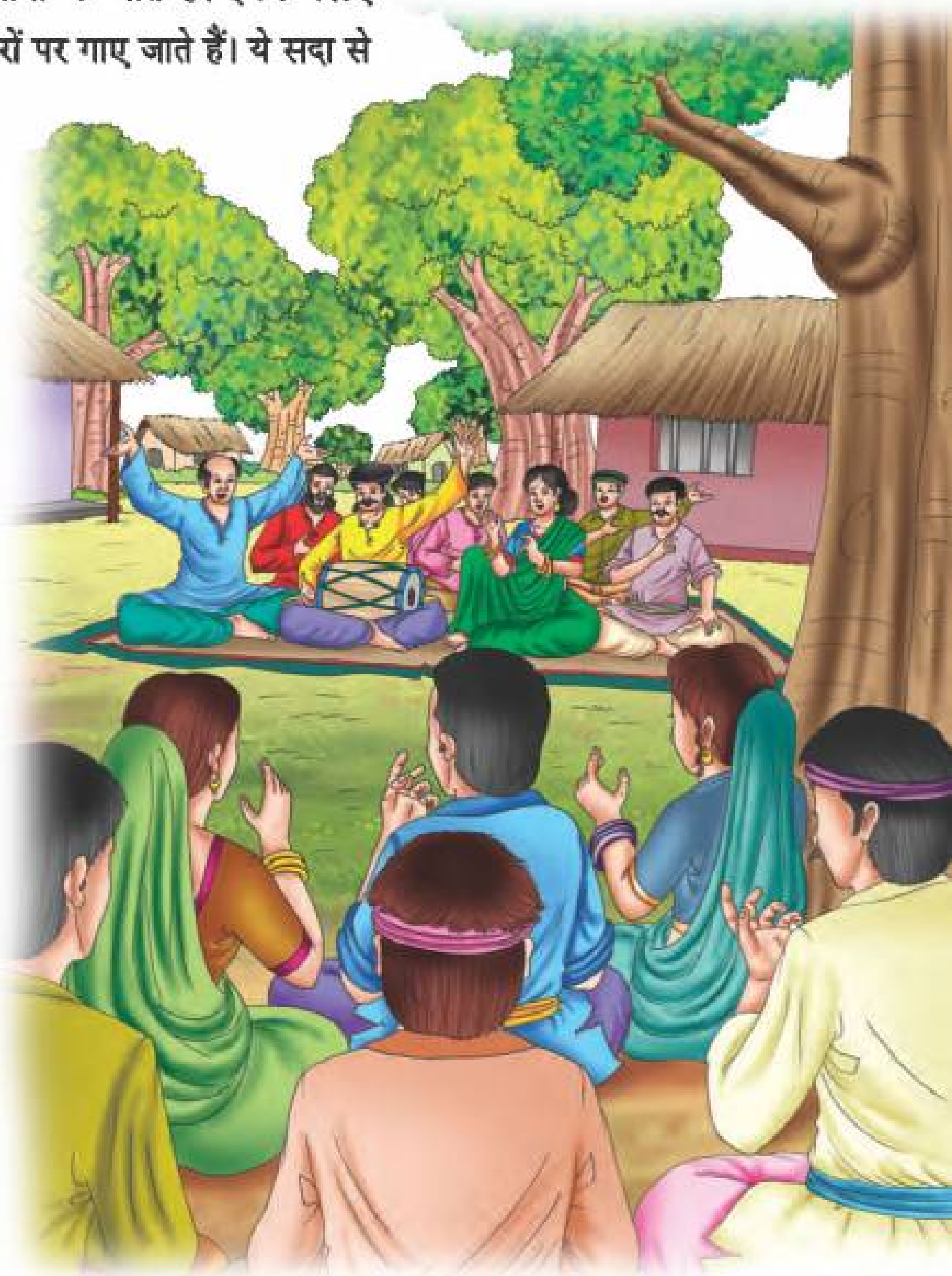

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर अब साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर कसी है। इस प्रकार उनके प्रयास से अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो चुके हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दकन और छोटा नागपुर में गोंड-खांड, ओराँव-मुंडा, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनका जीवन आज भी नियमों के बंधन में न बँध सका और निर्द्वंद्व लहराता है। इनके गीत अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाए जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, तो दिशाएँ गूँज उठती हैं।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि लोकगीत हमारी परंपराओं और सभ्यताओं से जुड़े होते हैं।
- बच्चों को लोकगीतों के बारे में जानकारी देते हुए, उनसे जुड़ी परंपराओं से भी अवगत करवाएँ।

पहाड़ियों के अपने-अपने स्थानीय गीत होते हैं। उनके रूप भिन्न-भिन्न होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनकी अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। पहाड़ी क्षेत्र से संबद्ध होने के कारण उनका नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में हैं। इनका संबंध देहात की जनता से है। इनमें बड़ी जान होती है। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के अन्य पूर्वी और बिहार के पश्चिमी ज़िलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के गीत हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महिवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाए जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और क्षेत्रों की बोलियों में गाए जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। इन गीतों के राग तो आकर्षक होते ही हैं, स्थानीय लोगों द्वारा समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण होती है।

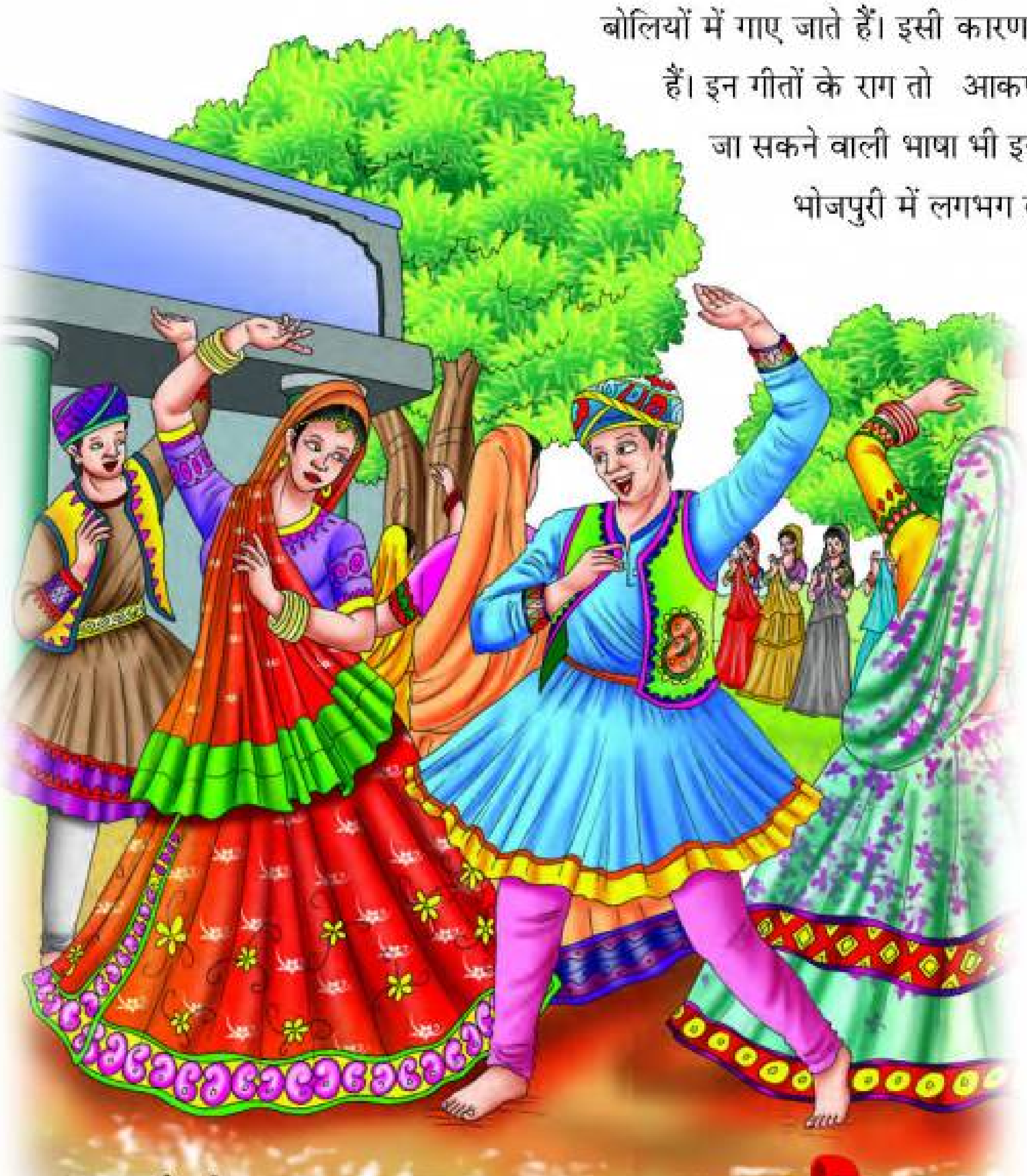

भोजपुरी में लगभग तीस-चालीस बरसों से 'बिदेसिया' का बहुत प्रचार हुआ है। अनेक समूह इन्हें देहात में गाते हुए फिरते हैं। उधर के ज़िलों में विशेषकर बिहार में, बिदेसिया से बढ़कर अन्य गीत लोकप्रिय नहीं है। इन गीतों में अधिकतर परदेशी प्रेमी की, रसिकप्रिय और प्रियाओं की बात रहती है। इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाए जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर दल बनाकर एक-दूसरे के जवाब के रूप में गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ समय से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

दूसरे बड़े प्रकार के लोकप्रिय गीत आल्हा हैं। ये अधिकतर बुंदेलखंडी में गाए जाते हैं। इनका आरंभ चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है, जिसने अपने महाकाव्य में आल्हा-ऊदल की वीरता का वर्णन किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाए जाते हैं। इन्हें गाने वाले ढोलक लिए गाँव-गाँव गाते फिरते हैं। इन्हीं की तरह उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। ये अधिकतर गद्य-पद्यात्मक हैं।

हमारे देश में स्त्रियों के गीतों की संख्या अनंत है। ये गीत हैं तो लोकगीत ही, पर इन्हें अधिकतर स्त्रियाँ ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे पुरुष रचयिता या गाने वालों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषतया स्त्रियों से ही है। इस दृष्टि से भारत सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के गीत पुरुषों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर आज से नहीं वरन प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गीतों में से ही हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतया अकेले नहीं गाए जाते, दल बनाकर गाए जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ गाते हैं। यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसर पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बनाकर गाती हैं पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी ऐसी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाए जाते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी व केरल तक और काठियावाड़, गुजरात व राजस्थान से उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश तक पूरे देश के अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गानों के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे स्त्रियाँ विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर गाती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। यह सभी प्रांतों में लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में 'रसिया' चलता है जिसे लोगों के दल-के-दल गाते हैं, विशेष तौर पर स्त्रियाँ।

वास्तव में, गाँव के गीतों के प्रकार अनंत हैं। जहाँ जीवन इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ आनंद के स्रोतों की भला क्या कमी हो सकती है? वहाँ के अनंत संख्यक गीत उद्दाम जीवन के प्रतीक हैं।

–भगवतशरण उपाध्याय

शब्दार्थ

रचयिता	–	रचना करने वाला	हेय	–	हीन
ओजस्वी	–	ओज से भरा, प्रभावकारी	निर्द्वंद्व	–	स्वच्छंदतापूर्वक
आह्लादकर	–	हर्षकर, खुशी देने वाला	करुणा	–	दया
विरह	–	वियोग	ह्रास	–	क्षय, कमी
उल्लसित	–	प्रसन्न	पुट	–	बनाया गया आधान, मिलावट
अनंत	–	असीम, जिसका अंत न हो	उद्दाम	–	बंधन रहित

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं– संबद्ध – संबद्ध द्वारा – द्वारा विद्यापति – विद्यापति
गद्य – गद्य पद्य – पद्य उद्दाम – उद्दाम

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

शास्त्रीय आकर्षित आह्लादकर उल्लसित

2. सोचकर बताइए–

(क) लोकगीत शास्त्रीय संगीत से किस प्रकार भिन्न हैं?

(ख) आल्हा गीत किससे संबंधित है?

(ग) दलीय गीत किसे कहते हैं?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) लोकगीतों के रचयिता कौन होते हैं? ....

(ख) किसके समक्ष लोकगीतों को हेय समझा जाता था? ....

(ग) पहाड़ी क्षेत्र के लोकगीतों को क्या नाम दिया गया है? ....

(घ) बाउल और भतियाली कहाँ के लोकगीत हैं? ....

(ङ) राजस्थानी लोकगीत किस नाम से जाने जाते हैं? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) लोकगीत किन्हें कहते हैं?

(ख) साहित्य और कला के क्षेत्र में कौन-सा परिवर्तन देखने को मिला है?

(ग) लोकगीतों में राग का क्या महत्त्व है? कुछ प्रसिद्ध रागों के बारे में बताइए।

(घ) भोजपुरी लोकगीतों के विषय में जानकारी दीजिए।

(ङ) 'गरबा' की क्या विशेषता है? यह अन्य लोकगीतों से किस प्रकार भिन्न है?

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) लोकगीतों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

(ख) भारत में स्त्रियों के प्रमुख गीत कौन-कौन से हैं?

(ग) लोकगीतों की क्या विशेषताएँ हैं?

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) लोकगीतों के लिए किसकी आवश्यकता नहीं होती?

(*i*) रचयिता की ☐ (*ii*) साधना की ☐ (*iii*) ढोलक की ☐ (*iv*) लोगों की ☐

(ख) लोकगीतों का संबंध किससे होता है?

(*i*) देहात से ☐ (*ii*) शहरों से ☐ (*iii*) महानगरों से ☐ (*iv*) विदेशों से ☐

(ग) 'माहिया' गीत किस क्षेत्र विशेष से संबंधित है?

(*i*) हरियाणा ☐ (*ii*) पंजाब ☐ (*iii*) उत्तर प्रदेश ☐ (*iv*) मध्य प्रदेश ☐

(घ) 'बिदेसिया' लोकगीत कौन-सी बोली में गाए जाते हैं?

(*i*) हरियाणवी ☐ (*ii*) कन्नड़ ☐ (*iii*) भोजपुरी ☐ (*iv*) पहाड़ी ☐

(ङ) बुंदेलखंडी में गाए जाने वाले आल्हा गीतों में किसकी वीरता का बखान किया जाता है?

(*i*) आल्हा-ऊदल ☐ (*ii*) जगनिक ☐ (*iii*) अशोक ☐ (*iv*) पृथ्वीराज ☐

भाषा ज्ञान

1. उचित कारक शब्द भरकर गद्यांश को पूरा कीजिए–

कुछ समय उपरांत कोटलावालों .... कोठी .... ही मुझे निवास मिल गया। गुरु जी .... भी बहुत-सा समय वहीं बीतता था। उन्होंने अंग्रेज़ी नहीं पढ़ी थी फिर भी साहित्य .... गहरे जानकार थे। हम कोटला .... राजा और उनके दो भाइयों .... बच्चों .... ट्यूशन पढ़ाते थे। गरमियों .... छुट्टियों .... दो-चार दिन .... मैं झाँसी आता, बाकी समय कोटला .... ही रहता था।

2. नीचे दिए शब्दों का समास-विग्रह कीजिए–

बारहमासी – ....

अठन्नी – ....

दोपहर – ....

चौराहा – ....

सप्तर्षि — ....

छमाही — ....

3. **कोष्ठक में दिए शब्दों के बहुवचन शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए–**

(क) .... प्रार्थना सभा की ओर चले गए। (अध्यापक)

(ख) .... अपने कार्य में लगे हुए थे। (मज़दूर)

(ग) .... विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारी में लगे थे। (छात्र)

(घ) .... को धैर्य रखना चाहिए। (प्रजा)

4. **कुछ शब्द सदा बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा कुछ सदा एकवचन के रूप में। नीचे दिए शब्दों को उचित स्थान पर लिखिए–**

आँसू, दूध, पानी, होश, लोग, आग, वर्षा, प्राण, दर्शन, बाल, भीड़, जनता

सदा बहुवचन			सदा एकवचन		
....	....	....	....	....	....
....	....	....	....	....	....

निबंध से आगे

- लोगों के जीवन पर लोकगीतों का क्या प्रभाव पड़ता है? यदि किसी विवाह समारोह में लोकगीत न गाए जाएँ तो क्या परिवर्तन देखने को मिलेगा?
- शहरों की अपेक्षा गाँव में लोकगीतों का अधिक प्रचलन क्यों है?

कुछ करने को

- अपने क्षेत्र विशेष से संबंधित लोकगीतों का संग्रह कीजिए। साथ ही पता लगाइए कि किस अवसर पर कौन-कौन से गीत गाए जाते हैं?
- भारत के राज्यों से संबंधित लोकगीत व लोकनृत्यों पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

नन्हे हाथों से

- चित्र से संबंधित अपने क्षेत्र का कोई प्रसिद्ध लोकगीत लिखिए–

....

....

....

....

आप क्या करेंगे

- यदि आपके पड़ोस में अन्य प्रदेश से आया आपका हम-उम्र बालक उदास बैठा हो तो आप क्या करेंगे?
- यदि आप अपने संबंधियों द्वारा आयोजित किसी समारोह में गए हों और वहाँ आपको कोई ज़िम्मेदारी सौंप दी जाए तो आप क्या करेंगे?
- विवाह समारोह बिना धूम-धड़ाके के अच्छा नहीं लगता। यदि आपके भाई/ बहन का विवाह हो और किसी पड़ोसी की मृत्यु हो जाने के कारण आपके घर के वृद्ध बैंड-बाजा आदि न बजाने दें तो आप क्या करेंगे?

11 विद्याध्ययन का समय

हाईस्कूल में मैं मूर्ख नहीं माना जाता था। शिक्षकों के प्रति हमेशा प्रेमभाव प्रकट करता रहा। प्रतिवर्ष माता-पिता को प्रत्येक विद्यार्थी की पढ़ाई तथा चाल-चलन के संबंध में प्रमाण-पत्र भेजे जाते। उनमें कभी मेरे चाल-चलन की शिकायत नहीं की गई। दूसरे दर्जे के बाद तो इनाम भी पाए और पाँचवे तथा छठे दर्जे में तो क्रमशः चार रुपये और पंद्रह रुपये मासिक की छात्रवृत्तियाँ भी मिली थीं। छात्रवृत्ति मिलने में मेरी योग्यता की अपेक्षा भाग्य ने अधिक सहायता की। ये छात्रवृत्तियाँ सभी लड़कों के लिए नहीं थीं। उस समय चालीस-पचास विद्यार्थियों की कक्षा में सौराष्ट्र प्रांत के विद्यार्थी बहुत कम होते थे।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि मैं अपने को बहुत योग्य नहीं समझता था। इनाम अथवा छात्रवृत्ति मिलती तो मुझे आश्चर्य होता। परंतु हाँ, अपने आचरण का मुझे बड़ा खयाल रहता था। सदाचार में यदि चूक होती तो मुझे रोना आ जाता। यदि मुझसे कोई ऐसा काम हो जाता जिसके लिए शिक्षक को उलाहना देना पड़े, अथवा उनका ऐसा विचार भी हो जाए, तो यह मेरे लिए असह्य हो जाता। मुझे याद है, एक बार मैं पिटा भी था। मुझे इस बात का दुख न हुआ कि मैं पिटा किंतु इस बात का बहुत दुख हुआ कि मैं दंड का पात्र समझा गया। मैं फूट-फूटकर रोया। यह घटना पहली अथवा दूसरी कक्षा की है। उस समय हमारे प्रधानाध्यापक-गीमी बहुत अनुशासनप्रिय थे। वे अनुशासन के नियमों का पालन करवाते, विधिपूर्वक काम करते और काम लेते तथा अच्छी पढ़ाई कराते थे। उन्होंने ऊँचे दर्जे के विद्यार्थियों के लिए व्यायाम, क्रिकेट आदि अनिवार्य कर दिए थे। मेरा जी खेल में न लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं व्यायाम, क्रिकेट या फुटबॉल में भाग लेने कभी न जाता था। मेरा झेंपूपन भी इसका एक कारण था। अब मैं सोचता हूँ कि व्यायाम में यह अरुचि मेरी भूल थी। उस समय मेरे ऐसे विचार थे कि व्यायाम का शिक्षा के साथ कोई संबंध नहीं है। बाद में मैं समझा कि व्यायाम अथवा शारीरिक शिक्षा के लिए भी विद्याध्ययन में उतना ही स्थान होना चाहिए, जितना मानसिक शिक्षा का।

फिर भी मुझे कहना चाहिए कि कसरत न करने से मुझे कोई नुकसान नहीं हुआ। इसका पहला कारण था— पुस्तकों में मैंने पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना अच्छा होता है। यह मुझे पसंद आया और तभी से प्रातःकाल घूमने जाने की मुझे आदत पड़ गई, जो अब तक है। सैर भी एक प्रकार का व्यायाम है और इस कारण मेरा शरीर थोड़ा-बहुत सुगठित हो गया।

अरुचि का दूसरा कारण था— पिता जी की सेवा-शुश्रूषा करने की तीव्र इच्छा। विद्यालय बंद होते ही तुरंत घर पहुँचकर उनकी सेवा में जुट जाता। जब विद्यालय में व्यायाम अनिवार्य कर दिया गया तब शाम को चार बजे व्यायाम

शिक्षण संकेत

- बच्चों में गुणों और अवगुणों का रोपण बाल्यकाल में ही हो जाता है। इसलिए बच्चों को सही शिक्षा दें और मार्गदर्शन करें जिससे कि वे सही-गलत का निर्णय कर सही मार्ग अपना सकें।
- बच्चों को अच्छी आदतें सीखने के लिए प्रेरित करें। साथ ही उन्हें बताएँ कि बचपन की आदतें जीवनभर साथ रहती हैं। अतः अच्छी आदतों को ही अपनाना चाहिए।

के लिए जाना पड़ता था। एक शाम चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल छा रहे थे, इस कारण समय का पता न चल सका। बादलों से मुझे धोखा हो गया। जब तक व्यायाम के लिए पहुँचा, तब तक सब लोग चले गए थे, दूसरे दिन गीमी साहब ने हाज़िरी देखी तो मुझे गैरहाज़िर पाया। मुझसे कारण पूछा। जो कारण था, मैंने वही बतलाया परंतु उन्होंने उसे सच न माना और मुझ पर एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना जुर्माना किया।

मुझे इस बात से अत्यंत दुख हुआ कि मैं झूठा समझा गया। मैं यह कैसे सिद्ध करता कि मैंने झूठ नहीं बोला। कोई उपाय न था। मन-मसोसकर रह जाना पड़ा। मैं रोया और समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए। अपनी पढ़ाई के दिनों में वह मेरी पहली और आखिरी भूल थी। मुझे कुछ-कुछ स्मरण है कि अंत में वह जुर्माना माफ़ कर दिया गया था।

पिता जी की चिट्ठी प्रधानाध्यापक को मिली कि मैं अपनी सेवा-शुश्रूषा के लिए विद्यालय के बाद इसे अपने पास चाहता हूँ, तब जाकर व्यायाम की अनिवार्यता से छुटकारा मिला।

व्यायाम की जगह मैंने घूमना जारी रखा। इस कारण शरीर से मेहनत न करने की भूल के लिए शायद सज़ा न भोगनी पड़ी हो परंतु एक दूसरी भूल की सज़ा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में सुलेख का होना आवश्यक नहीं, यह कुबुद्धि मेरे मन में न जाने कहाँ से आ गई, जो विलायत जाने तक रही। विशेषकर दक्षिण अफ़्रीका में, जहाँ वकीलों और वहीं जन्मे और पढ़े-लिखे युवकों के अक्षर मोती की तरह देखे, तब जाकर मैं बहुत लजाया और पछताया। मैंने देखा कि लेख का खराब होना अधूरी शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपना लेख सुधारने की बहुत कोशिश की परंतु पके हुए घड़े पर मिट्टी कैसे चढ़ सकती है? जिस बात की अवहेलना मैंने बचपन में की, उसे मैं आज तक न सुधार सका। प्रत्येक नवयुवक और नवयुवती मेरे उदाहरण को देखकर चेतें और समझें कि सुलेख शिक्षा का आवश्यक अंग है। लेख सुधारने के लिए लेखन-कला आवश्यक है। मैं तो अपनी यह राय दे रहा हूँ कि बालकों को आलेखन कला सीखनी चाहिए। जिस प्रकार पक्षियों और वस्तुओं को देखकर बालक उन्हें याद रखता है और आसानी से पहचान लेता है, उसी प्रकार अक्षरों को भी पहचान लेता है और जब चित्रकला सीखकर चित्र आदि बनाना सीख जाता है, तभी यदि अक्षर लिखना सीखे, तो उसके अक्षर सुंदर हो जाएँ।

संस्कृत मुझे रेखागणित से भी अधिक मुश्किल मालूम पड़ी। रेखागणित में तो रटने की कोई बात न थी, परंतु संस्कृत में मेरी दृष्टि में सब रटना था। यह विषय भी चौथी कक्षा से शुरू होता था। छठी कक्षा में जाकर मेरा दिल बैठ गया।

संस्कृत और फ़ारसी वर्ग में एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा रहती थी। फ़ारसी के मौलवी साहब नरम आदमी थे, विद्यार्थी आपस में बातें करते कि फ़ारसी बहुत सरल है और मौलवी साहब भी भले आदमी हैं। विद्यार्थी जितना याद करता है, उतने पर ही वे निभा लेते हैं। सरल होने की बात से मैं ललचाया और एक दिन फ़ारसी के दर्जे में जाकर बैठ गया। संस्कृत के शिक्षक को इससे दुख हुआ। उन्होंने बुलाया और कहा, "यह तो सोचो, तुम किसके लड़के हो? धर्म की भाषा तुम नहीं पढ़ना चाहते? तुम्हें जो कठिनाई हो, सो मुझे बताओ। मैं तो समस्त विद्यार्थियों को अच्छी संस्कृत पढ़ाना चाहता हूँ। आगे चलकर तो इसमें रस की घूँटें मिलेंगी। तुमको इस तरह निराश नहीं होना चाहिए। तुम फिर मेरी कक्षा में आकर बैठो।" मैं शरमिंदा हुआ। शिक्षक के प्रेम की अवहेलना न कर सका। आज मेरी आत्मा अध्यापक कृष्णशंकर का उपकार मानती है क्योंकि जितनी संस्कृत मैंने उस समय पढ़ी थी, यदि उतनी भी न पढ़ी होती, तो आज मैं संस्कृत शास्त्रों का जो आनंद ले रहा हूँ, वह न ले पाता। बल्कि मुझे इस बात का पश्चात्ताप रहता है कि मैं उच्च कोटि की संस्कृत न पढ़ सका।

अब तो मैं यह मानता हूँ कि भारतवर्ष की उच्च शिक्षा में मातृभाषा के उपरांत राष्ट्रभाषा हिंदी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी के लिए स्थान होना चाहिए। इतनी भाषाओं की गिनती से किसी को डर जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि विधिपूर्वक भाषाएँ पढ़ाई जाएँ और सब विषयों का अध्ययन अंग्रेज़ी के द्वारा करने का बोझ हम पर न हो तो ये भाषाएँ भार न मालूम हों, बल्कि उनमें बड़ा रस आने लगे। फिर जो व्यक्ति एक भाषा को विधिपूर्वक सीख लेता है, उसे दूसरी भाषाओं का ज्ञान सुगमता से हो जाता है। सच पूछिए तो हिंदी, गुजराती और संस्कृत, इन्हें एक ही भाषा मानना चाहिए। यही उर्दू, फ़ारसी और अरबी के लिए भी कह सकते हैं।

मैंने छह-सात साल की उम्र से लेकर सोलह वर्ष तक विद्याध्ययन किया परंतु विद्यालय में कहीं धर्म शिक्षा न मिली। जो चीज़ शिक्षकों से सहज ही मिलनी चाहिए थी, वह न मिली। फिर भी वातावरण से कुछ-न-कुछ धर्म-प्रेरणा मिला करती थी। यहाँ धर्म का व्यापक अर्थ लेना चाहिए। धर्म से मेरा अभिप्राय आत्मज्ञान से है।

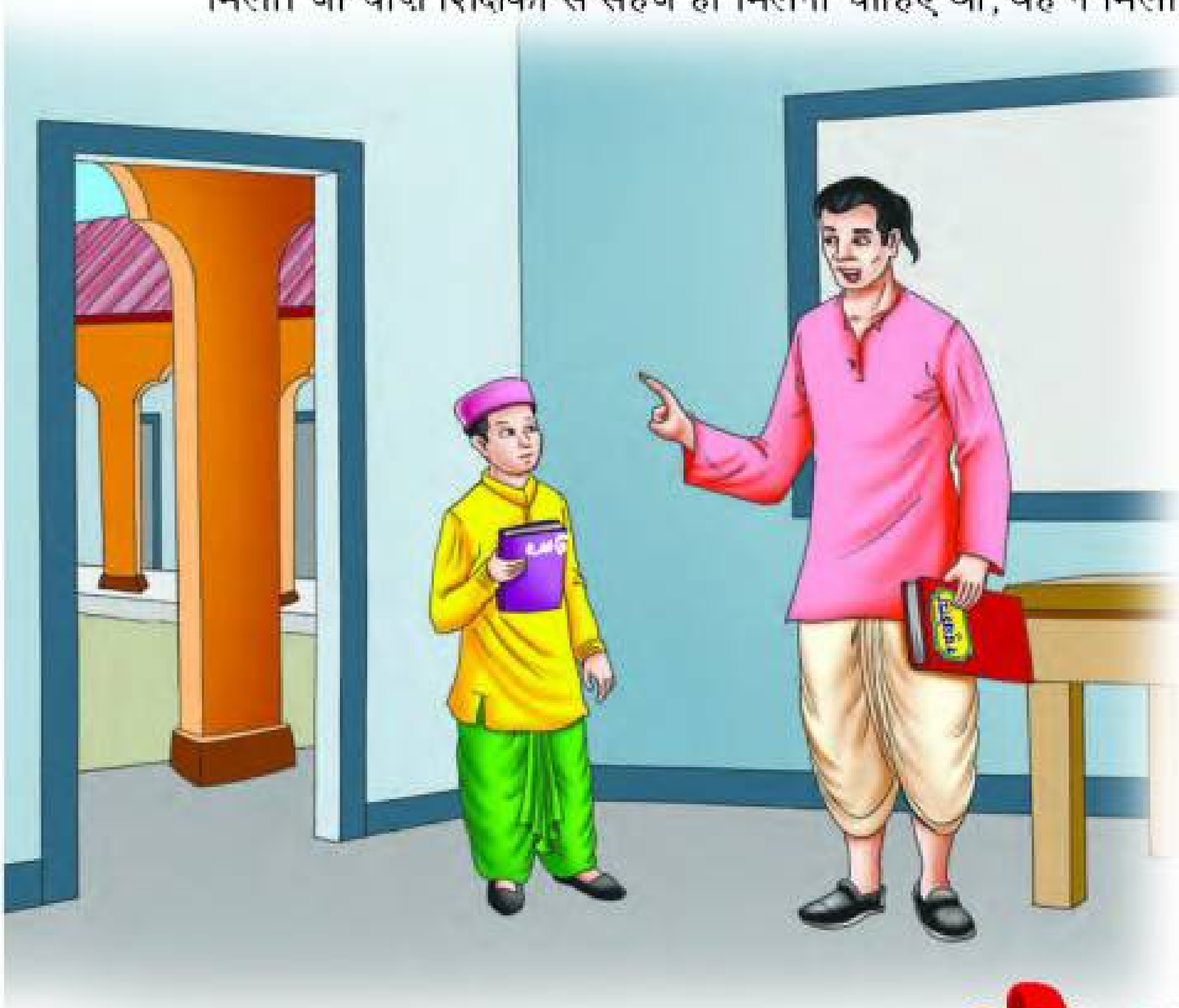

मैं इस बात का अच्छी तरह अनुभव कर रहा हूँ कि बचपन में पड़े शुभ-अशुभ संस्कार बड़े होकर गहरे हो जाते हैं और यह बात अब तक इसलिए खल रही है कि लड़कपन में कितने ही अच्छे ग्रंथों का श्रवण-पाठ न हो पाया।

–मोहनदास करमचंद गांधी

शब्दार्थ

योग्यता	– क्षमता, उपयुक्तता	छात्रवृत्ति	– वजीफ़ा, शिक्षा के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता
सदाचार	– अच्छा आचरण	उलाहना	– ताना
असह्य	– जो सहन न किया जा सके	दंड	– सज़ा
अनिवार्य	– आवश्यक	सेवा-शुश्रूषा	– सेवा-टहल, परिचर्या
विघ्न	– बाधा	अनुरोध	– विनय
आलेखन	– लेखन कला	प्रतिस्पर्धा	– प्रतियोगिता
अवहेलना	– तिरस्कार	पश्चात्ताप	– आत्मग्लानि
व्यापक	– विस्तृत, फैला हुआ	अभिप्राय	– मतलब

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–

विद्यार्थी – विद्यार्थी   असह्य – असह्य   कुबुद्धि – कुबुद्धि

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

छात्रवृत्तियाँ   अनुशासनप्रिय   विद्यार्थियों   प्रतिस्पर्धा   पश्चात्ताप

2. सोचकर बताइए–

(क) गांधी जी को छात्रवृत्ति मिलने पर आश्चर्य क्यों होता था?

(ख) व्यायाम का शिक्षा से क्या संबंध होता है?

(ग) गांधी जी व्यायाम के लिए निश्चित समय पर क्यों नहीं पहुँच पाए?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) गांधी जी के मन में शिक्षकों के प्रति कैसी भावना थी? ....

(ख) गांधी जी का संबंध किस प्रांत से था? ....

(ग) गांधी जी के विद्यालय के प्रधानाध्यापक का क्या नाम था? ....

(घ) गांधी जी किसकी सेवा-शुश्रूषा में जुटे रहते थे? ....

(ङ) दक्षिण अफ्रीका पहुँचने पर गांधी जी को किस बात का पछतावा हुआ? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) प्रारंभ में व्यायाम के बारे में गांधी जी के क्या विचार थे?

....

....

(ख) गांधी जी की पहली और आखिरी भूल क्या थी?

....

....

(ग) सुलेख की महत्ता के बारे में गांधी जी को कब पता चला?

....

....

(घ) संस्कृत शिक्षक को किस बात का दुख हुआ? उन्होंने गांधी जी को क्या समझाया?

....

....

(ङ) भाषाओं के संदर्भ में गांधी जी के क्या विचार थे?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) गांधी जी का आचरण कैसा था?

....

....

....

....

(ख) व्यायाम के प्रति गांधी जी की अरुचि के क्या कारण थे?

....

....

....

....

(ग) 'लेख का खराब होना अधूरी शिक्षा की निशानी है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की पढ़ाई तथा चाल-चलन के संबंध में प्रमाण-पत्र कहाँ भेजे जाते थे?

(*i*) प्रधानाध्यापक के पास ☐ (*ii*) माता-पिता के पास ☐

(*iii*) राज्यपाल के पास ☐ (*iv*) शिक्षकों के पास ☐

(ख) छठी कक्षा में गांधी जी को कितने रुपये मासिक की छात्रवृत्ति मिलती थी?

(*i*) दो रुपये ☐ (*ii*) चार रुपये ☐ (*iii*) दस रुपये ☐ (*iv*) पंद्रह रुपये ☐

(ग) गांधी जी को कब रोना आ जाता था?

(*i*) जब छात्रवृत्ति मिलती थी। ☐ (*ii*) जब सदाचार में चूक हो जाती थी। ☐

(*iii*) जब झूठ पकड़ा जाता था। ☐ (*iv*) जब व्यायाम करने जाना पड़ता था। ☐

(घ) गांधी जी शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए क्या करते थे?

(*i*) खेल-कूद ☐ (*ii*) भाग-दौड़ ☐

(*iii*) सुबह की सैर ☐ (*iv*) पढ़ाई ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

सदाचार – .... + ... विद्यार्थी – .... + ...

उपरांत – .... + ... छात्रवृत्ति – .... + ...

विद्याध्ययन – .... + ... पश्चात्ताप – .... + ...

2. नीचे दिए शब्दों की सहायता से सार्थक शब्द बनाइए–

ज्ञान	ज्ञानवान	ज्ञानवती	ज्ञानी
मन	....	....	....
विद्या	....	....	....

छात्र ....

लेख ....

धर्म ....

3. नीचे दिए वाक्यों में कारक शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनके भेद भी लिखिए–

(क) शिक्षकों के प्रति हमेशा प्रेमभाव प्रकट करता रहा। ....

(ख) छात्रवृत्तियाँ सभी लड़कों के लिए नहीं थी। ....

(ग) जब व्यायाम अनिवार्य कर दिया गया, तब इस सेवा में विघ्न होने लगा। ....

(घ) दूसरे दिन गीमी साहब ने हाज़िरी देखी तो मुझे गैरहाज़िर पाया। ....

(ङ) कुछ दिन बाद व्यायाम से छुट्टी मिल गई। ....

(च) पके हुए घड़े पर मिट्टी कैसे चढ़ सकती है? ....

4. नीचे दिए वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्दों पर ◯ लगाइए–

(क) मैं पिटा किंतु इस बात का बहुत दुख हुआ कि मैं दंड का पात्र समझा गया।

(ख) वह मेरी पहली और आखिरी भूल थी।

(ग) जो चीज़ शिक्षक से सहज मिलनी चाहिए थी, वह न मिली।

(घ) तुम्हें जो कठिनाई हो, सो मुझे बताओ।

(ङ) मैंने अपना लेख सुधारने की बहुत कोशिश की परंतु असफल रहा।

आत्मकथा से आगे

- महात्मा गांधी को सेहत और सुलेख के संबंध में देर से ज्ञान हुआ। यदि उन्हें पहले ही यह बात समझ आ जाती तो उनकी आत्मकथांश में क्या परिवर्तन देखने को मिलता? अनुमान लगाकर लिखिए।

नन्हे हाथों से

- अपनी उत्तर पुस्तिका में आदर्श विद्यार्थी पर निबंध लिखिए।
- अपने जीवन में घटी किसी घटना को अपने शब्दों में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

* महात्मा गांधी और महात्मा बुद्ध में क्या समानताएँ हैं? पता लगाइए और उनके विषय में कुछ वाक्य लिखिए।

कुछ करने को

- महात्मा गांधी के आदर्शों को पढ़िए और शिक्षा के प्रति उनके विचारों का संग्रह कीजिए।
- महात्मा गांधी अहिंसावादी थे, परंतु उन्होंने यह मार्ग डरकर या दब्बूपन की वजह से नहीं अपनाया। महात्मा गांधी की जीवनी पढ़िए और जानिए कि उन्होंने अहिंसा के मार्ग को क्यों चुना?

आप क्या करेंगे

- महात्मा गांधी का विचार था कि यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसके समक्ष दूसरा गाल भी कर दो। किसी कारणवश यदि कोई आपको चाँटा मारे तो आप क्या करेंगे?
- यदि आपका लेख सुंदर न हो और आपकी लिखावट पर कोई सहपाठी आपका मज़ाक उड़ाए तो आप क्या करेंगे?

12 झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

कानपुर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथाएँ उसको याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना यह थे उसके प्रिय खिलवाड़।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई है। यह कविता स्वतंत्रता सेनानियों में जोश भर देती थी।
- बच्चों को यह भी बताएँ कि भारत की स्वतंत्रता के लिए पुरुषों ने ही नहीं अपितु स्त्रियों ने भी अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं। लक्ष्मीबाई इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- बच्चों को उन स्त्रियों के बारे में बताएँ जिन्होंने देश की स्वतंत्रता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। कविता को पूरे जोश व लय के साथ पढ़वाएँ।

महाराष्ट्र-कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।
हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।
उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय, विधि को भी नहीं दया आई।
नि:संतान मरे राजा जी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।
बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।
इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व आसमानों में।
जख्मी होकर वॉकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अब की जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध-क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए नए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीरगति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी।
दिखा गई पथ सिखा गई,
हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

राजवंश	–	राजाओं के वंश, कुल	भृकुटी	–	भौंह
फिरंगी	–	विलायती, यूरोपियन	ठानी	–	दृढ़ निश्चय किया
मुँहबोली	–	मुँह से कहकर बनाई हुई	कृपाण	–	तलवार, कटार
आराध्य	–	पूज्य	विरुदावलि	–	विस्तृत यशोगान
उदित	–	उदय	मुदित	–	प्रसन्न, आनंदित
कालगति	–	समय की चाल	विधि	–	सृष्टि की रचना करने वाला
निःसंतान	–	संतानहीन	हरषाया	–	प्रसन्न हुआ
लावारिस	–	जिसका कोई वारिस न हो	बिरानी	–	विरान, सन्नाटा
द्वंद्व	–	युद्ध	सम्मुख	–	सामने
वीरगति	–	लड़ते हुए युद्ध-भूमि में मृत्यु की प्राप्ति	अवतारी	–	ईश्वरीय शक्ति से भरपूर
पथ	–	राह, रास्ता	सीख	–	शिक्षा

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं– युद्ध – युद्ध द्वंद्व – द्वंद्व

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

बरछी   मर्दानी   पुलकित   विरुदावलि   अश्रुपूर्ण

2. **सोचकर बताइए–**

(क) बूढ़े भारत में नई जवानी आने से क्या तात्पर्य है?

(ख) बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी को लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ क्यों कहा गया है?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) आज़ादी की लड़ाई की शुरुआत कब हुई? ....

(ख) लक्ष्मीबाई किसकी मुँहबोली बहन थी? ....

(ग) लक्ष्मीबाई की आराध्य देवी कौन थी? ....

(घ) लक्ष्मीबाई का विवाह किसके साथ हुआ? ....

(ङ) जब रानी ने वीरगति पाई तब उनकी आयु कितनी थी? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन–कौन से थे?

....

....

(ख) झाँसी के राजा की मृत्यु पर डलहौजी क्यों प्रसन्न हुआ?

....

....

(ग) वॉकर को किस बात की हैरानी हुई?

....

....

(घ) जब रानी अंग्रेज़ों से घिर गई तो उसने क्या किया?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) रानी लक्ष्मीबाई की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ख) झाँसी की रानी के युद्‌ध–कौशल का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ग) नीचे दी पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

(*i*) उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई। किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई।

....

....

....

....

(*ii*) बुझादीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया। राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया।

....

....

....

....

(*iii*) दिखा गई पथ सिखा गई, हमको जो सीख सिखानी थी।

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) आज़ादी की कीमत किसने पहचानी थी?

(*i*) अंग्रेज़ों ने ☐ (*ii*) भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने ☐

(*iii*) बुंदेलों ने ☐ (*iv*) विदेशियों ने ☐

(ख) लक्ष्मीबाई को किसकी गाथाएँ ज़बानी याद थीं?

(*i*) शिवजी की ☐ (*ii*) शिवाजी की ☐

(*iii*) नाना साहब की ☐ (*iv*) तात्या टोपे की ☐

(ग) रानी के घोड़े की मृत्यु कहाँ हुई?

(*i*) ग्वालियर में ☐ (*ii*) झाँसी में ☐ (*iii*) कालपी में ☐ (*iv*) कानपुर में ☐

(घ) झाँसी की रानी को कौन-से अंग्रेज़ सेनाध्यक्ष से युद्ध करना पड़ा?

(*i*) वॉकर से (*ii*) जनरल स्मिथ से (*iii*) ह्यूरोज़ से (*iv*) सभी से

(ङ) झाँसी की रानी की मृत्यु कैसे हुई?

(*i*) विश्वासघात के कारण (*ii*) अंग्रेज़ों से लड़ते हुए

(*iii*) वृद्धावस्था के कारण (*iv*) रुग्णावस्था के कारण

5. पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

(क) रानी अंग्रेज़ों से लड़ते हुई कहाँ पहुँच गई थी?

(*i*) कानपुर (*ii*) ग्वालियर (*iii*) झाँसी (*iv*) कालपी

(ख) कालपी में लड़ते समय रानी के साथ कौन-सी दुःखद घटना घटी?

(*i*) राजा स्वर्ग सिधार गए। (*ii*) रानी की सखियाँ वीरगति को प्राप्त हो गईं।

(*iii*) रानी के घोड़े की मृत्यु हो गई। (*iv*) रानी वीरगति को प्राप्त हुई।

(ग) रानी ने किस क्षेत्र पर कब्ज़ा किया था?

(*i*) झाँसी पर (*ii*) ग्वालियर पर (*iii*) कानपुर पर (*iv*) कालपी पर

(घ) अंग्रेज़ों के मित्र कौन थे?

(*i*) सिंधिया (*ii*) तात्या टोपे (*iii*) नाना साहब (*iv*) बाजीराव

(ङ) रानी लक्ष्मीबाई की वीरगाथा किसने गाई थी?

(*i*) राजवंशों ने (*ii*) बुंदेले हरबोलों ने (*iii*) नाना साहब ने (*iv*) मुगलों ने

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

राजवंश – ....

लक्ष्मीबाई – ....

सौभाग्य – ....

अश्रुपूर्ण – ....

स्वतंत्रता – ....

2. नीचे दिए शब्दों के उचित पर्यायवाची शब्दों पर (✓) लगाइए–

आज़ादी

स्वतंत्र	☐	मुक्त	☐	स्वतंत्रता	☐	परतंत्रता	☐

संतान

पुत्र	☐	बेटी	☐	तनया	☐	औलाद	☐

सहेली

सहोदर	☐	चित्रा	☐	बहन	☐	सखी	☐

महल

प्रसाद	☐	प्रासाद	☐	अटारी	☐	राज्य	☐

3. नीचे दिए अनेकार्थी शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए–

घटा – बादलों का समूह ....

घटा – कम होना ....

तीर – ....

तीर – ....

नव – ....

नव – ....

विधि – ....

विधि – ....

4. नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिंग बताइए–

(क) <u>राजमहल</u> में खुशियाँ मनाई गईं। ....

(ख) कालगति चुपके-चुपके काली <u>घटा</u> घेर लाई। ....

(ग) जब राजा मरे तो उनकी कोई <u>संतान</u> नहीं थी। ....

(घ) रानी को अंग्रेज़ों की <u>सेना</u> ने घेर लिया। ....

5. नीचे दिए शब्दों के लिए उचित विशेषण शब्द लिखिए–

.... भारत .... जवानी .... झंडा

.... तलवार .... राजा .... झाँसी

.... सवारी .... अधिकारी .... सिंहनी

कविता से आगे

- अंग्रेज़ों ने झाँसी को अपने अधिकार में क्यों ले लिया था? कारण ज्ञात कीजिए।
- लक्ष्मीबाई अन्य स्त्रियों से किस प्रकार भिन्न थी? क्या किसी अन्य रानी ने भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध हथियार उठाए थे?

नन्हे हाथों से

- चित्र को देखकर कोई कविता या अनुच्छेद लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वतंत्रता सेनानियों में उत्साह भरने के लिए अनेक कविताएँ लिखी हैं। उनकी कविताओं का संग्रह कीजिए और कक्षा में सुनाइए।
- लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, पेशवा बाजीराव, मंगल पांडे, वीर कुँवर सिंह आदि स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का संग्रह करके उनके विषय में संक्षेप में लिखिए।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके समक्ष कोई स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में अभद्र बातें कहे तो आप क्या करेंगे?
- यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति आपके विद्यालय, घर या देश के विषय में आपसे कोई आंतरिक जानकारी प्राप्त करना चाहे तो आप क्या करेंगे?

क्या आप जानते हैं?

(क) हवामहल का निर्माण किसने करवाया था?

(i) सवाई जयसिंह (ii) प्रताप सिंह
(iii) मानसिंह (iv) सवाई माधोपुर

(ख) ऊष्मा का SI मात्रक क्या है?

(i) सेल्सियम (ii) फॉरेनहाइट
(iii) जूल (iv) वाट

(ग) आकाश का रंग नीला क्यों दिखाई देता है?

(i) प्रकाश के व्यतिकरण से (ii) प्रकाश के प्रकीर्णन से
(iii) प्रकाश के अपवर्तनांक से (iv) प्रकाश के अपवर्धन से

(घ) वाहनों की हैडलाइट में किस दर्पण का उपयोग किया जाता है?

(i) उत्तल लैंस (ii) समतलावतल लैंस
(iii) अवतल लैंस (iv) अभयोत्तल लैंस

(ङ) आकाश में तारे टिमटिमाते क्यों दिखते हैं?

(i) प्रकाश के अपवर्तन के कारण
(ii) प्रकाश के प्रकीर्णन के कारण
(iii) प्रकाश के परावर्तन के कारण
(iv) प्रकाश के आवर्तन के कारण

(च) सूर्य से प्राप्त रंगों में किस रंग का विक्षेपण सर्वाधिक होता है?

(i) लाल (ii) नारंगी
(iii) हरा (iv) बैंगनी

(छ) कौन-सा ग्रह सूर्य के सबसे निकट है?

(i) बुध (ii) शुक्र
(iii) बृहस्पति (iv) पृथ्वी

(ज) किस ग्रह को सुबह और शाम का तारा कहा जाता है?

(i) बुध (ii) शुक्र
(iii) मंगल (iv) बृहस्पति

(झ) हमारे भोजन में कौन-से तत्व ऊर्जा के मुख्य स्रोत होते हैं?

(i) प्रोटीन (ii) विटामिन
(iii) खनिज (iv) कार्बोहाइड्रेट

(ञ) इनमें से कौन-सा यंत्र दूध में पानी की मात्रा मापने के लिए उपयोग में लाया जाता है?

(*i*) हाइड्रोजन (*ii*) लैक्टोमीटर

(*iii*) टैकोमीटर (*iv*) बैरोमीटर

(ट) 'कॉकरोच' (तिलचट्टे) के खून का रंग कैसा होता है?

(*i*) लाल (*ii*) नीला

(*iii*) सफेद (*iv*) काला

(ठ) पौधे किस कारण से हरे दिखाई देते हैं?

(*i*) हरा रंग अवशोषित करने के कारण

(*ii*) पीला रंग अवशोषित करने के कारण

(*iii*) लाल रंग अवशोषित करने के कारण

(*iv*) बैंगनी रंग अवशोषित करने के कारण

(ड) कोई भी वस्तु ऊपर की ओर फेंकने के बाद वापस नीचे की ओर क्यों गिरती है?

(*i*) पृथ्वी के घर्षण के कारण

(*ii*) पृथ्वी के चुंबकीय बल के कारण

(*iii*) पृथ्वी के गुरुत्व बल के कारण

(*iv*) पृथ्वी के उत्प्लावन बल के कारण

(ढ) सूर्य में कौन-सा परमाणु ईंधन होता है?

(*i*) हाइड्रोजन (*ii*) नाइट्रोजन

(*iii*) कार्बन (*iv*) नियोन

(ण) सूर्य की सतह का तापमान लगभग कितना होता है?

(*i*) 1500 k (*ii*) 5800 k

(*iii*) 2500 k (*iv*) 3800 k

(त) 'स्वतंत्रता के लिए लंबी यात्रा' पुस्तक में किसकी आत्मकथा है?

(*i*) जोसेफ लेलिवेल्ड (*ii*) महात्मा गांधी

(*iii*) नेल्सन मंडेला (*iv*) जवाहरलाल नेहरू

(थ) राज्यसभा का अध्यक्ष कौन होता है?

(*i*) प्रधानमंत्री (*ii*) राष्ट्रपति

(*iii*) राज्यपाल (*iv*) उपराष्ट्रपति

(द) अमेरिका की खोज किसने की थी?

(*i*) फाह्यान (*ii*) कोलंबस

(*iii*) वास्कोडिगामा (*iv*) समुद्रगुप्त

13 सुनेली का कुआँ

गुजरात और राजस्थान की सीमा पर एक छोटा-सा गाँव था। उस गाँव का नाम था– नरसी की ढाणी। इस छोटे-से गाँव में एक बड़ी ही विकट समस्या थी। वह थी– मूलभूत आवश्यकताओं की कमी। अन्य आवश्यकताओं को छोड़ भी दें तो पानी जैसे अत्यंत आवश्यक तत्व को छोड़ना संभव नहीं। गाँव के लोगों को इस भीषण समस्या से प्रतिदिन लड़ना पड़ता था। पानी लाने के लिए उन्हें मीलों पैदल जाना पड़ता था।

इसी गाँव में एक स्त्री रहती थी जिसका नाम सुनेली था। वह भी प्रतिदिन बहुत दूर से पानी लेकर आती थी। बंजारों का एक कुआँ था जहाँ से वह पानी लाती, उस कुएँ के समीप ढाणी का एक परिवार आकर बस गया था। उनका रहन-सहन देखकर सुनेली का मन उचट गया था। वह उस कुएँ से पानी नहीं भरना चाहती थी पर मजबूर थी, करती भी तो क्या करती? किसी और कुएँ से पानी लाने के लिए उसे कई मील और चलना पड़ता। फिर बरसों से वह और ढाणी के अन्य परिवार इसी कुएँ से पानी भरते आए थे। वे इस कुएँ को छोड़कर कहीं और क्यों जाते?

एक दिन की बात है, सुनेली कुएँ से पानी भरकर ढाणी की ओर लौट रही थी। चलते-चलते उसकी दृष्टि खेजड़े की जड़ पर पड़ी। खेजड़े की जड़ में उसे गीली मिट्टी दिखाई दी। ऊँदरों ने बिल बनाया होगा, ऐसा सोचकर वह आगे बढ़ गई। कुछ दूर चलकर अचानक उसके मन में विचार आया कि मिट्टी गीली है तो शायद इस जगह पानी भी होगा। यह सोचकर वह प्रसन्नता से फूली न समाई।

घर पहुँचकर उसने यह बात अपने पति व बेटों को बताई और अपने बेटों से कहा, "चलो, फावड़ा लेकर मेरे साथ, हम लोग वहाँ कुआँ खोदेंगे।" सुनेली की बात सुनकर दोनों बेटे हँसने लगे। सुनेली का पति बूढ़ा ठाकुर भी हँसने लगा और बोला, पागल हुई हो क्या? ऊँदरे तो हमेशा बिल बनाते ही हैं, यह कोई नया कार्य तो है नहीं, वहाँ पानी कहाँ से आया?"

पर सुनेली अपनी बात पर दृढ़ थी। उसने किसी की एक न सुनी। उसे तो कुआँ खोदने का जैसे भूत सवार हो गया था। उसने फावड़ा उठाया और खेजड़े की ओर चल दी। काफी समय बीत जाने के बाद भी जब सुनेली वापस नहीं लौटी तो ठाकुर ने छोटे बेटे को सुनेली का पता लगाने के लिए भेजा। उधर सुनेली पर तो कुआँ खोदने की धुन सवार थी। उसे समय का भान ही नहीं रहा।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि यह पाठ एक राजस्थानी लोककथा पर आधारित है।
- बच्चों को कर्म का महत्त्व समझाएँ और बताएँ कि कर्मठ व्यक्ति यदि किसी कार्य को करने की ठान ले तो उसे पूरा करके ही दम लेता है।
- बच्चों को बताएँ कि बुद्धि, विवेक और मेहनत से किए गए कार्य में असफलता के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

जब लड़का माँ की बताई जगह पर पहुँचा तो आश्चर्यचकित रह गया। खेजड़े के नीचे ताज़ी मिट्टी का ढेर लगा था और सुनेली तन-मन से कुआँ खोदने में तल्लीन थी। वहाँ पहुँचते ही उसने माँ के हाथ से फावड़ा लिया और मिट्टी खोदने लगा। ऊपर तो रेत-ही-रेत थी पर नीचे से नरम मिट्टी निकल रही थी। बेटे को फावड़ा चलाते देख सुनेली दुगने उत्साह से भर गई। वह बोली, "बेटा! मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ पानी निकलेगा। अगर गाँव के सब लोग इस कार्य में सहायता करें तो यह कार्य शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगा। कोई सहायता करे या न करे मैं तो खोदूँगी, फिर चाहे महीनों लग जाएँ। मैं तो अपने इस कुएँ का पानी पीकर ही मरूँगी। तुम खुदाई करो, तब तक मैं तुम्हारे लिए रोटी लेकर आती हूँ।" यह कहकर सुनेली घर की ओर चल दी।

जब सुनेली रोटी लेकर आई तो देखा कि जवान हाथों के ज़ोर ने उसके काम को दोगुना आगे बढ़ा दिया है। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बेटा खेजड़े के तने की छाया में बैठकर रोटी खाने लगा। सुनेली फावड़ा उठाकर फिर खुदाई में जुट गई। शाम तक खुदाई करके जब दोनों माँ-बेटे घर लौटे तो उनके चेहरे पर खुशी साफ़ झलक रही थी। ढाणी के लोगों ने जब कुआँ खोदने की बात सुनी तो उनका खूब मज़ाक उड़ाया। लोगों की तरह-तरह की बातें सुनकर भी वे दोनों चुप रहे।

सुनेली सुबह उठते ही फिर अपने काम में जा लगी। सुबह जब छोटा लड़का उठा तो माँ को घर पर न पाकर उसने बड़े भाई को जगाकर कहा, "दादा! माँ शायद ठीक ही कहती है, खेजड़े की जड़ में पानी है, तभी तो यह हमेशा हरा-भरा रहता है। दादा! चलो, माँ का हाथ बँटाए।" बड़े लड़के ने कुछ सोचा फिर उठकर छोटे भाई के साथ चल दिया।

खेजड़े के पास पहुँचकर दोनों गड्ढे में उतर गए। माँ ने जब दोनों बेटों को कार्य में हाथ बँटाते देखा तो गर्व से फूली न समाई। बूढ़ा ठाकुर भी वहाँ आ पहुँचा। अपने परिवार को पूरी लगन से जुटा देख वह भी उनके साथ जुट गया। यह देखकर सुनेली के हाथों में हाथी के समान बल आ गया। वह खुशी से बोली, "अरे! जिसके दो-दो जवान बेटे और पति ऐसा पौरुष दिखाएँ, तो फिर चिंता किस बात की? कोई भी कार्य क्यों न पूरा होगा?"

पूरा परिवार दोपहर तक कुआँ खोदता रहा। परंतु भगवान की लीला भी विचित्र है, वह मेहनती लोगों की परीक्षा लेना कभी नहीं भूलता। शाम को तेज़ की आँधी चली जिससे गड्ढा रेत से भर गया। लड़के उदास हो गए। ढाणी वाले मज़ाक उड़ाने लगे, लेकिन सुनेली तो जैसे वज्र की बन गई थी। उस पर किसी की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बोली,

"परमात्मा ने खोपड़ी में बुद्धि दी है और हाथों में शक्ति। फिर भला कोई भी कार्य असंभव कैसे रहेगा? हमें दिन में आराम करना चाहिए और रात को चाँद की चाँदनी में कुआँ खोदना चाहिए। इससे दिन की गरमी से भी बचेंगे और चाँदनी की शीतलता में कार्य भी अधिक होगा। तुम लोग कुआँ खोदो, मिट्टी को मैं कहीं दूर फेंककर आती हूँ।"

माँ की दी सलाह पर बेटों ने कार्य करना शुरू कर दिया। कार्य बड़ी शीघ्रता से पूर्णता की ओर बढ़ने लगा। कार्य की सफलता का सामीप्य पाकर गाँव के लोग भी इस कार्य में हाथ बँटाने लगे। गड्ढा गहरा हो जाने के बाद उस पर गरारी लगा दी गई। नीचे से खोदी गई मिट्टी तुरंत ऊपर खींच ली जाती और बच्चे उसे उठाकर दूर फेंक आते। आठ-दस दिन में ही कुएँ से गीली मिट्टी निकल आई। लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। सारे गाँव में बताशे बाँटे गए। सुनेली बंजारों के कुएँ पर बसे परिवार को भी प्रसाद भिजवाना नहीं भूली। उन्हें जब यह समाचार मिला तो वे लोग भी बहुत खुश हुए।

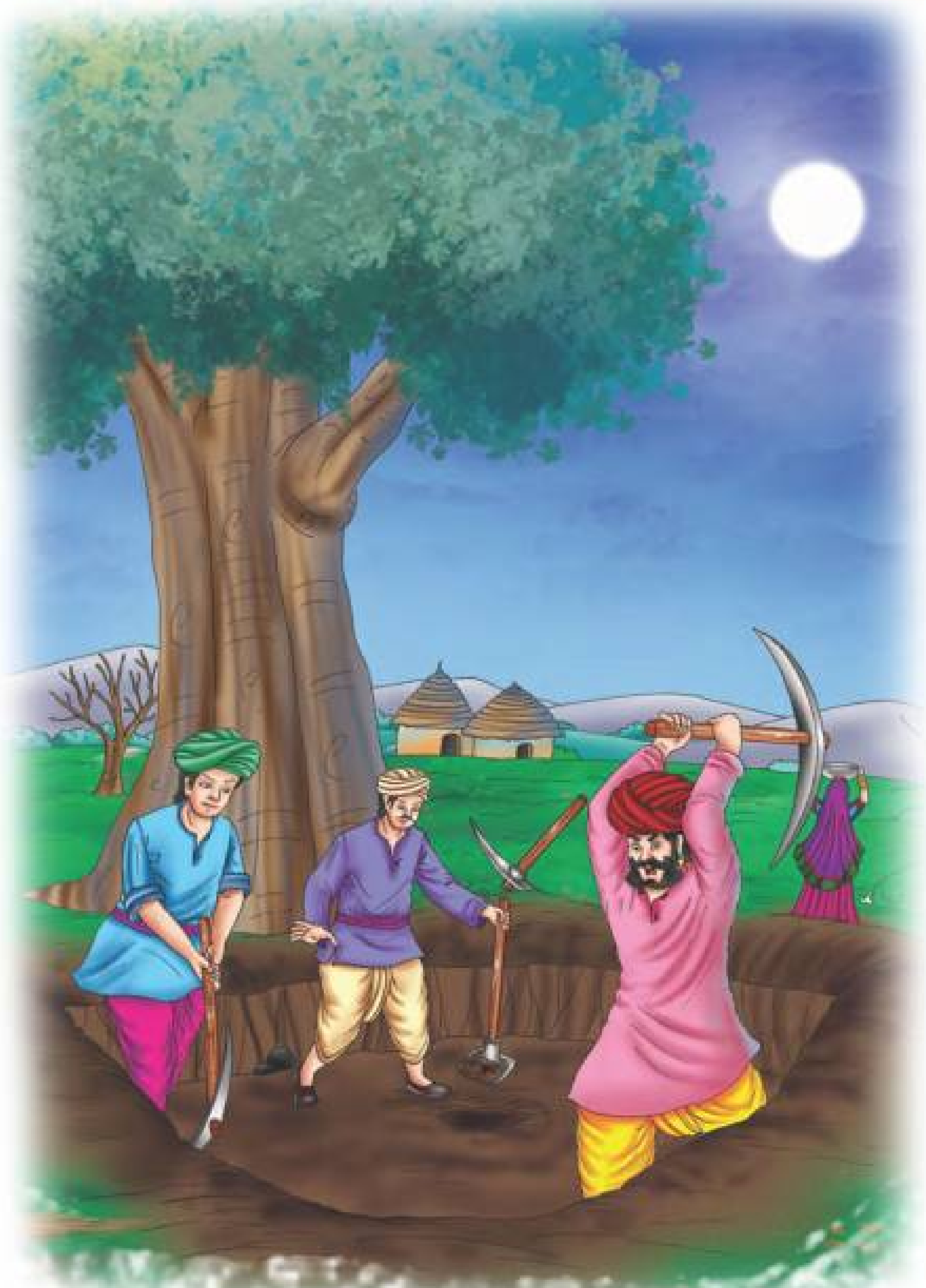

कुएँ से मीठा पानी निकला। पहले एक स्रोत फूटा, फिर दूसरा, फिर तीसरा और देखते-ही-देखते कुएँ में दस फीट तक पानी चढ़ आया। सुनेली तो मानो खुशी से पागल हो उठी। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह पानी में कूद-कूदकर मछली की तरह तैरे। पर उसने मन के भावों पर काबू पाया और देखा कि चारों ओर उसके नाम की जय-जयकार हो रही है। सुनेली की आँखें खुशी से भर आईं। वह बोली, "यह तो आप सब ने मिलकर किया है। सबकी मेहनत और एकता का ही परिणाम है जो इतनी शीघ्रता से हम इस कार्य में सफल हो पाए, अकेले तो यह कार्य असंभव था।"

बूढ़ा ठाकुर बोला, "बींदणी सा! यह आपकी ही सोच और हिम्मत है। नहीं तो ऊँदरे कहाँ बिल नहीं बनाते और खेजड़े कहाँ नहीं उगते? साठ बरस तो इस ढाणी में मैंने भी काट दिए। अब तक किसी के मस्तिष्क में यह विचार क्यों नहीं आया कि यहाँ पानी भी निकल सकता है।"

बाद में वह कुआँ पक्का बनवा दिया गया। कहा जाता है कि उस कुएँ का पानी कभी समाप्त नहीं होता और उस कुएँ में अथाह पानी है। लोग उसे 'सुनेली का कुआँ' कहते हैं जो आज भी ढाणी की प्यास बुझाने में लगा है।

–राजस्थानी लोककथा

शब्दार्थ

ढाणी	– छोटा गाँव	विकट	– भयंकर
अत्यंत	– बहुत अधिक	बंजारे	– घुमंतु जाति, व्यापार करने वाला
मजबूर	– बेबस, विवश	खेजड़ा	– कंटीला वृक्ष
ऊँदरे	– चूहे, ऊदबिलाव	तल्लीन	– मग्न
फूला न समाना	– बहुत खुश होना, खुशी का ठिकाना न रहना।	पौरुष	– पुरुषार्थ, ताकत
वज्र	– बहुत कठोर, जिस पर किसी का प्रभाव न पड़े		

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं– मिट्टी – मिट्टी गड्ढा – गड्ढा

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

भीषण पौरुष सामीप्य प्यास

2. सोचकर बताइए–

(क) सुनेली बंजारों के कुएँ से पानी क्यों नहीं भरना चाहती थी?

(ख) सुनेली की बात सुनकर उसका पति और बेटे क्यों हँसने लगे?

(ग) गाँववालों ने सुनेली की सहायता क्यों की?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) सुनेली पानी कहाँ से भरकर लाती थी? ....

(ख) खेजड़े की जड़ में किसने बिल बनाया था? ....

(ग) बूढ़ा ठाकुर कौन था? ....

(घ) ठाकुर ने सुनेली का पता लगाने के लिए किसे भेजा? ....

(ङ) कुएँ की खुदाई में सुनेली के परिवार को किसका सहयोग मिला? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) नरसी की ढाणी की विकट समस्या क्या थी?

....

....

(ख) खेजड़े की जड़ में गीली मिट्टी देखकर सुनेली ने क्या सोचा?

....

....

(ग) सुनेली ने दिन की बजाय रात को कुआँ खोदने का निर्णय क्यों लिया?

....

....

(घ) गाँववाले सुनेली की जय-जयकार क्यों कर रहे थे?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) कुआँ खोदते समय सुनेली को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

....

....

....

....

(ख) नीचे दी पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए–

(*i*) मिट्टी गीली है तो शायद इस जगह पानी भी होगा।

....

....

....

....

(*ii*) कोई सहायता करे या न करे मैं तो खोदूँगी, फिर चाहे महीनों लग जाएँ।

....

....

....

(*iii*) यह तो आप सब ने मिलकर किया है। सबकी मेहनत और एकता का ही परिणाम है जो इतनी शीघ्रता से हम इस कार्य में सफल हो पाए।

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) नरसी की ढाणी में किसकी कमी थी?

(*i*) खाने-पीने की ☐ (*ii*) कपड़ों की ☐

(*iii*) मूलभूत आवश्यकताओं की ☐ (*iv*) मनोरंजन की ☐

(ख) सुनेली ने क्या देखकर सोचा कि यहाँ पानी अवश्य होगा?

(*i*) खेजड़े का पेड़ ☐ (*ii*) ऊँदरों का बिल ☐

(*iii*) खेजड़े की जड़ में गीली मिट्टी ☐ (*iv*) खेजड़े की जड़ से फूटा पानी का स्रोत ☐

(ग) सुनेली की क्या मजबूरी थी?

(*i*) कुआँ खोदने की ☐

(*ii*) न चाहते हुए भी बंजारों के कुएँ से पानी लाने की ☐

(*iii*) गाँववालों को अपनी खुशी में सम्मिलित करने की ☐

(*iv*) बूढ़े ठाकुर से कार्य करवाने की ☐

(घ) गहरे गड्ढे पर गरारी क्यों लगाई गई?

(*i*) गड्ढे की मिट्टी को बाहर निकालने के लिए ☐

(*ii*) कुएँ के पानी को बाहर निकालने के लिए ☐

(*iii*) गड्ढे में नीचे उतरने के लिए ☐

(*iv*) गड्ढे में मिट्टी भरने के लिए ☐

5. नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर उत्तर दीजिए–

पूरा परिवार दोपहर तक कुआँ खोदता रहा। परंतु भगवान की लीला भी विचित्र है, वह मेहनती लोगों की परीक्षा लेना कभी नहीं भूलता। शाम को तेज़ की आँधी चली जिससे गड्ढा रेत से भर गया। लड़के उदास हो गए। ढाणी वाले मज़ाक उड़ाने लगे, लेकिन सुनेली तो जैसे वज्र की बन गई थी। उस पर किसी की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बोली, "परमात्मा ने खोपड़ी में बुद्धि दी है और हाथों में शक्ति। फिर भला कोई भी कार्य असंभव कैसे रहेगा? हमें दिन में आराम करना चाहिए और रात को चाँद की चाँदनी में कुआँ खोदना चाहिए। इससे दिन की गरमी से भी बचेंगे और चाँदनी की शीतलता में कार्य भी अधिक होगा। तुम लोग कुआँ खोदो, मिट्टी को मैं कहीं दूर फेंककर आती हूँ।"

(क) भगवान की लीला को विचित्र क्यों कहा गया है?

(*i*) लोगों को बुद्धि देने के लिए ☐ (*ii*) मेहनती लोगों की परीक्षा लेने के लिए ☐

(*iii*) कार्यों में कठिनाइयाँ पैदा करने के लिए ☐ (*iv*) रात में चाँदनी फैलाने के लिए ☐

(ख) शाम को तेज़ आँधी चलने पर क्या हुआ?

(*i*) गड्ढे की मिट्टी उड़कर दूर चली गई। ☐ (*ii*) गड्ढे की मिट्टी गीली हो गई। ☐

(*iii*) गड्ढा रेत से भर गया। ☐ (*iv*) गड्ढे में पानी भर गया। ☐

(ग) सुनेली ने क्या सलाह दी?

(*i*) रातभर गड्ढे की रखवाली करनी चाहिए। ☐

(*ii*) गड्ढे को दिनभर गीला रखना चाहिए। ☐

(*iii*) गड्ढे की मिट्टी दूसरे गड्ढे में भरनी चाहिए। ☐

(*iv*) दिनभर आराम करके रात को गड्ढा खोदना चाहिए। ☐

(घ) रात को गड्ढा खोदने से क्या लाभ था?

(*i*) दिन की गरमी से बचा जा सकता था। ☐

(*ii*) रात की चाँदनी में अधिक साफ़ दिखाई देता था। ☐

(*iii*) गड्ढे की मिट्टी दिन में कठोर हो जाती थी। ☐

(*iv*) रात में मिट्टी उड़कर दूर चली जाती थी। ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए अनेकार्थी शब्दों के अलग-अलग अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए—

मन – ....

मन – ....

पानी – ....

पानी – ....

खुदाई – ....

खुदाई – ....

2. नीचे दिए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

लोग – .... पानी – ....

कुआँ – .... परिवार – ....

मिट्टी – .... बुद्धि – ....

3. नीचे दिए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए–

अति – ....

इति – ....

उदार – ....

उदर – ....

जरा – ....

ज़रा – ....

दिन – ....

दीन – ....

समान – ....

सम्मान – ....

4. नीचे दिए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) मन उचट जाना– ....

....

(ख) फूला न समाना– ....

....

(ग) किसी की एक न सुनना– ....

....

(घ) भूत सवार होना– ....

....

(ङ) मजाक उड़ाना– ....

....

लोककथा से आगे

- यदि सुनेली का ध्यान गीली मिट्टी पर न जाता तो क्या होता?
- यदि कुआँ खोदने में गाँववालों ने सहायता न की होती तो क्या होता?

नन्हे हाथों से

- हमारे देश में पेयजल की समस्या काफी विकट है। इस समस्या के कारण एवं निवारण पर प्रकाश डालते हुए अपनी उत्तर पुस्तिका में एक लेख लिखिए।
- चित्र देखकर एक अनुच्छेद लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- 'नरसी' भगवान कृष्ण का भक्त था। उसके विषय में प्रसिद्ध कथा की जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाइए।
- पेयजल की समस्या से निपटने के लिए अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से एक विचार-गोष्ठी कीजिए।

14 भगत सिंह के पत्र

क्रांतिकारी भगत सिंह को फाँसी की सज़ा सुनाई गई। सज़ा सुनकर उन्होंने अपने मित्र बटुकेश्वर दत्त और अन्य क़ैदी साथियों को पत्र लिखे।

नवंबर, 1930

प्रिय भाई

बटुकेश्वर दत्त

मुझे सज़ा दी गई है और फाँसी का हुक्म हुआ है। मुझे जहाँ क़ैद करके रखा गया है, उन कोठरियों में मेरे अलावा फाँसी का इंतज़ार करने वाले बहुत-से मुजरिम हैं। ये लोग यही प्रार्थनाएँ कर रहे हैं कि किसी तरह से फाँसी से बच जाएँ लेकिन उनमें से शायद मैं अकेला ऐसा आदमी हूँ जो फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के लिए बड़ी बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ। मैं खुशी से फाँसी के तख्ते पर चढ़कर दुनिया को दिखा दूँगा कि क्रांतिकारी अपने आदर्शों के लिए किस वीरता से कुरबानी दे सकते हैं।

मुझे फाँसी की सज़ा मिली है और तुम्हें उम्रक़ैद। तुम ज़िंदा रहोगे और ज़िंदा रहकर तुम्हें दुनिया को यह दिखा देना है कि क्रांतिकारी अपने आदर्शों के लिए सिर्फ़ मर ही नहीं सकते बल्कि ज़िंदा रहकर हर तरह की यातनाओं को सहन भी कर सकते हैं। मौत सांसारिक मुसीबतों से छुटकारा पाने का साधन नहीं बननी चाहिए बल्कि जो क्रांतिकारी संयोगवश फाँसी के फँदे से बच गए हैं, उन्हें ज़िंदा रहकर दुनिया को यह दिखा देना चाहिए कि वे न सिर्फ़ अपने आदर्शों के लिए फाँसी पर चढ़ सकते हैं बल्कि जेल की अँधेरी कोठरियों में घुट-घुटकर हर दर्जे के अत्याचारों को सहन भी कर सकते हैं।

तुम्हारा

भगत सिंह

शिक्षण संकेत

- बच्चों के मन में शहीदों के प्रति श्रद्धा की भावना जगाते हुए पत्रों को पढ़वाएँ।
- बच्चों को बताएँ कि जिस स्वतंत्रता की हवा में हम साँस ले रहे हैं, वह हमें बहुत बड़ा मूल्य चुकाने के बाद मिली है। अतः स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हमें देश के प्रति किसी भी त्याग के लिए तैयार रहना चाहिए।

9 मार्च, 1931

साथियो!

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता लेकिन मैं एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं क़ैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

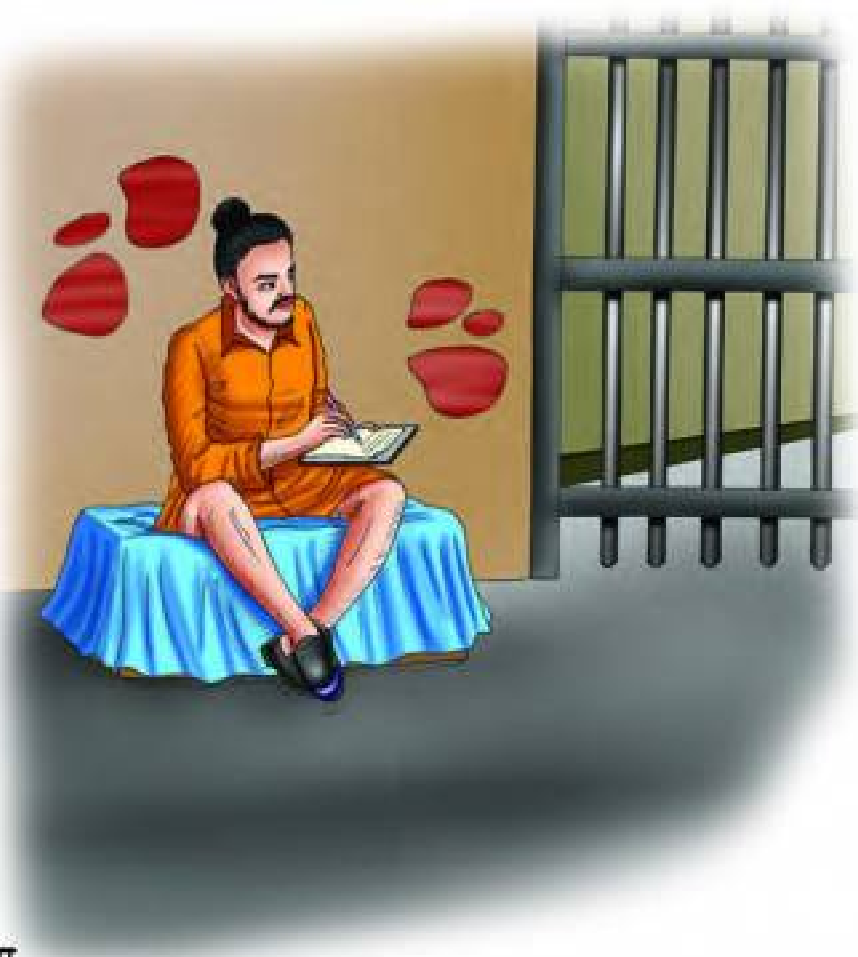

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुरबानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है। इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमज़ोरियाँ लोगों के सामने नहीं हैं। अगर फाँसी से बच गया तो वे ज़ाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जाएगा या संभवतः मिट जाएगा, लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी पर चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनाने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुरबानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक अन्य विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र, ज़िंदा रह सकता तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवा मेरे मन में कभी फाँसी से बचने का कोई लालच नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व हो रहा है, अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतज़ार है। कामना है कि यह अवसर शीघ्रता से आए!

आपका साथी

भगत सिंह

शब्दार्थ

हुक्म	–	आदेश	मुजरिम	–	अपराधी
बेसब्री	–	अधीरता	कुरबानी	–	बलिदान
यातना	–	कष्ट	अत्याचार	–	जुल्म
पाबंद	–	नियमों को मानने के लिए मजबूर	मद्धिम	–	धीमी
दिलेराना	–	साहसपूर्ण	आरज़ू	–	इच्छा, कामना
गर्व	–	घमंड	बेताबी	–	व्याकुलता

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

क्रांतिकारी शक्तियाँ सौभाग्यशाली सांसारिक अत्याचारों

2. **सोचकर बताइए–**

(क) भगत सिंह दुनिया को क्या दिखाना चाहते थे?

(ख) भगत सिंह की कौन-सी हसरत पूरी नहीं हो सकी?

(ग) भगत सिंह की कमज़ोरियाँ कब जग-ज़ाहिर हो सकती थीं?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) भगत सिंह को क्या सज़ा सुनाई गई थी? ....

(ख) बटुकेश्वर दत्त को क्या सज़ा दी गई थी? ....

(ग) किसका नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन गया था? ....

(घ) भगत सिंह ने स्वयं को क्या माना है? ....

2. **नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–**

(क) भगत सिंह फाँसी पर चढ़ने का बेसब्री से इंतज़ार क्यों कर रहे थे?

....

....

(ख) भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त की सज़ा में क्या अंतर था?

....

....

(ग) भगत सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की कौन-सी दो विशेषताओं का उल्लेख किया है?

....

....

(घ) भगत सिंह को स्वयं पर क्यों गर्व हो रहा था?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त को क्या सलाह दी?

....

....

....

....

(ख) भगत सिंह ने बचने की अपेक्षा फाँसी पर लटकने को अधिक महत्त्व क्यों दिया?

....

....

....

....

(ग) क्रांति को रोकना कब संभव नहीं हो पाएगा?

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) फाँसी की सज़ा किसे सुनाई गई थी?

(*i*) बटुकेश्वर दत्त को ☐ (*ii*) भगत सिंह को ☐

(*iii*) चंद्रशेखर आज़ाद को ☐ (*iv*) सुभाषचंद्र बोस को ☐

(ख) किसे सांसारिक मुसीबतों से छुटकारा पाने का साधन नहीं बनना चाहिए?

(*i*) मौत को ☐ (*ii*) ज़िंदगी को ☐ (*iii*) फाँसी को ☐ (*iv*) क्रांति को ☐

(ग) भगत सिंह को किसका लालच नहीं था?

(*i*) क्रांति का ☐ (*ii*) आज़ादी से मरने का ☐ (*iii*) फाँसी पर चढ़ने का ☐

(*iv*) फाँसी से बचने का ☐

भाषा ज्ञान

1. **नीचे दिए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों पर ◯ लगाइए और उनके भेद भी लिखिए–**

(क) कोठरियों में मेरे अलावा फाँसी का इंतज़ार करने वाले बहुत-से मुजरिम हैं। ....

(ख) ये लोग प्रार्थनाएँ कर रहे हैं कि किसी तरह फाँसी से बच जाएँ। ....

(ग) तुम ज़िंदा रहोगे। ....

(घ) क्रांतिकारी अपने आदर्शों के लिए कोई भी कुरबानी दे सकते हैं। ....

(ङ) कामना है कि यह अवसर शीघ्रता से आए! ....

2. **नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

वीरता –	....	ज़िंदा –	....
मद्धिम –	....	सौभाग्यशाली –	....
आज़ादी –	....	शीघ्रता –	....

3. **नीचे दिए गद्यांश में समुच्चयबोधक शब्दों पर ◯ लगाइए–**

हाँ, एक अन्य विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र, ज़िंदा रह सकता तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर लेता।

4. **नीचे दिए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–**

क्रांति –	....	कुरबानी –	....
शक्ति –	....	मुसीबत –	....
यातना –	....	माता –	....
विचार –	....	चिह्न –	....

पत्र से आगे

- यदि क्रांतिकारी देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपने प्राणों की आहुति नहीं देते तो क्या आज हम स्वतंत्र देश में साँस ले रहे होते?
- अंग्रेज़ों ने भारतीयों की फूट का बहुत लाभ उठाया है। उन्होंने देश को स्वतंत्र करते समय हिंदू और मुसलमानों के बीच नफ़रत की दीवार खड़ी कर दी जिसके कारण देश को दो भागों में बाँटना पड़ा। सोचिए, यदि स्वतंत्रता के समय हिंदुस्तानियों में फूट नहीं पड़ी होती तो आज हमें कौन-सा परिवर्तन देखने को मिलता?

नन्हे हाथों से

- अपने किसी 'पेन फ्रैंड' को भारत की सभ्यता और संस्कृति के बारे में बताते हुए अपनी उत्तर पुस्तिका में एक पत्र लिखिए।
- चित्र देखकर क्रांतिकारी को पहचानिए और उनके बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- पुस्तकालय जाकर क्रांतिकारियों के पत्र पढ़िए।
- भारत को स्वतंत्र कराने में जिन देशभक्तों का योगदान रहा है, उनके चित्रों का संग्रह कीजिए।
- भगत सिंह के जीवन से जुड़ी घटनाओं पर नाटक तैयार कर उसका मंचन कीजिए।

आप क्या करेंगे

- यदि टी.वी पर प्रसारित किसी कार्यक्रम में देश के शहीदों के विषय में कोई आपत्तिजनक बात दिखाई जा रही हो तो उसे देखकर आप क्या करेंगे?

15 राम वन गमन

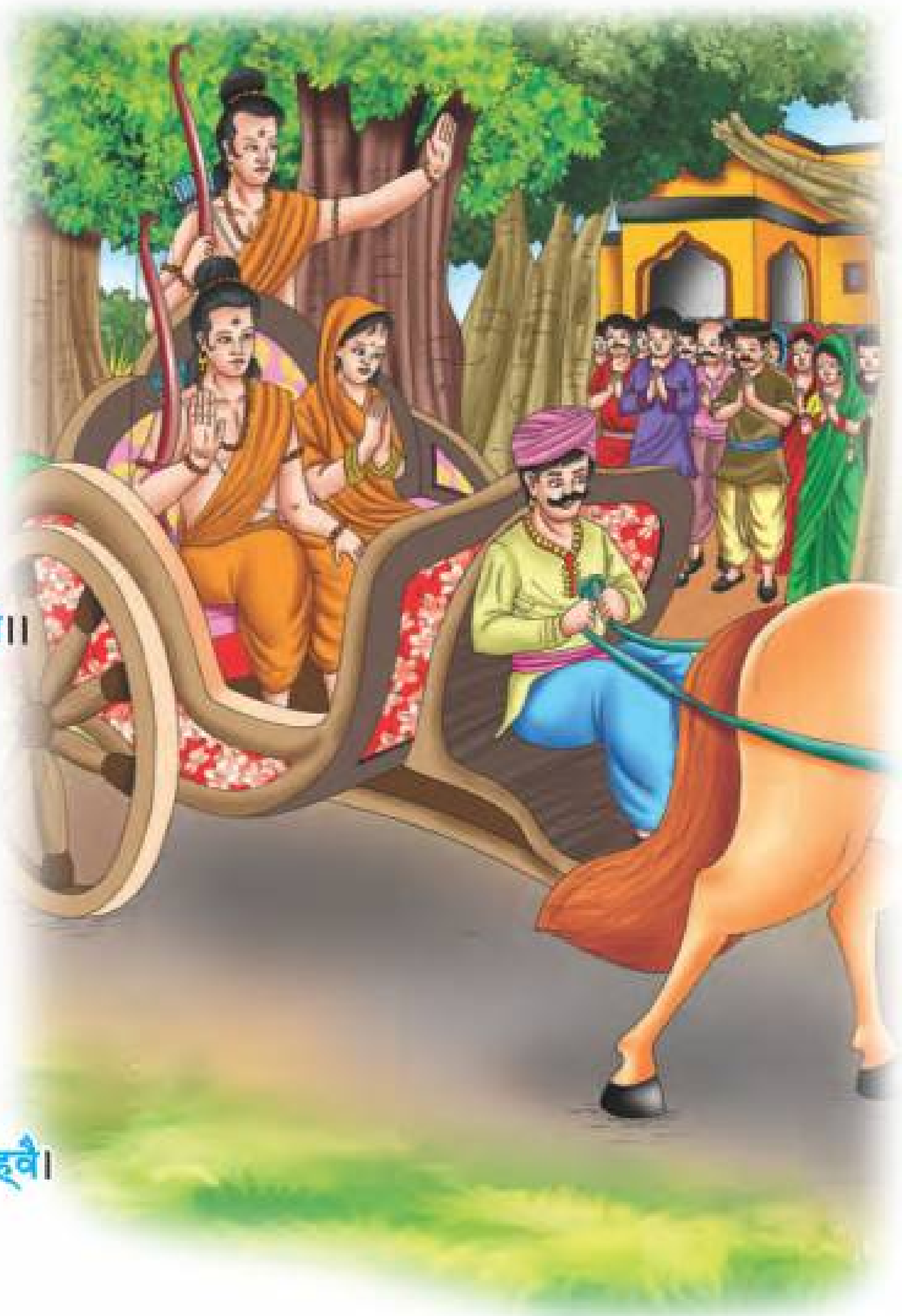

कीर के कागर ज्यौं नृपचीर, विभूषन उप्पम अंगनि पाई।
औध तजी मगबास के रूख ज्यौं, पंथ के साथी लोग-लुगाई।।
संग सुबंधु, पुनीत प्रिया, मानो धर्म क्रिया धरि देह सुहाई।
राजिवलोचन रामु चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं।।

पुर तें निकसी रघुबीर बधू; धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर द्वै।।
फिरि बूझति हैं—चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै?
तिय की लखि आतुरता प्रिय की अँखियाँ अति चारु चली जल च्वै।।

जल को गए लक्खन हैं लारिका, पारिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पौंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।
तुलसी रघुबीर प्रिया सम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।

बनिता बनी स्यामल गौर के बीच, बिलोकहु, री सखि! मोहि-सी ह्वै।
मगजोगु न कोमल, क्यों चलि है, सकुचाति मही पदपंकज छ्वै।।
तुलसी सुनि ग्रामबधू बिथकीं, पुलकीं तन, औ चले लौचन च्वै।
सब भाँति मनोहर मोहन रूप, अनुप हैं भूप के बालक द्वै।।

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि प्रस्तुत काव्य-रचना के पद तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से लिए गए हैं। इसमें श्री राम के वन गमन का सजीव वर्णन किया गया है।
- बच्चों को श्री राम के जीवन संबंधी उच्च आदर्शों के बारे में जानकारी दें। बच्चों को रामचरितमानस आदि ग्रंथों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे बच्चे व्यावहारिक जीवन के उच्च आदर्शों को जान सकें और उन्हें अपने जीवन में उतार सकें।

साँवरे गोरे सलोने सुभाय, मनोहरता जिति नैन लियो है।
बान कमान निषंग कसे, सिर सोहैं जटा, मुनिवेष कियो है।।
संग लिए बिधु-बैनी बधू, रति को जेहि रंचक रूप दियो है।
पाँयन तौ पनहीं न, पयादेहिं क्यों चलिहैं, सकुचात हियो है।।

रानी मैं जानी अजानी महा, पवि-पाहनहू तें कठोर हियो है।
राजहुँ काजु-अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जिन कान कियो है।।
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरें कैसे प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में सखि! राखि बे जोगु, इन्हें किमि कै बनवास दियो है।।

शब्दार्थ

कीर	– तोता	कागर	– पंख
नृपचीर	– राजसी वस्त्र	औध	– अवध
राजिवलोचन	– कमल जैसे नेत्र	बटाऊ	– राहगीर
पुर तें	– नगर से	द्वै	– दो
कनी	– छोटे कण	पुट सूखि गए मधुराधर द्वै	– दोनों मधुर होंठ सूख गए
केतिक	– कितनी	तिय	– पत्नी
चली जल च्वै	– आँसू बह चले	पारिखौ	– प्रतीक्षा करो
घरीक	– घड़ी	पसेउ	– पसीना
बयारि	– हवा	भूभुरि	– धूल
नाह	– स्वामी	बनिता	– स्त्री
बिलोकहु	– देखो	मोहि-सी ह्वै	– मेरे जैसी होकर
बिथकीं	– चकित हुई	निषंग	– तरकस
सोहैं	– सुशोभित हैं	रंचक	– थोड़ा-सा
पनहीं	– जूतियाँ	पयादेहिं	– पैदल
पाहनहू	– पत्थर से	काजु-अकाजु	– कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य
जोगु	– योग्य	किमि कै	– कैसे

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

विभूषन पर्नकुटी स्यामल पदपंकज

2. सोचकर बताइए–

(क) राम और सीता वन में क्यों जा रहे थे?

(ख) राम और सीता ने आभूषणों को किसके समान त्याग दिया?

(ग) सीता पथ पर सकुचाती हुई क्यों चल रही थीं?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–

(क) अवध को छोड़कर जाते समय राम और सीता के पथ के साथी कौन बने? ....

(ख) राम के नेत्रों की तुलना किससे की गई हैं? ....

(ग) सीता किनके बीच बैठी हैं? ....

(घ) श्री राम किसके समान सुंदर लग रहे हैं? ....

(ङ) रति के रूप को किसने फीका कर दिया है? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) सीता ने राम से क्या पूछा?

....

....

(ख) राम की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

....

....

(ग) ग्रामीण राजा को क्या कह रहे थे?

....

....

(घ) गाँव की स्त्रियों ने केकैयी को अज्ञानी और दशरथ को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विचार न करने वाला क्यों बताया?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए-

(क) राम और सीता का सौंदर्य-वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ख) नीचे दी पंक्तियों का सप्रसंग भावार्थ लिखिए।

(*i*) कीर के कागर ज्यौं नृपचीर, विभूषन उप्पम अंगनि पाई।
औध तजी मगबास के रूख ज्यौं, पंथ के साथी लोग-लुगाई।।

....

....

....

....

(*ii*) बनिता बनी स्यामल गौर के बीच, बिलोकहु, री सखि! मोहि-सी ह्वै।
मगजोगु न कोमल, क्यों चलि है, सकुचाति मही पदपंकज छ्वै।।

....

....

....

....

(*iii*) संग लिए बिधु-बैनी बधू, रति को जेहि रंचक रूप दियो है।
पाँयन तौ पनहीं न, पयोदेहिं क्यों चलिहैं, सकुचात हियो है।।

....

....

....

....

4. **नीचे दिए काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

रानी मैं जानी अजानी महा, पवि–पाहनहू तें कठोर हियो है।
राजहुँ काजु–अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जिन कान कियो है।
ऐसी मनोहर मूरति ये, बिछुरें कैसे प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में सखि! राखि बे जोगु, इन्हें किमि कै बनवास दियो है।

(क) इस पद में राजा-रानी कौन हैं?
- (*i*) राम और सीता
- (*ii*) दशरथ और केकैयी
- (*iii*) दशरथ और सुमित्रा
- (*iv*) रावण और मंदोदरी

(ख) राजा को किसका ज्ञान नहीं है?
- (*i*) कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का
- (*ii*) मान–सम्मान का
- (*iii*) भले-बुरे का
- (*iv*) अच्छे-भले का

(ग) राम और सीता के बारे में क्या चिंता व्यक्त की गई है?
- (*i*) राम–सीता का निरादर क्यों किया गया है?
- (*ii*) राम–सीता कहाँ रहेंगे?
- (*iii*) राम–सीता को वनवास क्यों दिया गया है?
- (*iv*) राम–सीता कब लौटेंगे?

(घ) राम व लक्ष्मण ने कौन–सा वेश धारण किया है?
- (*i*) मुनियों का
- (*ii*) राजकुमारों का
- (*iii*) ग्रामीणों का
- (*iv*) भिक्षुकों का

भाषा ज्ञान

1. **नीचे दिए शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए–**

पर्नकुटी – ....   बिलंब – ....
स्यामल – ....   अजानी – ....
बधू – ....   नेह – ....

2. **नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

धर्म – ....   कोमल – ....
विलंब – ....   ज्ञानी – ....
कर्त्तव्य – ....   बिछुड़ना – ....

3. नीचे दिए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

श्याम –	....	साथी –	....
बटाऊ –	....	लोचन –	....
हृदय –	....	सलोना –	....
वधू –	....	काँटा –	....

पद से आगे

- यदि श्री राम राजा दशरथ द्वारा केकैयी को दिए गए वचन का मान रखना अपना धर्म न समझते तो क्या होता?
- भरत ने राज्य पर कभी भी अपना अधिकार नहीं समझा। उन्होंने श्री राम की धरोहर के रूप में राज्य का कार्यभार संभाला। यदि भरत की मानसिकता महाभारत के दुर्योधन जैसी होती तो 'रामायण' में कौन-सा परिवर्तन देखने को मिलता?

नन्हे हाथों से

- 'रामचरितमानस' की कहानी संक्षेप में अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
- चित्र देखकर रामायण की इस घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

कुछ करने को

- रामचरितमानस पर आधारित किसी प्रसंग का नाट्य-मंचन कीजिए।
- तुलसीदास की श्रेष्ठ रचना 'रामचरितमानस' है। इसके अलावा भी उन्होंने अनेक काव्य रचनाएँ की हैं। पुस्तकालय में जाकर उनकी रचनाओं को पढ़िए और उनमें से जो आपको अच्छी लगे, उसे याद करके कक्षा में सुनाइए।
- तुलसीदास की पद्य रचना पर आधारित एक सुंदर चार्ट तैयार करके कक्षा में लगाइए।

आप क्या करेंगे

- यदि आप दशहरे के अवसर पर रामलीला देखने जाएँ और वहाँ पात्रों के संबंध में कुछ आपत्तिजनक दिखाया जाए जो रामचरितमानस या रामायण जैसे ग्रंथों से मेल न खाता हो तो आप क्या करेंगे?
- यदि आप किसी मेले या भीड़-भाड़ वाले स्थान पर हों और भगदड़ मच जाए तो आप क्या करेंगे?

16 हवा में फैलता ज़हर

आज मनुष्य अपने वैज्ञानिक, तकनीकी एवं औद्योगिक विकास से बहुत खुश है। इसी खुशी में वह प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर अपने विनाश की लीला रच रहा है। औद्योगीकरण के कारण दिन-पर-दिन बढ़ता प्रदूषण समस्त मानवता के लिए विनाश का खतरा बनकर मंडरा रहा है। शताब्दियों पूर्व ही महान दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों ने हमें चेतावनी दे दी थी कि प्रकृति से छेड़छाड़ न करें। अरस्तु और डार्विन जैसे दार्शनिकों ने चेताया था कि औद्योगिक प्रगति से लाभ-ही-लाभ हैं लेकिन हमें यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि जिस हवा में हम साँस ले रहे हैं, वह दूषित न हो।

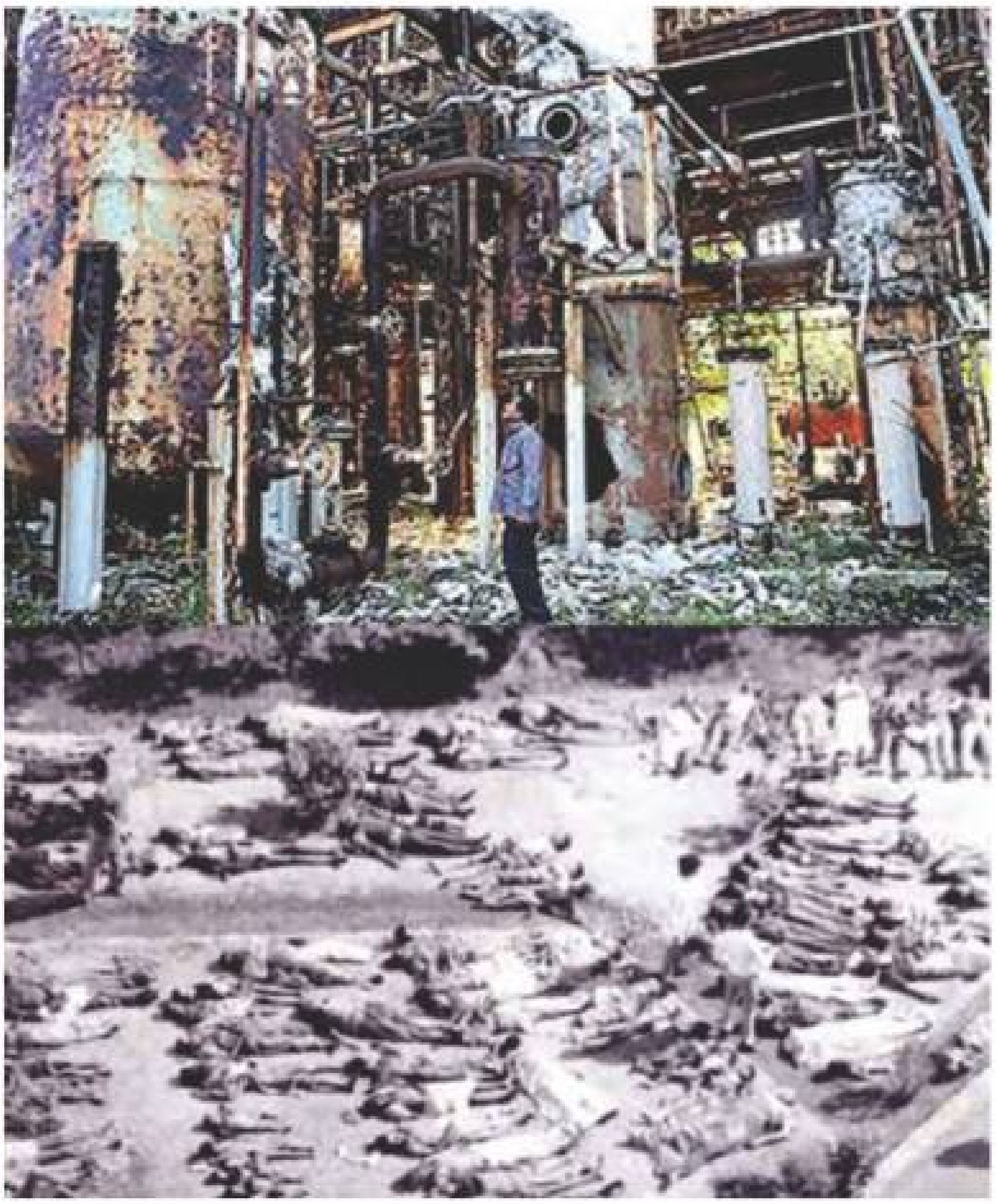

वायु प्रदूषण की बात करें तो इसका एक नमूना 80 के दशक में देखने को मिला था। भारत में ऐसी घटना घटी जिसको सोचकर आज भी दिल दहल जाता है। 3 दिसंबर, 1983 को भोपाल में हुई गैस त्रासदी को भुलाया नहीं जा सकता। यूनियन कार्बाइड द्वारा संचालित संयंत्र से निकली प्राणघातक गैस ने वातावरण में फैलकर ऐसी तबाही मचाई कि उसकी टीस आज भी रह-रहकर भारतवासियों के मन में उठती है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, इस गैस ने भोपाल के चार हज़ार निवासियों को मौत की नींद सुला दिया और उस शहर में जो लोग मरने से बच गए वे या तो गंभीर बीमारियों का शिकार हो गए या फिर अंधे व अपंग होकर ज़िंदगीभर उस त्रासदी को झेलते रहे। भोपाल गैस त्रासदी को इसलिए भी नहीं भुलाया जा सकता क्योंकि आज विश्व के प्रत्येक कोने में ऐसी विषैली गैसों के प्लांट स्थापित हो चुके हैं। यद्यपि मानव उस भूल को न दोहराने के लिए हर

शिक्षण संकेत

- बच्चों को प्रदूषण के कारणों और परिणामों के बारे में जानकारी देते हुए पाठ पढ़वाएँ। उन्हें पर्यावरण के अनुकूल वस्तुओं को व्यवहार में लाने हेतु प्रेरित करें।
- धरती को विनाश से बचाने हेतु बच्चों को उनके कर्त्तव्यों के बारे में बताकर, पेड़-पौधे लगाने के लिए प्रेरित करें।

तरह से तत्पर दिखता है परंतु कभी भी उस घटना जैसी दुर्घटना की पुनरावृत्ति से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। वैसे भी औद्योगीकरण के कारण विषैला धुआँ रिस-रिसकर वायुमंडल की वायु को प्रदूषित करता जा रहा है। इस प्रदूषित हवा में साँस लेकर मानव वायु प्रदूषण का शिकार होकर गंभीर बीमारियों को झेल रहे हैं।

मनुष्य भोजन के बिना महीनों जी सकता है, पानी के बिना कुछ दिन गुज़ार सकता है लेकिन साँस लिए बिना उसे चंद मिनटों में ही काल के दर्शन हो जाते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा अनुमान लगाया गया है कि एक वयस्क प्रतिदिन औसतन 1.5 किलोग्राम खाना खाता है और लगभग 2.5 लीटर पानी पीता है। परंतु यदि साँस की बात की जाए तो वह प्रतिदिन 15 किलोग्राम वायु का आदान-प्रदान करता है। इतनी अधिक वायु शरीर में प्रवेश करने के साथ ही यह भी निश्चित कर देती है कि प्रदूषित पानी और भोजन की अपेक्षा प्रदूषित वायु में साँस लेने से मनुष्य के संक्रमित होने की संभावना अधिक रहती है। नई-नई प्रौद्योगीकियों के प्रसार से पैदा होने वाले उत्पादों से हमारी वायु विषैली होती जा रही है। वायु प्रदूषण का प्रसार और उसकी भयावहता ने मनुष्य को भयभीत कर दिया है।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लगे उद्योग हमारी उन्नति का प्रतीक हैं लेकिन इनमें से अधिकांश उद्योगों की चिमनियों से विषैला धुआँ निकलता है। यह धुआँ कहाँ जाता है? इसे अक्सर हवा में गायब होते सबने देखा होगा। वास्तव में यह गायब नहीं होता बल्कि हमारे वायुमंडल में फैलकर उसे प्रदूषित करता है। इसी प्रदूषित वायुमंडल में हम साँस लेते हैं और अनजाने ही ये प्रदूषक तत्व हमारे फेफड़ों में एकत्र होकर हमें हानि पहुँचाते हैं।

वायु को प्रदूषित करने में केवल उद्योगों का ही हाथ हो, ऐसा नहीं है। वायु को प्रदूषित करने वाले घटक और भी हैं। मोटर वाहनों से निकलने वाला धुआँ भी कम खतरनाक नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, अकेले ग्रेटर कोलकाता में वाहनों द्वारा एक दिन में लगभग दो हज़ार टन प्रदूषित पदार्थ वायुमंडल में छोड़े जाते हैं। जिससे यह अनुमान लगाया गया कि कोलकाता का नागरिक धूम्रपान करे या न करे, वह प्रतिदिन दो पैकेट सिगरेट पीने के लिए मजबूर है। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बसों, भार ढोने वाली गाड़ियों

और मालवाहकों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसके साथ ही कार, जीप, मोटरसाइकिल आदि की संख्या में भी काफ़ी बढ़ोतरी हुई है। इनकी बढ़ती हुई संख्या ने वातावरण में धुएँ के गुबार में काफ़ी बढ़ोतरी कर दी है।

वायु प्रदूषण ने धरती पर जीवन को खतरे में डाल दिया है। पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो गई हैं और कुछ विलुप्ति की कगार पर हैं। माना कि वायु प्रदूषण का मूल्य चुकाए बिना आधुनिक जीवन-शैली की सुविधाएँ जुटा पाना संभव नहीं है परंतु अच्छे उपकरण तैयार करके, उनके उचित प्रयोग से प्रदूषण को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है; इसके साथ ही दैनिक व्यवहार में इको फ्रैंडली वस्तुओं का प्रयोग करके भी पर्यावरण को दूषित होने से काफ़ी हद तक बचाया जा सकता है। इनके अलावा कार्य-शैली में बदलाव लाकर भी प्रदूषण के फैलाव को कम किया जा सकता है; जैसे– ज़्यादा-से-ज़्यादा दहन से धुएँ की मात्रा को कम किया जा सकता है। ईंधन की मात्रा घटाकर ईंधन और हवा के सही अनुपात से दहन को बढ़ाया जा सकता है। अधूरे दहन से वातावरण में कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी विषैली गैस फैलती है। यदि दहन को बढ़ा दिया जाए तो उससे कार्बन मोनोऑक्साइड के स्थान पर कार्बन डाइऑक्साइड गैस निकलेगी जो अपेक्षाकृत कम विषैली होगी। आपने अक्सर देखा होगा कि जब कोयले को जलाया जाता है तो प्रारंभ में बहुत धुआँ निकलता है लेकिन जलने की प्रक्रिया बढ़ने पर वह लाल होकर दहकने लगता है और उससे निकलने वाला धुआँ भी दिखाई नहीं देता। अतः कोयले को जलाने से पूर्व उसका चूरा बना लेना चाहिए, फिर यांत्रिक स्ट्रोक का प्रयोग कर उसकी दहन क्षमता को बढ़ाते हुए कोयले का प्रयोग करना चाहिए।

विज्ञान ने यदि आधुनिक जीवन-शैली के लिए वायु प्रदूषण फैलाने वाले यंत्र बनाए हैं तो वायु प्रदूषण को नियंत्रण करने वाले उपकरण भी बनाए हैं। इसलिए उद्योगों के प्रदूषण को रोकने वाले उपकरण– एसबेस्टर्स, स्क्रबर, फिल्टर आदि का प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए। ताप बिजलीघरों तथा उड़नेवाली राख उत्पन्न करने वाले उद्योगों को अपने संयंत्रों में ही इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रेसिपिटेटर लगा लेने चाहिए। केवल इन उपकरणों को लगाकर ही निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए बल्कि समय-समय पर इनकी जाँच भी करते रहना चाहिए कि ये उपकरण ठीक प्रकार से कार्य कर रहे हैं या नहीं।

औद्योगिक परिसरों और उनके आस-पास तथा सड़कों के किनारे अधिक-से-अधिक संख्या में पेड़ लगाए जाने चाहिए। पेड़ों में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने की क्षमता होती है। इस प्रकार पेड़-पौधे वातावरण में फैली कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करके वायु में गैसों का उचित सामंजस्य बनाए रखते हैं। अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाकर और वनों के कटाव को रोककर धरती के वातावरण को संतुलित रखा जा सकता है। इसके साथ ही धरती के बढ़ते तापमान को भी नियंत्रित किया जा सकता है और वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के प्रकोप से भी बचा जा सकता है।

वायु प्रदूषण एक ऐसी गंभीर समस्या है कि यदि इस पर आज ही विचार करके मानव जाति नहीं चेती तो उसे अपने विनाश को रोकने हेतु अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए हमें समय रहते सँभल जाना चाहिए और अपने तथा धरा के बचाव हेतु कारगर उपाय करने चाहिए।

शब्दार्थ

संसाधन	–	स्रोत, संपत्ति	त्रासदी	–	दुखद घटना
संचालित	–	नियंत्रित	प्राणघातक	–	प्राण हर लेने वाला
प्रतीक	–	प्रतिरूप, प्रतिभा	विलुप्त	–	खंडित, नष्ट, गायब
यांत्रिक	–	मशीनों को चलाने वाला	अवशोषित करना	–	सोख लेना
सामंजस्य	–	अनुकूलता	प्रकोप	–	अत्यधिक क्रोध, प्रबलता, क्षोभ

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं– औद्‌योगिक – औद्योगिक यद्‌यपि – यद्यपि

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

औद्‌योगीकरण   दार्शनिकों   प्रदूषित   इको फ्रैंडली   इलेक्ट्रोस्टेटिक

2. **सोचकर बताइए–**

(क) मनुष्य स्वयं अपने विनाश की लीला कैसे रच रहा है?

(ख) प्रदूषण कम फैले इसके लिए कोयला जलाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

(ग) पेड़-पौधों से धरती के वातावरण को कैसे संतुलित किया जा सकता है?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) औद्‌योगीकरण के कारण दिन-पर-दिन क्या बढ़ता जा रहा है? ....

(ख) भोपाल गैस त्रासदी कब हुई थी? ....

(ग) एक वयस्क मनुष्य प्रतिदिन कितनी वायु का आदान-प्रदान करता है? ....

(घ) धरती के वातावरण को संतुलित करने के लिए क्या लगाने चाहिए? ....

2. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) महान दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों द्वारा क्या चेतावनी दी गई थी?

....

....

(ख) औद्योगीकरण को वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण क्यों माना जाता है?

....

....

(ग) भोपाल गैस कांड से लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

....

....

(घ) चिमनियों का धुआँ कहाँ गायब हो जाता है और हमें किस प्रकार हानि पहुँचाता है?

....

....

(ङ) बढ़ती हुई जनसंख्या वायु प्रदूषण का कारण कैसे बनती है?

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) वायु का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

....

....

....

....

(ख) वायु प्रदूषण कैसे फैलता है? कोई तीन कारण बताइए।

....

....

....

....

(ग) वायु प्रदूषण को किस प्रकार कम किया जा सकता है?

....

....

....

....

4. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, एक वयस्क प्रतिदिन औसतन कितना खाना खाता है?

(*i*) 1.0 किलोग्राम ☐ (*ii*) 1.5 किलोग्राम ☐

(*iii*) 2.00 किलोग्राम ☐ (*iv*) 2.5 किलोग्राम ☐

(ख) ग्रेटर कोलकाता में प्रतिदिन वाहनों द्वारा कितने टन प्रदूषित पदार्थ वायुमंडल में छोड़े जाते हैं?

(*i*) एक हज़ार टन ☐ (*ii*) 1.5 हज़ार टन ☐

(*iii*) दो हज़ार टन ☐ (*iv*) तीन हज़ार टन ☐

(ग) पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त क्यों हो रही हैं?

(*i*) जल प्रदूषण के कारण ☐ (*ii*) वायु प्रदूषण के कारण ☐

(*iii*) भोजन के अभाव के कारण ☐ (*iv*) शिकार के कारण ☐

(घ) उद्योगों द्वारा वायु प्रदूषण कम फैले, इसके लिए क्या करना चाहिए?

(*i*) प्रदूषण रोकने वाले उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। ☐

(*ii*) उपकरण ठीक प्रकार कार्य कर रहे हैं या नहीं, इसकी जाँच करते रहना चाहिए। ☐

(*iii*) औद्योगिक परिसरों के आस-पास अधिक-से-अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए। ☐

(*iv*) उपरोक्त सभी। ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों के मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए–

शब्द	मूल शब्द		प्रत्यय
तकनीकी –	....	+	....
औद्योगिक –	....	+	....
दार्शनिक –	....	+	....
संचालित –	....	+	....
त्रासदी –	....	+	....

संक्रमित – .... + ...

विलुप्ति – .... + ...

विषैली – .... + ...

अवशोषित – .... + ...

2. नीचे दिए शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए–

शब्द		उपसर्ग		मूल शब्द
प्रगति	–	....	+	....
संसाधन	–	....	+	....
सुनिश्चित	–	....	+	....
संचालित	–	....	+	....
प्रदूषित	–	....	+	....
प्रजाति	–	....	+	....
पर्यावरण	–	....	+	....

3. नीचे दिए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

अनुकुल	–	....	शुरु	–	....
ओद्योगिक	–	....	अँधा	–	....
बन	–	....	प्रान	–	....
अत्याधिक	–	....	क्रिपा	–	....
मुल्य	–	....	अधुनीक	–	....

निबंध से आगे

- यदि वाहन कार्बन डाइऑक्साइड गैस से चलने लगें तो क्या होगा?
- क्या ऐसा कारखाना बनाया जाना संभव है, जिसमें वातावरण की विषैली गैसों को अवशोषित करके पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सके।

नन्हे हाथों से

- **वायु प्रदूषण पर अपनी उत्तर पुस्तिका में निबंध लिखिए।**

- नीचे दिए खाली स्थान पर पर्यावरण-संरक्षण संबंधी पोस्टर बनाइए।

कुछ करने को

- 'इको फ्रैंडली' वस्तुएँ किन्हें कहते हैं? पता लगाइए और उनका दैनिक जीवन में प्रयोग कीजिए।
- पर्यावरण-संरक्षण पर एक भाषण तैयार करके कक्षा में सुनाइए।
- पर्यावरण-संरक्षण पर एक सुंदर-सा चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइए।

आप क्या करेंगे

- यदि आपके आस-पड़ोस में कोई गीली लकड़ियों को जलाने का प्रयास कर रहा हो और उनसे अत्यधिक धुआँ फैल रहा हो तो आप क्या करेंगे?
- यदि तकनीकी खराबी के कारण आपका वाहन अधिक मात्रा में धुआँ छोड़ रहा हो तो आप क्या करेंगे?

क्या आप जानते हैं?

(क) रिक्त स्थान में क्या आएगा? सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

6	2	14
7	4	32
8	5	45
9	7	?

(*i*) 15 ☐ (*ii*) 10 ☐
(*iii*) 25 ☐ (*iv*) 70 ☐

(ख) रिक्त स्थान में क्या आएगा? सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

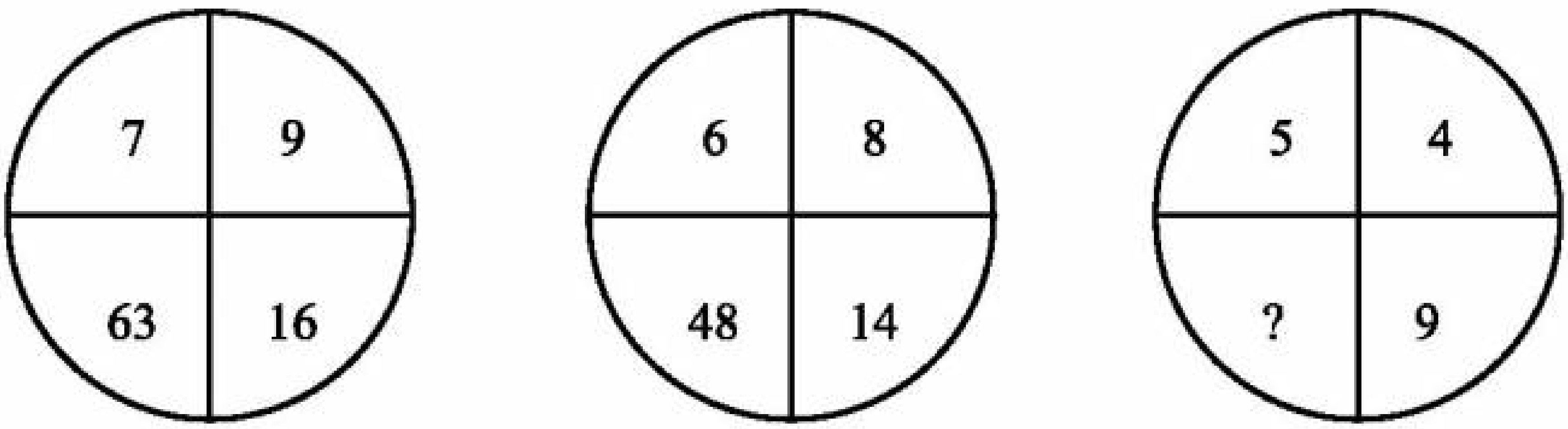

(*i*) 20 ☐ (*ii*) 36 ☐ (*iii*) 40 ☐ (*iv*) 45 ☐

(ग) इसमें कितने त्रिभुज हैं? सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

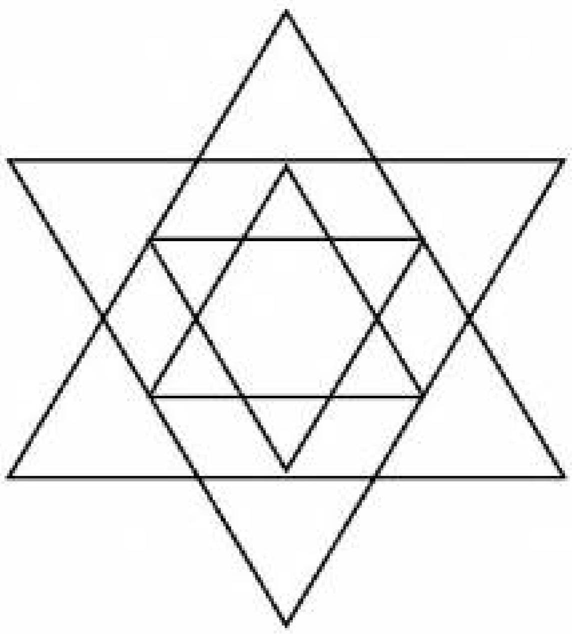

(*i*) 9 ☐ (*ii*) 18 ☐
(*iii*) 27 ☐ (*iv*) 34 ☐

(घ) एक लड़की के चित्र की ओर संकेत करते हुए सचिन कहता है कि इसकी माँ का भाई, मेरी माँ के पिता का एकलौता बेटा है। उस लड़की की माँ से सचिन का क्या संबंध है?

(*i*) मौसी–भांजा ☐ (*ii*) चाची–भतीजा ☐

(*iii*) बहन–भाई ☐ (*iv*) जीजा–साली ☐

(ड.) एक सज्जन की ओर संकेत करते हुए दीपक कहता है कि इसका एकमात्र भाई मेरी पुत्री के पिता का पिता है। उस सज्जन से दीपक का क्या संबंध है?

(*i*) पिता–पुत्र ☐ (*ii*) चाचा–भतीजा ☐

(*iii*) भाई–बहन ☐ (*iv*) दादा–पोता ☐

(च) राहुल की माँ मेनका के पिता की इकलौती बेटी है। मेनका के पति का राहुल से क्या संबंध है?

(*i*) पिता ☐ (*ii*) भाई ☐

(*iii*) चाचा ☐ (*iv*) ससूर ☐

(छ) अंकुर का भाई मोहित चंद्रप्रकाश का बेटा है। विकास चंद्रप्रकाश के पिता हैं। अंकुर का विकास से क्या संबंध है?

(*i*) पिता–बेटा ☐ (*ii*) चाचा–बेटा ☐

(*iii*) दादा–पोता ☐ (*iv*) मामा–भांजा ☐

(ज) यह व्यक्ति किस क्षेत्र से संबंधित है, सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(*i*) व्यवसाय ☐ (*ii*) राजनीति ☐

(*iii*) मनोरंजन ☐ (*iv*) समाजसेवा ☐

(झ) यह व्यक्ति किस क्षेत्र से संबंधित है, सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(*i*) व्यवसाय ☐ (*ii*) राजनीति ☐

(*iii*) समाजसेवा ☐ (*iv*) खेल ☐

(ञ) यह व्यक्ति किस क्षेत्र से संबंधित है, सही विकल्प पर (✓) लगाइए–

(*i*) खेल ☐ (*ii*) व्यवसाय ☐

(*iii*) राजनीति ☐ (*iv*) समाजसेवा ☐

17 ऐनी फ्रैंक की डायरी

20 जून, 1942: हमारी ज़िंदगी चिंताओं से परे नहीं थी। इसकी वजह यह थी कि हमारे नाते-रिश्तेदार जर्मनी में हिटलर के यहूदी विरोधी कानूनों के शिकंजे में यातनाएँ झेल रहे थे। 1938 के बड़े पैमाने के हत्याकांड के बाद मेरे दो मामा सुरक्षित शरण की तलाश में जर्मनी से भागकर उत्तरी अमेरिका चले गए थे। नानी हमारे पास रहने के लिए चली आईं थीं। जिनकी उम्र 73 साल थी।

1940 के बाद तो जैसे अच्छे दिन दूर और दुर्लभ होते चले गए थे। पहले तो जंग छिड़ी, फिर आत्मसमर्पण और फिर देश में जर्मनों का आना यहूदियों के लिए संकटों की शुरुआत हो चुकी थी। एक के बाद एक यहूदी विरोधी आदेशों ने हमारी आज़ादी को बुरी तरह छिन्न-भिन्न कर दिया था। यहूदियों को अपनी पहचान के लिए हर वक्त एक पीला सितारा टाँके रहना पड़ता था। यहूदियों को अपनी साइकिलें तक जमा करानी पड़ती थीं। उन्हें ट्रामों पर चढ़ने की सख्त मनाही थी। स्वयं की कार तक में चलने की मनाही थी। खरीदारी दोपहर के तीन से पाँच बजे के बीच ही कर सकते थे। यहूदी, यहूदी नाइयों की दुकानों या ब्यूटी सैलूनों में ही जा सकते थे। रात आठ बजे से सुबह छह बजे तक गलियों और सड़कों पर नहीं घूम सकते थे। नाटक, सिनेमा या किसी भी तरह के मनोरंजन कार्यक्रम के लिए हम कहीं नहीं जा सकते थे। तरण-ताल, टेनिस कोर्ट या किसी मैदान का उपयोग नहीं कर सकते थे। नाव नहीं चला सकते थे। खेल-कूद में हिस्सा नहीं ले सकते थे। खुद के या किसी मित्र के बगीचे में रात आठ बजे के बाद नहीं बैठ सकते थे। ईसाइयों से मिलने के लिए उनके घर नहीं जा सकते थे। फिर भी जीवन यंत्रवत चल रहा था।

9 जुलाई, 1942 : इस दिन हमने ढेर सारी खरीदारी की। मम्मी, पापा और मैं तेज़ बारिश में भीगते हुए आ रहे थे। हम तीनों के कंधों पर बड़े-बड़े थैले और बैग थे, जो अनेक चीज़ों से ठूँस-ठूँसकर भरे हुए थे। सुबह-सुबह काम पर जानेवाले लोग हमें बड़ी बेचारगी से देख रहे थे। जब हम गली में पहुँच गए तभी पापा और मम्मी ने धीरे-धीरे हमें अपनी

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि प्रस्तुत पाठ ऐनी फ्रैंक द्वारा लिखी गई डायरी है। इसमें ऐनी फ्रैंक द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी में हिटलर द्वारा यहूदियों को दी जाने वाली यातनाओं का वर्णन किया गया है।
- बच्चों को अपने जीवन में घटी घटनाओं पर प्रतिदिन डायरी लिखने के लिए प्रेरित करें।
- सबसे अच्छी डायरी लिखने वाले बच्चे को पुरस्कृत करें तथा उसकी डायरी कक्षा में पढ़कर सुनाएँ।

योजना के बारे में बताया। उन्होंने तय किया था कि 16 जुलाई को हम अज्ञातवास में चले जाएँगे। अचानक मार्गोट के लिए बुलावा आ जाने के कारण योजना को दस दिनों के लिए पीछे खिसकाना पड़ा था।

छिपने की जगह पापा के ऑफ़िस की इमारत में ही थी। इसे समझ पाना थोड़ा मुश्किल होगा। इमारत के तल पर बना बड़ा-सा गोदाम भंडार घर के रूप में इस्तेमाल होता था।

सीढ़ियों के ऊपर बनी जगह से दाईं तरफ़ का दरवाज़ा घर के पिछवाड़े, हमारी गुप्त एनेक्सी की तरफ़ जाता था। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इस सपाट मटमैले दरवाज़े के पीछे इतने कमरे भी हो सकते हैं। सीढ़ियों के दाईं तरफ़ गुसलखाना और बिना खिड़कियों वाला एक कमरा था, जिसमें एक वॉशबेसिन लगा हुआ था। दरवाज़े से मेरे और मार्गोट के कमरे की तरफ़ जाया जा सकता था।

हम वायरलेस सेट पर इंग्लैंड रेडियो सुना करते थे। हम कुछ भी करें, हर वक्त खटका लगा रहता था कि कहीं पड़ोसी सुन न लें। मैं इतना डर गई थी कि कहीं कोई हमें देख न ले।

21 अगस्त, 1942 : हमारी गुप्त एनेक्सी सचमुच गुप्त बन चुकी थी। छिपाकर रखी गई साइकिलों के लिए कई घरों की तलाशी ली जा रही थी, इसलिए मिस्टर कुगलर ने यही बेहतर समझा कि हमारे छिपने की जगह के दरवाज़े के सामने किताबों का एक रैक बना दिया जाए। वह रैक कब्ज़ों पर झूलता और दरवाज़े की तरह खुल जाता था। हमें जब भी नीचे जाना होता था, पहले सिर झुकाना होता, फिर कूदना पड़ता था। तीन दिन में ही इस बौने दरवाज़े की चौखट से सिर टकरा-टकराकर हम सबके माथों पर गूमड़ निकल आए थे। बाहर बहुत ही अच्छा दिन था– साफ़ और गरम। मौसम कितना भी अच्छा हो, हम अधिक-से-अधिक यही कर सकते हैं कि पूरे दिन अटारी पर फ़ोल्डिंग चारपाई पर पसरे रहें।

8 मई, 1944 : क्या मैंने तुम्हें कभी अपने परिवार के बारे में बताया है? शायद नहीं बताया, तो आज बताती हूँ। मेरे पापा फ्रैंक फ़र्त में पैदा हुए थे। उनके माता-पिता बहुत धनी थे। पापा के पिता माइकल फ्रैंक का एक बैंक था जिससे वे लखपति बन गए थे। वे शुरू से ही अमीर नहीं थे। उन्होंने अपने बलबूते पर धन कमाया। वे सेल्फ़मेड आदमी थे। पापा का बचपन और जवानी दोनों अमीरी में बीते। दादा जी के मरने के बाद ज़्यादातर दौलत इधर-उधर हो गई। इसके बाद विश्वयुद्ध शुरू हो गया। मुद्रास्फीति की वजह से बची-खुची दौलत भी समाप्त हो गई। लड़ाई शुरू होने तक उनके कुछ अमीर रिश्तेदार बचे हुए थे इसलिए पापा अच्छे-खासे अमीर बने रहे। फिर हालात बद-से-बदतर होते चले गए पिछले पचास साल में यह पहली बार हुआ कि वे फ्राइंग पेन में से बचा-खुचा खाना खुरचकर निकाल रहे थे।

हम सबके मुँह में पानी आ रहा था। हम, जिनके नसीब में सुबह के नाश्ते में दो चम्मच दलिया आता था। हम भूख से बेहाल थे। हमें अधपके पालक के अलावा और कुछ नहीं मिलता था। हर रोज़ हमें सड़े हुए आलुओं पर गुज़ारा करना पड़ता है। हम अपने खाली पेट भरने के लिए क्या जुटा पाते हैं? उबली हुई सलाद, कच्ची पालक, पालक और पालक। हो सकता है, हम उस कार्टून चरित्र पोपाय की तरह तगड़े हो जाएँ जो सिर्फ़ पालक खाता है, हालाँकि मुझमें तो ऐसे कोई आसार नज़र नहीं आते।

21 जुलाई, 1944 : आखिर मैं आशावादी होती जा रही हूँ। अब ऐसा वक्त आ गया है कि चीज़ें ठीक-ठाक चल रही हैं। सचमुच! और एक शानदार खबर! हिटलर की हत्या करने की कोशिश की गई है और इस बार प्रयास यहूदी कम्यूनिस्टों या ब्रिटिश पूँजीपतियों द्वारा नहीं किया गया है बल्कि इसके पीछे एक जर्मन जनरल था जो न केवल काउंट

है बल्कि युवा भी है। हिटलर ने अपनी जान बचाने के लिए परमपिता परमात्मा का आभार माना है। दुर्योग से वे बच गए। वे इधर-उधर से थोड़ा जल गए हैं और एकाध खरोंच आई है। आस-पास जितने भी जनरल या अधिकारी खड़े थे, सब-के-सब मारे गए या ज़ख्मी हो गए। षड्यंत्र रचनेवाले दल एवं मुखिया को गोली मार दी गई।

हमें अब तक जो प्रामाणिक सूचनाएँ मिली हैं, उनमें सबसे बढ़िया यह है कि कई ऑफ़िसर्स तथा जनरल युद्ध से आजिज़ आ चुके हैं। वे हिटलर को अतल गहराइयों में डूबते देखना चाहते हैं ताकि वे मिलिट्री तानाशाही स्थापित कर सकें, शत्रुपक्ष से शांति स्थापित कर सकें, अपने-आपको फिर से हथियारबंद कर सकें और कुछ दशकों के बाद फिर से एक नई लड़ाई शुरू कर सकें।

4 अगस्त, 1944 को एनेक्सी में छिपे हुए आठ लोगों को गिरफ़्तार कर लिया गया। फिर यातना शिविरों में भूख, यंत्रणा और महामारी से इन सबकी मौत हो गई। इनमें से केवल ऐनी फ्रैंक के पिता ओट्टो फ्रैंक ही बचे, जिन्होंने बाद में ऐनी फ्रैंक की डायरी को प्रकाशित करवाया।

शब्दार्थ

यातनाएँ	–	कष्ट, तकलीफ़	जंग	–	लड़ाई
यंत्रवत	–	मशीन की तरह	अज्ञातवास	–	गुप्तनिवास
गूमड़	–	चोट लगने पर शरीर का उभरा हुआ भाग	प्रयास	–	कोशिश
आभार	–	कृतज्ञता	षड्यंत्र	–	साजिश
आजिज़	–	लाचार, तंग	अतल	–	बहुत गहरा

इन्हें ऐसे भी लिख सकते हैं–

द्वारा – द्वारा   युद्ध – युद्ध   ओट्टो – ओट्टो

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. पढ़िए और बोलिए–

दुर्लभ   आत्मसमर्पण   एनेक्सी   मुद्रास्फीति   पूँजीपतियों

2. सोचकर बताइए–

(क) यहूदियों को पीला सितारा क्यों टाँके रहना पड़ता था?

(ख) ऐनी फ्रैंक का परिवार छिपकर क्यों रह रहा था?

(ग) इस पाठ को पढ़कर आपको कैसा लगा?

लिखित

1. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) यहूदियों को यातनाएँ क्यों दी जा रही थीं?

....

....

(ख) अज्ञातवास में यहूदी परिवार कहाँ छिपा था?

....

....

(ग) घरों की तलाशी क्यों ली जा रही थी?

....

....

(घ) अज्ञातवास में यहूदी परिवार के सदस्य क्या खाते थे?

....

....

(ङ) हिटलर की हत्या का प्रयास किसने किया था?

....

....

2. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए–

(क) यहूदी लोगों पर कौन-कौन सी पाबंदियाँ लगाई गई थीं?

....

....

....

....

(ख) अज्ञातवास में ऐनी फ्रैंक के दिन कैसे बीते? वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

(ग) गुप्त एनेक्सी की क्या विशेषता थी?

....

....

....

....

(घ) पाठ में 'सेल्फ़मेड आदमी' किसे कहा गया है और क्यों?

....

....

....

....

3. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) ऐनी फ्रैंक के दोनों मामाओं ने कहाँ शरण ली थी?

(*i*) जर्मनी में ☐ (*ii*) उत्तरी अमेरिका में ☐

(*iii*) जापान में ☐ (*iv*) दक्षिण कोरिया में ☐

(ख) गुप्तवास की योजना को पीछे क्यों खिसकाना पड़ा?

(*i*) पैसों की कमी के कारण ☐ (*ii*) मार्गोट के लिए बुलावा आ जाने के कारण ☐

(*iii*) समय की कमी के कारण ☐ (*iv*) स्थान की कमी के कारण ☐

(ग) फ्रैंक परिवार को हर रोज़ क्या खाना पड़ता था?

(*i*) मैगी ☐ (*ii*) चावल ☐ (*iii*) सड़े हुए आलू ☐ (*iv*) अंडे ☐

(घ) ऐनी फ्रैंक के लिए शानदार खबर कौन-सी थी?

(*i*) हिटलर की हत्या की कोशिश ☐ (*ii*) फ्रैंक परिवार का पकड़ा जाना ☐

(*iii*) यहूदियों को छोड़ दिया जाना ☐ (*iv*) जर्मनों का भाग जाना ☐

4. नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आखिर मैं आशावादी होती जा रही हूँ। अब ऐसा वक्त आ गया है कि चीज़ें ठीक-ठाक चल रही हैं। सचमुच! और एक शानदार खबर! हिटलर की हत्या करने की कोशिश की गई है और इस बार प्रयास यहूदी कम्यूनिस्टों या ब्रिटिश पूँजीपतियों द्वारा नहीं किया गया है बल्कि इसके पीछे एक जर्मन जनरल था जो न केवल काउंट है बल्कि युवा भी है। हिटलर ने अपनी जान बचाने के लिए परमपिता परमात्मा का आभार माना है। दुर्योग से वे बच गए। वे इधर-उधर से थोड़ा जल गए हैं और एकाध खरोंच आई है। आस-पास जितने भी जनरल या अधिकारी खड़े थे, सब-के-सब मारे गए या ज़ख्मी हो गए। षड्यंत्र रचनेवाले दल के मुखिया को गोली मार दी गई।

(क) हिटलर की हत्या की कोशिश किसने की थी?

(*i*) यहूदी कम्यूनिस्टों ने ☐ (*ii*) ब्रिटिश पूँजीपतियों ने ☐

(*iii*) जर्मन जनरल ने ☐ (*iv*) फ्रैंक परिवार ने ☐

(ख) हिटलर ने अपनी जान बचाने के लिए किसका आभार व्यक्त किया?

(*i*) यहूदियों का ☐ (*ii*) जर्मन जनरल का ☐

(*iii*) ब्रिटिश पूँजीपतियों का ☐ (*iv*) परमात्मा का ☐

(ग) 'दुर्योग से वे बच गए।' यहाँ 'वे' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

(*i*) जर्मन जनरल के लिए ☐ (*ii*) हिटलर के लिए ☐

(*iii*) ऐनी फ्रैंक के पिता के लिए ☐ (*iv*) ऐनी फ्रैंक के मामाओं के लिए ☐

(घ) षड्यंत्रकारियों को क्या सज़ा दी गई?

(*i*) षड्यंत्र रचनेवाले दल एवं उसके मुखिया को गोली मार दी गई। ☐

(*ii*) फाँसी की सज़ा सुनाई गई। ☐

(*iii*) देश निकाला दिया गया। ☐

(*iv*) उम्रक़ैद की सज़ा दी गई। ☐

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों में प्रयुक्त उचित प्रत्यय पर (✓) लगाइए–

विरोधी	–	इ	☐	ई	☐	आई	☐	आइ	☐
सुरक्षित	–	अत	☐	इत	☐	ईत	☐	क्षित	☐
प्रामाणिक	–	इ	☐	इत	☐	इक	☐	ईक	☐
लड़ाई	–	ई	☐	इ	☐	कई	☐	आई	☐
ज़्यादातर	–	ज़्यादा	☐	इतर	☐	तर	☐	एतर	☐

2. नीचे दिए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

शरण में आया हुआ – ....

किसी गुप्त स्थान पर वास करना – ....

किए हुए उपकार को मानने वाला – ....

तथ्यों पर आधारित सूचनाएँ – ....

3. नीचे दिए शरीर के अंगों से संबंधित दो-दो मुहावरे लिखिए–

बाल – ....

....

कान – ....

....

मुँह – ....

....

हाथ – ....

....

सिर – ....

....

पेट – ....

....

4. 'कि' तथा 'की' का प्रयोग करके वाक्य बनाइए–

(क) यहूदी, यहूदी नाइयों .... दुकान में ही जा सकते थे।

(ख) कोई कल्पना भी नहीं कर सकता .... इस दरवाज़े के पीछे इतने कमरे भी हो सकते हैं।

(ग) छिपने .... जगह पापा के ऑफ़िस में ही थी।

(घ) यह पहली बार हुआ था .... पापा फ्राइंग पेन से बचा-खुचा खाना निकाल रहे थे।

डायरी से आगे

- यदि जर्मन जनरल की कोशिश कामयाब हो जाती तो ऐनी फ्रैंक के परिवार को क्या बदलाव देखने को मिलता?

नन्हे हाथों से

- **अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को क्रमवार उत्तर पुस्तिका में लिखिए।**

• चित्र देखकर घटना का वर्णन कीजिए।

कुछ करने को

• विश्वयुद्ध कब, क्यों और किनके बीच हुए? जानकारी एकत्र कीजिए। साथ ही पता लगाइए कि क्या तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा विश्व को भयभीत कर रहा है या उसकी कोई संभावना नहीं है। आँकड़ों के आधार पर परियोजना तैयार कीजिए।

• महापुरुषों द्वारा लिखी आत्मकथाएँ या डायरी के अंशों का संग्रहण कीजिए।

आप क्या करेंगे

• यदि कोई असामाजिक तत्व (अपराधी प्रवृत्तिवाला व्यक्ति) आपके परिवार को तंग करे तो आप क्या करेंगे?

• यदि आपके पड़ोसी से किसी बात पर आपका झगड़ा हो जाए और बाद में आपको महसूस हो कि गलती आपकी ही है तो आप क्या करेंगे?

18 बनारसी इक्का

देखा जाए तो सारी वस्तुएँ परमात्मा की बनाई हुई हैं पर इनमें से कुछ वस्तुएँ परमात्मा अपने हाथ से बनाता है और कुछ कार्य की अधिकता होने से ठेके पर भी बनवा लेता है। 'बनारसी इक्का' परमात्मा ने अपने हाथों से गढ़ा है। एक बात और है, विधना का कुछ विकट विधान है कि जिस शब्द के आगे 'बनारसी' शब्द लग जाए, उसके जोड़ की अथवा उससे होड़ करने वाली अन्य वस्तु इस संसार में तो क्या स्वर्ग–नरक में भी मिलनी कठिन है।

अब 'बनारसी साड़ी' को ही ले लो। बनारसी साड़ी के समान साड़ी कहाँ दिखाई देती है? 'बनारसी लंगड़ा' का नाम आते ही कितने दो पैरवालों के मुँह से लार टपक पड़ती है? बनारसी ठग इतनी चतुराई से माल उड़ा ले जाते हैं कि बड़े–बड़े लेखक और कवि भी दूसरों के लेख और कविताएँ इतनी आसानी से नहीं अपना सकते। वे ऐसा धोखा देते हैं कि प्रकाशक भी गरीब लेखकों को वैसा धोखा नहीं दे सकते। हम कहाँ तक गिनने का कष्ट उठाएँ और पाठकों के कोमल मन में कुलबुलाहट पैदा करके बौखलाहट पैदा करने का व्यर्थ आयोजन करें।

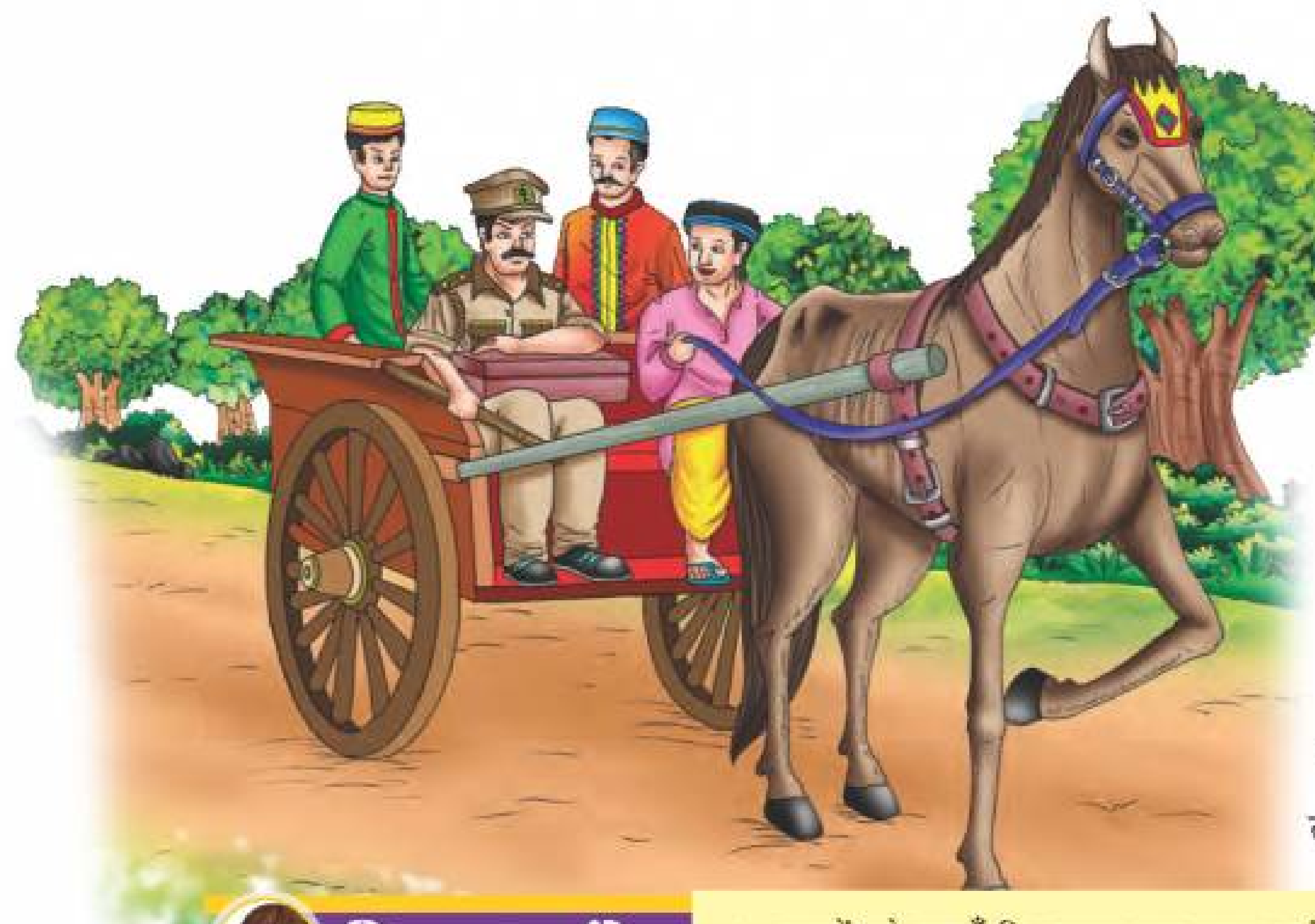

हाँ! तो हम बात कर रहे थे, विचित्र चीज़ बनारसी इक्का की। आप वायुयान या हाथी पर भले ही चढ़े हों, लौहपथ गामिनी या गधे पर चढ़े हों; पर यदि बनारसी इक्के पर सवार नहीं हुए तो भारतवर्ष में आपका जन्म लेना बेकार ही समझो। इससे अच्छा होता कि आप मंगोलिया की मरुभूमि या तस्मानिया के टापू पर जन्म लेते।

भारत के विख्यात बनारसी इक्के दो प्रकार के होते हैं—एक साधारण तथा दूसरा गहरेबाज़। साधारण इक्का

शिक्षण संकेत

- बच्चों को बताएँ कि प्रस्तुत पाठ हास्य-व्यंग्य पर आधारित है। बेढब बनारसी के नाम से प्रसिद्ध श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड की यह अनुपम कृति है।
- बच्चों को हास्य का महत्त्व समझाएँ और बताएँ कि हास्य रस से जीवन के अनेक मनोविकार स्वत: ही मिट जाते हैं तथा यह जीवन में जीवंतता प्रदान करता है।

अधिक दिखाई देता है। लेखनी द्वारा इसका चित्रण करना मेरे लिए कितना कठिन होगा, इसी से समझ लीजिए कि अभी तक किसी कवि ने इस पर अपनी प्रतिभा का प्रसार नहीं किया है। फिर भी काशी में रहने के नाते और सुबह-शाम इनके दर्शन करते-करते कुछ-न-कुछ तो लिख ही दूँगा।

साधारण इक्के के घोड़े भारतीय दरिद्रता की जीती-जागती एलबम हैं या यों कहिए कि आजकल के स्कूल-कालेजों के अधिकतर विद्यार्थियों की चलती-फिरती, दौड़ती तस्वीरें हैं। मालूम नहीं, इनके मालिक इन्हें खाने को कुछ देते भी हैं या नहीं, या कितना देते हैं? पर बेचारे जानवर ठहरे। इनकी पसलियों की हड्डियाँ ऐसे दिखाई देती हैं; जैसे– एक्सरे का चित्र। इनका सारा शरीर ऐसा लचकता है; जैसे– अंग्रेज़ी कानून।

यदि इनका इतना वर्णन करके ही कलम रोक ली जाए तो यह इक्के के प्रति घोर अन्याय होगा। बनारसी इक्का एक अद्भुत पदार्थ है। प्रयाग, लखनऊ, आगरा, पटना, कानपुर और न जाने कहाँ-कहाँ ये इक्के दौड़ते हैं, पर जब बनारस के इक्के ने चलना आरंभ किया तो एक मधुर संगीत सुनाई देना प्रारंभ हुआ। पायदान और पहिए के संयोग से बनी 'सरगम' के सुरीले आलाप पर तो बनारसी इक्के का वैसा ही जन्मसिद्ध अधिकार है, जैसा भारतीय नेताओं का मोटरकार पर सवार होने का होता है। पायदान न होने पर भी आपको ऐसे अनेक स्वर और उनके भेद सुनने को मिलेंगे कि तबीयत फड़क उठेगी। यदि सचमुच कोई 'फ्री व्हील' है तो वह है– बनारसी इक्के का पहिया। ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ जिधर भी देखिए, वह घूमता मालूम पड़ेगा। देखने वालों को भ्रम होगा कि पहिया धीरे-धीरे धुरी से असहयोग कर रहा है, परंतु ऐसा नहीं है। यह उसकी अदा है। यह बड़े नाज़ से कभी इक्के के बाहर की ओर तथा कभी भीतर की ओर घूमता है। इस नाज़ को उठाना सबके वश का काम नहीं है। कमानी तो इक्के में होती है, यद्यपि मुझे इस फिज़ूलखर्ची की आवश्यकता मालूम नहीं होती, क्योंकि बनारस की सड़कें स्वयं ऐसे ढंग से बनी हैं कि किसी भी सवारी पर चलिए, आपको यही लगेगा कि समुद्र की लहरों पर कभी ऊपर, कभी नीचे हिलोरे ले रहे हैं। इन इक्कों की लालटेन भी विशेषता रखती है। नियमानुसार, उसे कोई कह नहीं सकता कि लालटेन नहीं है। लालटेन न रखने के कानून के पंजे में इक्का कभी नहीं आ सकता। यह तो मैं वैज्ञानिकों के लिए छोड़ देता हूँ कि वे शोध करें कि इस लालटेन का प्रकाश कितनी दूर तक पहुँच सकता है? मैं तो केवल यही कह सकता हूँ कि इस प्रकाश में आप रात में यह भी नहीं पहचान सकते कि घोड़ा या इक्का कैसा होता है, यही इसका रहस्य है।

इस इक्के की साज-सज्जा को देखकर भारतवासियों का पुरातत्व प्रेम और पुरानी बातों के संरक्षण की अतुलनीय चेष्टा नज़र आती है। रस्सी पर रस्सी बँधी हुई, टाँके पर टाँके पड़ते जा रहे हैं, पर साज बदला नहीं जा सकता। इसमें अर्थशास्त्र का गंभीर सिद्धांत भी प्रकट होता है। प्रत्येक वस्तु में से जितना मूल्य संभव हो, निकाल लेना चाहिए। यदि हमारे कॉलेज के प्रोफेसर कुछ दिनों के लिए किसी बनारसी इक्केवान की शिष्यता ग्रहण कर लें तो देखना उनका व्यावहारिक ज्ञान कितना बढ़ जाएगा।

जब यह इक्का चलने लगता है, उस समय का हाल न पूछिए। चलते-चलते जब इक्का रुक जाता है तो उसे पुचकारिए, चापलूसी कीजिए, मनाइए पर टस-से-मस होने का नाम नहीं। ऐसे समय इक्केवान घोड़े महोदय से अनेक रिश्ते जोड़ने आरंभ कर देते हैं। पिता, चाचा, मौसा, नाना, दादा, बहनोई; शायद ही कोई ऐसा संबंध रह जाता हो, जो

इक्केवान न जोड़ता हो। मेरे विचार से यह संबंध केवल मौखिक होता है। जिन शब्दों का प्रयोग ये सज्जन करते हैं, उन सबका यहाँ लिखना मेरे लिए कठिन है।

गहरेबाज़ इक्का 'केपिटलिस्ट' समुदाय का प्रतिनिधि होता है। ऐसे इक्कों के घोड़े महाजनों के समान मोटे, ताल्लुकेदारों के समान तावदार और अंग्रेज़ों के समान अकड़ने वाले होते हैं। इनके इक्केवान स्वयं को अफलातून के अब्बा और सुकरात के बाबा से कम नहीं समझते। जिस समय ऐसे दो–तीन इक्के एक साथ दौड़ने लगते हैं, उस समय यदि आप इन पर सवार हों, तो बीमा कंपनियों की उपयोगिता स्वत: ही समझ में आने लगती है। यदि आप बिना अंग भंग के ऐसी सवारी से उतर आए हैं, तो यह ध्यान आता है कि अभी चमत्कारों का ज़माना बीता नहीं है।

यदि आप बनारस के रईस हैं और आपके पास मोटर भी है, परंतु बनारस के रईसों में आपकी गिनती तभी होगी, जब ऐसे इक्के पर आप कम–से–कम रामनगर की हवा खाकर आएँ। यह रईसी, यह शान–बान कुछ अलग ही है। बढ़िया जंप, जूता, छैले किनारे की धोती, चिकने पोत का कुरता, दुपलिया टोपी लगाए एक ओर साहूजी; दूसरी ओर इसी ढंग की पोशाक पहने उनके दोस्त और इक्केवान की बगल में एक हाथ में लंबा लट्ठ लिए बैठा सिपाही, दूसरे हाथ में भंग–बूटी का सामान सँभालते हुए नज़र आता है।

रामलीला के दिनों में इन इक्कों की माँग बढ़ जाती है; जैसे– हैजे की बाढ़ में डॉक्टरों का मिज़ाज नहीं मिलता और नौकरी खोजने वालों के सामने अफ़सरों का रौब बढ़ जाता है, उसी प्रकार इन इक्केवानों का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। साधारण लोग इनके पास फटक भी नहीं पाते। ये भी असाधारण और इनके ग्राहक भी असाधारण।

काशी में रहने के कारण मुझे इन इक्कों पर सवार होना ही पड़ता है। इसलिए यदि इक्केवान के व्यक्तित्व पर थोड़ा भी प्रकाश न डालूँ तो मुझे भय है कि वे मेरे साथ बदला लेने की न ठान लें। बनारसी इक्केवान एक संस्था है। उसकी बातों में सरसों का तीखापन, शराब की कड़वाहट, मिर्च की तिखाई और गरम मसाले की गरमाहट का मज़ा पाया जाता है।

एक बार ज़रा ज़ोर से बात कीजिए फिर देखिए क्या आनंद आता है? लेखनी में वह दम कहाँ जो व्यक्त कर सके? 'एक लगावै, चार पावै' चाहे कहीं और सच हो या न हो, यहाँ सोलह आने सच उतरती है। किसी इक्केवान को कुछ कहिए फिर देखिए सूद-दर-सूद पाते हैं या नहीं? लड़ने में तो इनकी बराबरी जर्मनी की पलटन भी नहीं कर सकती। हाँ, नियम के बड़े पक्के होते हैं, ये इक्केवान। प्रत्येक सवारी के चलने के समय सिपाही के हाथ में एक पैसा अवश्य रख देंगे और पुलिसवाले से बिना किराया लिए अवश्य बैठा लेंगे। ऐसा करके ये प्राचीन सनातन धर्म के अनुसार प्रजा धर्म निभाते हैं। प्रजा का धर्म राजा की सेवा करना होता है। हाँ, इक्के पर सवार करने से पहले अपनी सवारी की परीक्षा अवश्य लेते हैं। परीक्षा भी कुछ ऐसी-वैसी नहीं चतुराई की परीक्षा। वे आपसे इतना किराया माँगेंगे कि आपकी चतुराई की परीक्षा हो जाएगी। बड़े खेद की बात है कि इस परीक्षा में कितने ही पढ़े-लिखे लोग फेल हो जाते हैं।

जो ऊपर जाता है, उसे नीचे भी आना पड़ता है। दुर्दिन आते ही इनकी ठसक भी जाती रही। जब से बनारस में ताँगों का ताँता लगा और बसों की चिल-पों शुरू हुई, इन इक्केवालों को बहुत हानि उठानी पड़ी। फिर भी इन इक्केवालों के दर्शन हो ही जाते हैं। एक बार मैं इक्के पर सवार होकर स्टेशन से आ रहा था। कुछ पहिए का सुहावना राग और कुछ घोड़े की मंथर गति, मैं झपकियाँ लेने लगा। आँख लगे देर न हुई थी कि छतरी के खंभे से माथा जा लगा। मैंने समझा, सपने में गामा से कुश्ती लड़ रहा हूँ और उसने उठाकर दे मारा, उसी का झटका लगा है। आँखें अच्छी तरह से खुलीं तो दो बातें दिखाई दीं। घोड़ेराम दंडवत प्रणाम कर रहे थे और सिर के अंदर हवाई जहाज़-सी कोई चीज़ भन्ना रही थी। संध्या का समय था। मुझे लगा घोड़े जी पालथी मारकर संध्या कर रहे हैं। खयाल आया कि जब मंडन मिश्र का तोता संस्कृत बोलता था तो यदि काशी के घोड़े संध्या करते हों तो क्या आश्चर्य है? इक्केवाले से पूछा, "क्या मामला है?"

वह बोला, "साहब, उतरकर थोड़ा चलिए, अभी ठीक हो जाता है।"

मैंने पूछा, "क्या बीमार है?"

वह बोला, "आप कैसी बातें करते हैं? अभी दिनभर में चार बार ही स्टेशन होकर आया है।"

मैंने अधिक प्रश्न पूछना ठीक नहीं समझा। थोड़ी देर बाद घोड़ाराम ने तशरीफ़ उठाई। मैं सवार हुआ और पूछ बैठा, "यह घोड़ा कितने साल का है?"

इक्केवान ने उत्तर दिया, "बत्तीस साल का।"

यह तो मैंने सुना था कि मनुष्य अब भी सौ-सवा-सौ साल तक जी सकते हैं। पर बत्तीस साल का सतयुगी घोड़ा, मैंने नहीं सुना था। मैंने समझा, वह अपनी उम्र बता रहा है। मैंने फिर कहा, "तुम्हारी नहीं, घोड़े की उम्र पूछ रहा हूँ।"

इस पर उसकी त्योरियों पर बल पड़ गए और बोला, "आप मुझसे दिल्लगी कर रहे हैं? यह घोड़ा मेरे बाप के ज़माने से है। यह मुझे अपने लड़के के समान प्यार भी करता है। आप इसे कमज़ोर न समझें। इसे इसलिए अधिक नहीं खिलाया जाता कि ज़्यादा बलवान होने पर अगर तेज़ी से दौड़ेगा तो बनारस की सड़कें ऐसी हैं कि सवारी के दो-दो मुँह हो जाएँगे। यह तो हम लोगों पर अहसान करते हैं, नहीं तो सर्जनों को रुपया देते-देते आप लोगों का दिवाला निकल जाएगा।"

शब्दार्थ

विधना	–	होनी, विश्व का विधान करने वाली शक्ति	विकट	–	भयानक
विधान	–	व्यवस्था, प्रणाली	लौहपथगामिनी	–	रेलगाड़ी
सूद	–	ब्याज	पलटन	–	फ़ौज की टुकड़ी
दुर्दिन	–	बुरे दिन	मंथर	–	धीमी
सतयुगी	–	सतयुग का	त्योरियाँ	–	भौंहें
दिल्लगी	–	हँसी-मज़ाक			

संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक

1. **पढ़िए और बोलिए–**

बौखलाहट मंगोलिया फिजूलखर्ची व्यावहारिक ताल्लुकेदार

2. **सोचकर बताइए–**

(क) लेखक के अनुसार क्या नहीं करने पर भारत में जन्म लेना व्यर्थ है?

(ख) जब बनारसी इक्का रुक जाता है तो इक्केवान क्या करते हैं?

(ग) इक्केवान ने घोड़े को अधिक न खिलाने के पीछे क्या कारण बताया?

लिखित

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए–**

(क) 'बनारसी लंगड़ा' नाम किस चीज़ के लिए प्रसिद्ध है? ....

(ख) साधारण इक्के किसकी जीती-जागती एलबम हैं? ....

(ग) लेखक ने गहरेबाज़ इक्के को किस समुदाय का प्रतिनिधि माना है? ....

(घ) बीमा कंपनियों की उपयोगिता कब समझ में आती है? ....

(ङ) इक्कों की माँग कब बढ़ जाती है? ....

2. नीचे दिए गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

इस पर उसकी त्योरियों पर बल पड़ गए और बोला, "आप मुझसे दिल्लगी कर रहे हैं? यह घोड़ा मेरे बाप के ज़माने से है। यह मुझे अपने लड़के के समान प्यार करता है। आप इसे कमज़ोर न समझें। इसे इसलिए अधिक नहीं खिलाया जाता कि ज़्यादा बलवान होने पर अगर तेज़ी से दौड़ेगा तो बनारस की सड़कें ऐसी हैं कि सवारी के दो-दो मुँह हो जाएँगे। यह तो हम लोगों पर अहसान करते हैं, नहीं तो सर्जनों को रुपया देते-देते आप लोगों का दिवाला निकल जाएगा।"

(क) इक्केवान को बेटे के समान कौन प्यार करता है?

(*i*) इक्केवान का पिता
(*ii*) इक्केवान का घोड़ा
(*iii*) इक्केवान का पड़ोसी
(*iv*) इक्केवान का चाचा

(ख) घोड़े को कम खाना देने के पीछे इक्केवान ने क्या कारण बताया?

(*i*) घोड़ा ज़्यादा खाना पचा नहीं पाएगा।
(*ii*) ज़्यादा खाना खाने पर घोड़ा तेज़ी से दौड़ेगा और सड़कें ठीक न होने से सवारियों को चोट लग सकती है।
(*iii*) इक्केवानों का दिवाला निकल जाएगा।
(*iv*) घोड़े की आयु अधिक होना।

(ग) 'सवारी के दो-दो मुँह हो जाएँगें' से क्या तात्पर्य है?

(*i*) सवारी का चोटिल हो जाना
(*ii*) सवारी को घोड़े का मुँह लग जाना
(*iii*) सवारी का अत्यधिक बात करना
(*iv*) सवारी का झगड़ा करना

(घ) गद्यांश के अनुसार बनारस की सड़कें कैसी हैं?

(*i*) सपाट व सीधी
(*ii*) टूटी-फूटी व टेढ़ी-मेढ़ी
(*iii*) इक्कों के चलने योग्य
(*iv*) केवल बसों के चलने योग्य

(ङ) लोगों का दिवाला निकलने की कल्पना किस आधार पर की गई है?

(*i*) इक्के की महँगी यात्रा के कारण
(*ii*) चोटिल होकर सर्जनों को रुपया देने के कारण
(*iii*) धन चोरी हो जाने के कारण
(*iv*) इक्केवानों की बेईमानी के कारण

3. नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए–

(क) 'बनारस' शब्द की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

....

....

(ख) साधारण इक्के को भारत की दरिद्रता की एलबम क्यों कहा गया है?

(ग) लेखक ने बनारसी इक्केवानों की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?

(घ) इक्कों की लालटेन की क्या विशेषता बताई गई है?

(ङ) 'सवारी की परीक्षा' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

4. नीचे दी पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए–

(*i*) देखने वालों को भ्रम होगा कि पहिया धीरे-धीरे धुरी से असहयोग कर रहा है, परंतु ऐसा नहीं है। यह उसकी अदा है। यह बड़े नाज़ से कभी इक्के के बाहर की ओर तथा कभी भीतर की ओर घूमता है। इस नाज़ को उठाना सबके वश की बात नहीं है।

(*ii*) घोड़ेराम दंडवत प्रणाम कर रहे थे और सिर के अंदर हवाई जहाज़-सी कोई चीज़ भन्ना रही थी।

5. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) किस चीज़ पर बनारसी इक्के का जन्मसिद्ध अधिकार है?

(*i*) सवारी पर ☐ (*ii*) बनारस के स्टेशनों पर ☐

(*iii*) सरगम के सुरीले आलाप पर ☐ (*iv*) सड़क पर दौड़ते वाहनों से आगे निकलने पर ☐

(ख) लेखक के अनुसार प्रोफ़ेसरों को व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने के लिए किसकी शिष्यता ग्रहण करनी चाहिए?

(*i*) बनारसी घोड़ों की (*ii*) बनारसी इक्केवानों की
(*iii*) लेखक की (*iv*) लखनवी रईसों की

(ग) बनारसी इक्केवान कैसे होते हैं?

(*i*) लड़ाकू होते हैं। (*ii*) बातूनी होते हैं।
(*iii*) नियम के पक्के होते हैं। (*iv*) उपरोक्त सभी

(घ) बनारसी इक्कों के दुर्दिन क्यों आए?

(*i*) बसों और ताँगों के कारण (*ii*) नए इक्कों के कारण
(*iii*) रेलगाड़ियों के कारण (*iv*) घोड़ों की संख्या के कारण

(ङ) घोड़े के बैठ जाने का क्या कारण था?

(*i*) अधिक खाना खा लेना
(*ii*) कम खाना और काम अधिक करना
(*iii*) संध्या-वंदन करना
(*iv*) अपनी इच्छा से

भाषा ज्ञान

1. नीचे दिए शब्दों में आहट प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए–

मुसकरा + आहट = ... बौखला + आहट = ...
हड़बड़ा + आहट = ... बुलबुला + आहट = ...
घबरा + आहट = ... गरम + आहट = ...

2. पाठ में आए संज्ञा शब्द ढूँढ़कर लिखिए–

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
....	....	....
....	....	....
....	....	....

3. नीचे दिए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मुँह से लार टपकना–..
....

नाज़ उठाना – ....

....

टस-से-मस न होना– ....

....

त्योरियों पर बल पड़ना – ....

....

दो-दो मुँह होना – ....

....

हास्य-व्यंग्य से आगे

- क्या आज भी इक्के और इक्केवानों की धाक बनारस अर्थात वाराणसी में देखने को मिलती है?
- इक्केवान घोड़ों के साथ क्या अन्याय कर रहे थे? इसके पीछे उनका लोभ था या मजबूरी? कल्पना करके उत्तर दीजिए।

नन्हे हाथों से

- **हमारे जीवन में 'हास्य रस का महत्त्व' पर अपनी उत्तर पुस्तिका में अनुच्छेद लिखिए।**
- **किसी हास्य चलचित्र की कहानी उत्तर पुस्तिका में अपने शब्दों में लिखिए।**

कुछ करने को

- हास्य-रस पर आधारित कविता, कहानी, चुटकुले या व्यंग्य का संग्रह कीजिए।
- अध्यापिका की सहायता से हास्य रस पर एक प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए जिसमें कविता, कहानी, चुटकुले आदि के माध्यम से प्रतिभागी भाग लें।
- बेढब बनारसी के अलावा हास्य-रस के अन्य लेखकों व कवियों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

आप क्या करेंगे

- हँसना और हँसाना एक कला है। हँसी हमारे जीवन में अनेक रंग भरती है। किसी भी दुखी व्यक्ति को हँसा देने से उसका दुख कम हो जाता है। लेकिन यदि आप किसी की अंत्येष्टि में जाएँ तो वहाँ दुखी लोगों को देखकर आप क्या करेंगे?
- कक्षा या घर में हँसी-मज़ाक करते समय किसी को आपके द्वारा चोट लग जाए तो आप क्या करेंगे?

प्रश्न-पत्र–1

समय- 3 घंटे पूर्णांक– 70

1. अपठित गद्यांश (5)

आज से लगभग 500 वर्ष पहले की बात है। काशी में नीरु नामक जुलाहा रहता था। वह मुसलमान था। एक दिन उसने तालाब के किनारे एक नवजात शिशु को टोकरी में पड़े देखा। वह उसे अपने घर ले आया। उसने उस बच्चे का पालन-पोषण किया। यही बच्चा बड़ा होकर हिंदी का महान कवि कबीरदास बना। नीरु गरीब जुलाहा था। उसने कबीर को कपड़ा बुनना सिखाया। स्वामी रामानंद जी ने गुरु के रूप में कबीर की ज्ञान-पिपासा को शांत किया। कबीर भ्रमणशील संत थे। इनकी भाषा में अवधी, भोजपुरी, ब्रज, राजस्थानी और पंजाबी भाषा के शब्द रुप मिलते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर की पंचमेल भाषा को सधुक्कड़ी कहा है।

उपरोक्त गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) कबीरदास जी का पालन-पोषण किसने किया?

(*i*) स्वामी रामानंद ने ☐ (*ii*) जुलाहे ने ☐ (*iii*) रामचंद्र शुक्ल ने ☐ (*iv*) हिंदू दंपति ने ☐

(ख) नीरु कौन था?

(*i*) पंडित ☐ (*ii*) जुलाहा ☐ (*iii*) मल्हार ☐ (*iv*) कवि ☐

(ग) कबीरदास जी के गुरु कौन थे?

(*i*) रामचंद्र शुक्ल ☐ (*ii*) सूरदास ☐ (*iii*) स्वामी रामानंद ☐ (*iv*) स्वामी विवेकानंद ☐

(घ) नीरु ने कबीरदास जी को क्या सिखाया?

(*i*) नाव चलाना ☐ (*ii*) खाना पकाना ☐ (*iii*) कविता लिखना ☐ (*iv*) कपड़ा बुनना ☐

(ङ) कबीरदास जी की भाषा में किन भाषाओं के शब्द मिलते हैं?

(*i*) अवधि ☐ (*ii*) भोजपुरी ☐ (*iii*) ब्रज और राजस्थानी ☐ (*iv*) इन सब के ☐

2. अपठित काव्यांश (5)

जब गीतकार मर गया, चाँद रोने आया,
चाँदनी मचलने लगी, कफ़न बन जाने को।
मलयानिल ने शव को कंधों पर उठा लिया,
वन ने भेजे चंदन श्रीखंड जलाने को।

सूरज बोला, यह बड़ी रोशनीवाला था,
मैं भी न जिसे भर सका कभी उजियाली से।

रंग दिया आदमी के भीतर की दुनिया को,
इस गायक ने अपने गीतों की लाली से।

उपरोक्त काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए–

(क) चाँद क्यों रोने लगा था?

(*i*) रोशनी कम हो जाने के कारण ☐ (*ii*) गीतकार के मरने के कारण ☐
(*iii*) सूरज की ज्वाला से परेशान होकर ☐ (*iv*) गायक के गीतों से पिघलकर ☐

(ख) गीतकार का कफ़न बनने की इच्छा किसके मन में उठी?

(*i*) किरणों के ☐ (*ii*) चाँद के ☐ (*iii*) चाँदनी के ☐ (*iv*) चंदन के ☐

(ग) वन ने गीतकार के शव के लिए क्या भेजा?

(*i*) फूल मालाएँ ☐ (*ii*) पत्ते ☐ (*iii*) चंदन की लकड़ियाँ ☐ (*iv*) फल ☐

(घ) गीतकार ने ऐसा क्या किया था जो सूरज भी न कर सका?

(*i*) दुनिया को रोशन कर दिया था। ☐ (*ii*) दुनिया को अंधेरे के गर्त में डुबो दिया था। ☐
(*iii*) आदमी के भीतर की दुनिया को रंग दिया था। ☐ (*iv*) सबको मंत्र-मुग्ध कर दिया था। ☐

(ङ) गीतकार ने दुनिया को किससे रंग दिया था?

(*i*) अपने गीतों की लाली से ☐ (*ii*) सूरज की लाली से ☐
(*iii*) प्रेम के रंगों से ☐ (*iv*) होली के गुलाल से ☐

व्याकरण से (20)

3. उचित प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए– (2)

दुख .... करुणा .... छाया .... मज़दूर ....

4. नीचे दिए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए– (1)

आस .... पूत ....

5. नीचे दिए शब्दों का समास-विग्रह कीजिए– (2)

जन्म-मरण .... दोपहर .... शरणागत .... पंजाब ....

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए– (2)

मयूर .... कौआ ....

7. उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए– (2)

प्रसन्नता – .... + ... अपवाद – .... + ...

8. **रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पूरे कीजिए–** (2)

(क) साधु <u>स्वतंत्र</u> प्रकृति के होते हैं; उन्हें .... रहकर जीना नहीं भाता।

(ख) प्रकाश की <u>विजय</u> के साथ अंधकार की .... निश्चित है।

9. **रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर पुनः वाक्य बनाइए–** (2)

(क) दुखी प्राणी भगवान की शरण में आकर शांति पाते हैं।

(ख) पिता की मृत्यु से बालक गहरे शोक में डूब गया।

10. **नीचे दिए वाक्यों में कारक शब्दों को ◯ लगाकर उनके भेद लिखिए–** (2)

(क) ईमानदार को मूर्ख समझा जाने लगा है। ....

(ख) हे प्रभो! मुझे शक्ति दो। ....

11. **नीचे दिए वाक्यों में सहायक क्रिया पर ◯ लगाइए–** (2)

(क) मज़दूर लू चलने पर भी कार्य में लगे रहते हैं।

(ख) झुलसाने वाली लू चल रही थी।

12. **नीचे दिए वाक्यों में अव्यय शब्दों को रेखांकित कीजिए–** (2)

(क) एक दिन पहले ही वेतन मिला था।

(ख) अरे! आज इकतीस है। आज तो ले ले।

13. **कोई दो शब्द-युग्म लिखिए–** (1)

....

पाठ से

14. **नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए। (कोई चार)** (8)

(क) लेखिका गिल्लू की चंचलता पर कैसे विराम लगाती थीं?

(ख) जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था क्यों डोलने लगी है?

(ग) विशेषज्ञ जाति की क्या विशेषता थी?

(घ) किरण बेदी का बचपन कैसा था?

(ङ) लेखक कौसानी क्यों गए थे?

15. **नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए। (कोई तीन)** (12)

(क) गिल्लू की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ख) शंकरानंद ने बैजू बावरा से गुरु दक्षिणा में क्या माँगा?

(ग) 'केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखा जाए, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।' इस पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) सोमेश्वर घाटी के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

16. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए– (5)

(क) बैजू बावरा ने तानसेन को मृत्युदंड क्यों नहीं दिया?

(i) अकबर का तानसेन के प्रति अगाध प्रेम देखकर।

(ii) अकबर के डर से।

(iii) गुरु के समक्ष की गई प्रतिज्ञा के कारण।

(iv) बैजू बावरा स्वयं तानसेन से बहुत प्रेम करता था।

(ख) घर छोड़ने वालों के साथ क्या होता है?

(i) उन्नति के अवसर मिलते हैं।　(ii) व्यक्तित्व में निखार आता है।

(iii) अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है।　(iv) लाभ–ही–लाभ मिलता है।

(ग) बेईमानी और ईमानदारी के स्वर कहाँ से निकलते हैं?

(i) परमात्मा से　(ii) आत्मा से

(iii) धरती से　(iv) आकाश से

(घ) किरण बेदी को रमन मैगसेसे पुरस्कार कब मिला था?

(i) 1980 में　(ii) 1950 में

(iii) 1970 में　(iv) 1994 में

(ङ) बैजनाथ में कौन–सी नदी बहती हैं?

(i) कावेरी　(ii) कृष्णा

(iii) गोमती　(iv) नर्मदा

17. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए– (3)

(क) गिल्लू भूख लगने की सूचना किस प्रकार देता था? ....

(ख) बालक तानसेन से क्या लेना चाहता था? ....

(ग) मजदूर स्त्री के माथे से क्या बह रहा था? ....

18. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए– (7)

भ्रष्टाचार, मेरा भारत महान, देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका।

19. अपने प्रिय मित्र को किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा पर जाने के लिए निमंत्रण पत्र लिखिए। (5)

प्रश्न-पत्र–2

समय–3 घंटे | पूर्णांक– 70

1. अपठित गद्यांश (5)

वाशिंगटन के पश्चिमी भाग में एक छोटी-सी बस्ती थी। इस बस्ती की विशेष बात यह थी कि इसमें अधिकांशतः कलाकार लोग रहते थे। इस बस्ती में अनेक घुमावदार गलियाँ और ढेर सारे घर थे। कलाकारों की इसी बस्ती में सूमेन और जानसी नाम की दो महिला कलाकार भी रहती थीं। वैसे तो सूमेन वाशिंगटन और जानसी कैलिफोर्निया की रहने वाली थी, पर उनकी पहली मुलाकात ने ही उन्हें एक-दूसरे की पक्की सहेलियाँ बना दिया था। उन्होंने मिलकर एक स्टूडियो खोल लिया और चित्रकारी में जुट गईं।

उपरोक्त गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) बस्ती में कौन रहते थे?
(*i*) फ़िल्मकार ☐ (*ii*) कलाकार ☐ (*iii*) रंगरेज़ ☐ (*iv*) धोबी ☐

(ख) बस्ती की गलियाँ कैसी थीं?
(*i*) तंग ☐ (*ii*) सीधी ☐ (*iii*) चौड़ी ☐ (*iv*) घुमावदार ☐

(ग) बस्ती में रहने वाली महिला कलाकारों के क्या नाम थे?
(*i*) जानकी ☐ (*ii*) सूसेन ☐ (*iii*) मानसी ☐ (*iv*) जानसी और सूमेन ☐

(घ) दोनों महिला कलाकार सहेलियाँ कब बनीं?
(*i*) पड़ोस में रहने पर ☐ (*ii*) एक साथ पढ़ने पर ☐
(*iii*) पहली मुलाकात में ☐ (*iv*) दूसरी मुलाकात में ☐

(ङ) दोनों महिला कलाकारों ने मिलकर क्या किया?
(*i*) पत्रकारिता शुरू की ☐ (*ii*) स्टूडियो खोल लिया ☐
(*iii*) विद्यालय खोल लिया ☐ (*iv*) नृत्य सीखने लगीं ☐

2. अपठित काव्यांश (5)

यह धरती हिल सकती है,
मरु में बगिया खिल सकती है।
कर्मठता शपथ उठा ले तो,
हर मंज़िल भी मिल सकती है।
　　है इतना सब कुछ ज्ञात अगर,
　　फिर साहस क्यों बिखरा-बिखरा।

जब जीवन–पथ संघर्ष भरा,
फिर मेरा मन क्यों डरा–डरा?

उपरोक्त काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रेगिस्तान में बगिया कब खिल सकती है?
- (*i*) जब वहाँ बाढ़ आ जाए।
- (*ii*) जब धरती में परिवर्तन हो जाए।
- (*iii*) जब मनुष्य ऐसा करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा कर ले।
- (*iv*) जब नियति अपना मार्ग बदल दे।

(ख) यदि मनुष्य कर्मठता से शपथ ले तो क्या हो सकता है?
- (*i*) बारिश हो सकती है।
- (*ii*) किसी को भी डराया जा सकता है।
- (*iii*) स्वप्न देखे जा सकते हैं।
- (*iv*) हर मंज़िल मिल सकती है।

(ग) जीवन–पथ किससे भरा हुआ है?
- (*i*) संघर्षों से
- (*ii*) खुशियों से
- (*iii*) सफलताओं से
- (*iv*) ऊँचाइयों से

(घ) कवि का मन किससे डरा हुआ है?
- (*i*) आवागमन से
- (*ii*) विचार–विमर्श से
- (*iii*) जीवन–संघर्ष से
- (*iv*) मान–सम्मान से

(ङ) कौन–सा शब्द–युग्म काव्यांश में प्रयुक्त नहीं हुआ है?
- (*i*) डरा–डरा
- (*ii*) जीवन–पथ
- (*iii*) ज्ञात–अज्ञात
- (*iv*) बिखरा–बिखरा

व्याकरण से (20)

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए– (2)

लोग .... परिवार .... कुआँ .... बुद्धि ....

4. संधि-विच्छेद कीजिए– (2)

विद्याध्ययन .... + ... छात्रवृत्ति .... + ...

उपरांत .... + ... सदाचार .... + ...

5. समास-विग्रह कीजिए– (1)

अठन्नी .... सप्तर्षि ....

6. अनेकार्थी शब्दों के अलग-अलग अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए– (2)

तीर ....

तीर ....

घटा ....

घटा ....

7. **उचित विशेषण शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए–** (2)

.... मंदिर जीर्ण होकर खंडहर में बदलने लगा। (गुणवाचक विशेषण)

.... मक्खन देखकर उसका मन ललचा गया। (परिमाणवाचक विशेषण)

8. **क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए–** (2)

(क) वह थककर बिलकुल चूर हो गई। ....

(ख) लक्ष्मी अंदर सो रही थी। ....

9. **समुच्चयबोधक शब्दों पर ◯ लगाइए–** (2)

(क) मेरी वह पहली और आखिरी भूल थी।

(ख) तुम्हें जो कठिनाई है सो मुझे बताओ।

10. **नीचे दिए वाक्यों में कारक शब्दों को रेखांकित करके भेद भी लिखिए–** (2)

(क) कुछ दिन बाद व्यायाम से छुट्टी मिल गई। ....

(ख) पके हुए घड़े पर मिट्टी कैसे चढ़ सकती है? ....

11. **मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–** (2)

(क) मन उचट जाना– ....

....

(ख) भूत सवार होना– ....

....

12. **नीचे दिए सर्वनाम शब्दों पर ◯ लगाइए और उनके भेद भी लिखिए–** (2)

(क) ये लोग प्रार्थना कर रहे हैं कि किसी तरह फाँसी से बच जाएँ। ....

(ख) तुम ज़िंदा रहोगे। ....

13. **नीचे दिए शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय लिखिए–** (1)

औद्योगिक .... संक्रमित ....

पाठ से

14. **नीचे दिए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए। (कोई चार)** (8)

(क) महतो ने बँटवारा क्यों किया?

(ख) लोकगीतों में राग का क्या महत्त्व है? कुछ प्रसिद्ध रागों के बारे में बताइए।

(ग) गांधी जी की पहली और आखिरी भूल क्या थी?

(घ) रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे?

(ङ) खेजड़े की जड़ में गीली मिट्टी देखकर सुनेली ने क्या सोचा?

15. नीचे दिए प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए। (कोई तीन) (12)

(क) व्यायाम के प्रति गांधी जी की अरुचि के क्या कारण थे?

(ख) लक्ष्मीबाई की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ग) 'कोई सहायता करे या न करे मैं तो खोदूँगी, फिर चाहे महीनों लग जाएँ।' पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(घ) निम्न पंक्तियों का सप्रसंग भावार्थ लिखिए।

कीर के कागर ज्यौं नृपचीर, विभूषन उप्पम अंगनि पाई।
औध तजी मगबास के रूख ज्यौं, पंथ के साथी लोग-लुगाई।

16. नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) लगाइए– (5)

(क) सुभागी के दुख का क्या कारण था?

(i) वह पढ़ी-लिखी नहीं थी। ☐ (ii) उसकी शादी नहीं हो पा रही थी। ☐
(iii) वह कम उम्र में विधवा हो गई थी। ☐ (iv) वह अपाहिज थी। ☐

(ख) बिदेसिया लोकगीत कौन-सी बोली में गाए जाते हैं?

(i) हरियाणवी ☐ (ii) कन्नड़ ☐ (iii) भोजपुरी ☐ (iv) पहाड़ी ☐

(ग) गांधी जी शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए क्या करते थे?

(i) खेल-कूद ☐ (ii) भाग-दौड़ ☐ (iii) सुबह की सैर ☐ (iv) पढ़ाई ☐

(घ) नरसी की ढाणी में किसकी कमी थी?

(i) खाने-पीने की ☐ (ii) कपड़ों की ☐ (iii) शिक्षा की ☐ (iv) मूलभूत आवश्यकताओं की ☐

(ङ) फाँसी की सज़ा किसे सुनाई गई थी?

(i) बटुकेश्वर दत्त को ☐ (ii) भगत सिंह को ☐
(iii) चंद्रशेखर आज़ाद को ☐ (iv) सुभाषचंद्र बोस को ☐

17. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर शब्दों में दीजिए– (3)

(क) महतो की तेरहवीं के लिए सुभागी की मदद किसने की थी? ....

(ख) लोकगीतों के रचयिता कौन होते हैं? ....

(ग) गांधी जी किसकी सेवा-शुश्रूषा में जुटे रहते थे? ....

18. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए– (7)

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, आदर्श विद्यार्थी, बढ़ता प्रदूषण

19. अपने मित्र को भारत की सभ्यता और संस्कृति के बारे में बताते हुए एक पत्र लिखिए। (5)

शब्दकोश

इस शब्दकोश में बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है। शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं–

अ॰ – अव्यय	अ॰ क्रि॰ – अकर्मक क्रिया	सं॰ – संज्ञा	सर्व॰ – सर्वनाम
क्रि॰ – क्रिया	क्रि॰ वि॰ – क्रियाविशेषण	मु॰ – मुहावरा	स॰ क्रि॰ – सकर्मक क्रिया
पु॰ – पुंलिंग	स्त्री॰ – स्त्रीलिंग	वि॰ – विशेषण	

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ने से पहले यह उचित होगा कि आप शब्दकोश देखने की सही विधि जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा।

1. जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
2. शब्दकोश में शब्दों को इस वर्णक्रम में दिया जाता है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् क से ह तक, क्रम के अनुसार सभी वर्ण।
3. क्ष, त्र, ज्ञ, को ह के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। क्ष, क् और ष का संयुक्त रूप है। अतः क से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर क्ष से प्रारंभ होने वाले शब्द ढूँढ़े जा सकते हैं।
4. त्र, त् और र का संयुक्त रूप है। अतः त्र से शुरू होने वाले शब्द त से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। जब त्य से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब त्र से आरंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
5. ज्ञ, ज् और ञ का संयुक्त रूप है। अतः ज्ञ से शुरू होने वाले शब्दों को ज से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए ज से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण ज्ञ ही है। अतः जौहरी के बाद ही ज्ञ से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। ज्ञ के बाद ज्य से बनने वाले शब्द आते हैं।

शब्द			अर्थ	शब्द			अर्थ
अंजन	(पु॰)	–	काजल	अपलक	(क्रि॰वि॰)	–	बिना पलक झपकाए
अंत्येष्टि	(स्त्री॰)	–	अंतिम क्रिया	अपवाद	(पु॰)	–	समान्य नियम को बाधित करने वाला
अगाध	(वि॰)	–	अथाह, गहरा				विशेष उदाहरण
अगोचर	(वि॰)	–	अप्रकट, अप्रत्यक्ष	अबोध	(पु॰)	–	नासमझ
अचूक	(वि॰)	–	जिसका निशाना न चूके	अभिप्राय	(पु॰)	–	मतलब
अज्ञानता	(स्त्री)	–	नादानी, बेवकूफ़ी	अभियुक्त	(वि॰)	–	अपराधी
अट्टालिका	(स्त्री॰)	–	ऊँची इमारत, अटारी	अवतारी	(वि॰)	–	ईश्वरीय शक्ति से भरपूर
अत्यंत	(वि॰)	–	बहुत अधिक	अवतीर्ण	(वि॰)	–	अवतार के रुप में उत्पन्न
अत्याचार	(पु॰)	–	जुल्म	अवशोषित करना	(वि॰)	–	सोख लेना
अनंत	(वि॰)	–	असीम, जिसका अंत न हो।	अवहेलना	(स्त्री॰)	–	तिरस्कार
अनभिज्ञ	(वि॰)	–	अनजान	असह्य	(वि॰)	–	जो सहन न किया जा सके
अनायास	(क्रि॰वि॰)	–	बिना प्रयास-परिश्रम के, आसानी से	आकांक्षा	(स्त्री॰)	–	चाह, इच्छा
अनिवार्य	(वि॰)	–	आवश्यक	आग्रह	(पु॰)	–	निवेदन
अनुरोध	(वि॰)	–	विनय	आरज़ू	(स्त्री॰)	–	इच्छा, कामना
अनूप	(वि॰)	–	जिसकी उपमा नदी से करे	आराध्य	(वि॰)	–	पूज्य

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आरोप-प्रत्यारोप(पु॰) –	इलज़ाम के जवाब में इलज़ाम	जलसा (पु॰) –	उत्सव, समारोह
आलेखन (पु॰) –	लेखन कला	ढाणी (पु॰) –	छोटा गाँव
आवेश (पु॰) –	जोश, गुस्सा	ढुलक (अ॰क्रि॰) –	नीचे की ओर बहना
आश्वस्त (वि॰) –	जिसका डर दूर कर दिया गया हो	तल्लीन (वि॰) –	मग्न
आस (स्त्री॰) –	आशा	तावीज़ (पु॰) –	कागज, भोजपत्र आदि पर अंकित
आसरा (पु॰) –	सहारा, भरोसा		मंत्र जिसे संपुट में बंद करके गले,
आह्लादकर(वि॰) –	हर्षकर, खुशी देने वाला		बाँह या कमर में धारण करते हैं।
आह्वान (पु॰) –	पुकार	तिय (स्त्री॰) –	पत्नी
उदित (वि॰) –	उदय	त्योरियाँ (स्त्री॰) –	भौंहें
उद्दाम (वि॰) –	बंधन रहित	दंड (पु॰) –	सज़ा
उद्यान (पु॰) –	बगीचा	त्रुटियों (स्त्री॰) –	गलतियों, कमियों
उपचार (पु॰) –	इलाज	दिल्लगी (स्त्री॰) –	हँसी-मज़ाक
उपरांत (क्रि॰वि॰) –	बाद में	दुर्दिन (पु॰) –	बुरे दिन
उलाहना (पु॰) –	ताना	धरा (स्त्री॰) –	धरती
उल्लंघन (पु॰) –	लाँघना, अवज्ञा करना, विरुद्ध,आचरण	नत (वि॰) –	झुके हुए
उल्लसित (वि॰) –	प्रसन्न	नागा (पु॰) –	व्यतिक्रम, अवकाश
ऊष्णता (स्त्री॰) –	गरमी	नाह (पु॰) –	स्वामी
ओजस्वी (वि॰) –	ओज से भरा, प्रभावकारी	निरावृत (वि॰) –	जो ढका न हो
कनी (स्त्री॰) –	छोटे कण	निर्द्वंद्व (वि॰) –	स्वच्छंदतापूर्वक
कर्मठ (वि॰) –	परिश्रमी	निर्भर (वि॰) –	आश्रित
कर्मरत (वि॰) –	कार्य में लगा हुआ	निःसंतान (वि॰) –	संतानहीन
कल (स्त्री॰) –	यंत्र, मशीन, चैन, अगला या	निषंग (पु॰) –	तरकस
	पिछला दिन	निष्कलंक (वि॰) –	बेदाग, कलंक रहित
कष्टप्रद (वि॰) –	पीड़ादायक	निष्ठुर (वि॰) –	कठोर, निर्दयी
कागर (पु॰) –	पंख	निवाला (पु॰) –	कौर
कातर (वि॰) –	भयभीत, डरपोक	नूतन (वि॰) –	नया, नवीन
काल (पु॰) –	मृत्यु, समय	नृपचीर (पु॰) –	राजसी वस्त्र
कालगति (स्त्री॰) –	समय की चाल	पथ (पु॰) –	राह, रास्ता
किमि के (सर्व॰) –	कैसे	पथ प्रदर्शक(पु॰) –	रास्ता दिखानेवाला
कीर (पु॰) –	तोता	पलटन (स्त्री॰) –	फ़ौज की टुकड़ी
कुशाग्र-बुद्धि(वि॰) –	तीक्ष्ण-बुद्धि	पश्चात्ताप(पु॰) –	आत्मग्लानि
कृपाण (पु॰) –	तलवार	पसेउ (पु॰) –	पसीना
कौतुक (पु॰) –	कौतूहल, उत्सुकता	पाबंद (वि॰) –	नियमों को मानने के लिए मजबूर
खेजड़ा (पु॰) –	कंटीला वृक्ष	पुनः (अ॰) –	फिर
गर्व (पु॰) –	घमंड	पुरखे (पु॰) –	पूर्वज
गुरु (पु॰) –	भारी, बड़ा	पेशगी (स्त्री॰) –	अग्रिम, किसी कार्य के पारिश्रमिक
घूस (पु॰) –	रिश्वत		का वह अंश जो करनेवाले को कार्य
चेष्टा (स्त्री॰) –	कोशिश		पूरा होने से पहले दिया जाता है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पौरुष (पु॰) –	पुरुषार्थ	विघ्न (पु॰) –	बाधा
प्रतिकार (पु॰) –	बदला	विधना (सं॰क्रि॰) –	होनी, विश्व का विधान करने वाली शक्ति
प्रतिस्पर्धा (स्त्री॰) –	प्रतियोगिता	विधान (पु॰) –	व्यवस्था, प्रणाली
प्रतीक (पु॰) –	प्रतिरूप, प्रतिमा	विधि (पु॰) –	नियम, सृष्टि
प्रहार (पु॰) –	चोट	विधु बैनी (स्त्री॰) –	चंद्रमा के समान मुखवाली
प्राणघातक (वि॰) –	प्राण हर लेने वाला	विरह (पु॰) –	वियोग
प्रातः (पु॰) –	तड़का, सवेरा	विराटता (स्त्री॰) –	बहुत बड़ा, भारी, प्राधान्य
फिरंगी (वि॰) –	विलायती, यूरोपियन	विरुदावलि (स्त्री॰) –	विस्तृत यशोगान
बंजारे (पु॰) –	घुमंतु जाति, व्यापार करने वाला	विलुप्त (वि॰) –	खंडित, नष्ट
बटाऊ (पु॰) –	राहगीर	विश्वासघात (पु॰) –	धोखा
बनिता (स्त्री॰) –	स्त्री	विस्मित (वि॰) –	आश्चर्ययुक्त, चकित
बयारि (स्त्री॰) –	हवा	विहग (पु॰) –	पक्षी
बिरानी (वि॰) –	बेगानी	व्यापक (वि॰) –	विस्तृत, फैला हुआ
बिलोकहु (क्रि॰) –	देखो	श्याम (वि॰) –	काला
बेताबी (स्त्री॰) –	व्याकुलता	श्रमजीवी (वि॰) –	मेहनत से जीविका चलाने वाला
बेसब्री (स्त्री॰) –	अधीरता	संग्राम (पु॰) –	युद्ध, लड़ाई
मंथर (वि॰) –	धीमी	संचालित (वि॰) –	नियंत्रित
मजबूर (वि॰) –	बेबस, विवश	संसाधन (पु॰) –	स्रोत, संपत्ति
मद्धिम (पु॰) –	धीमी	सघन (वि॰) –	घना
मरुभूमि (स्त्री॰) –	रेगिस्तानी भूमि	सतयुगी (वि॰) –	सतयुग में पैदा हुआ
मिज़ाज (पु॰) –	स्वभाव	सदाचार (पु॰) –	अच्छा आचरण
मुक्ति (स्त्री॰) –	आज़ादी	समाधान (पु॰) –	हल
मुदित (वि॰) –	प्रसन्न, आनंदित	सम्मुख (वि॰) –	सामने
मुँहबोली (वि॰) –	मुँह से कहकर बनाई हुई	सर्वव्यापी (वि॰) –	सब ओर फैला हुआ
मुजरिम (वि॰) –	अपराधी	सामंजस्य (पु॰) –	अनुकूलता, समानता स्थापित करना
मरणावस्था (पु॰) –	मरने की अवस्था	सीख (स्त्री॰) –	शिक्षा
मापदंड (पु॰) –	मानक	सूक्ष्म (वि॰) –	बारीक
रंचक (वि॰) –	थोड़ा-सा	सेवा-शुश्रूषा (स्त्री॰) –	सेवा-टहल, परिचर्या
रचयिता (पु॰) –	रचना करने वाला	स्तब्ध (वि॰) –	सुन्न, निश्चेष्ट
रश्मियाँ (स्त्री॰) –	किरणें	स्फूर्ति (स्त्री॰) –	उत्साह, ताज़गी
रुदन (पु॰) –	रोना	स्वामिनी (स्त्री॰) –	मालकिन
लक्ष्य (पु॰) –	उद्देश्य	हरषाया (वि॰) –	प्रसन्न हुआ
लघुप्राण (वि॰) –	छोटा जीव	हर्षातिरेक (पु॰) –	अत्यधिक प्रसन्नता
लावारिस (वि॰) –	जिसका कोई वारिस न हो	हुक्म (पु॰) –	आदेश
लौहपथगामिनी (स्त्री॰) –	रेलगाड़ी	हेय (वि॰) –	हीन
विकट (वि॰) –	भयंकर	ह्रास (पु॰) –	क्षय, कमी
वज्र (वि॰) –	बहुत कठोर,जिस पर किसी का प्रभाव न पड़े		

साक्षी हिंदी पाठमाला हिंदी पाठ्यपुस्तक की यह शृंखला कक्षा 1 से 8 के लिए तैयार की गई है। इस पुस्तक शृंखला में बच्चों को हिंदी भाषा में दक्ष बनाने हेतु उनकी अभिरुचि एवं वर्ग का ध्यान रखते हुए रोचक पाठ्य-सामग्री का समावेश किया गया है।

प्रमुख तथ्य

- एनसीईआरटी, सीबीएसई एवं राज्यों के बोर्डों के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित।
- भाषिक योग्यता कौशल–बोलना, पढ़ना, सुनना, लिखना आदि का समावेश।
- हिंदी की सभी विधाओं–कविता, कहानी, लेख, निबंध, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, पौराणिक कथा, आधुनिक व पर्यावरण संबंधी कहानी, एकांकी, जीवनी, संस्मरण आदि पर आधारित रोचक पाठ्य-सामग्री का समावेश।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) पद्धति पर आधारित संकलनात्मक एवं रचनात्मक प्रश्न– मौखिक, लिखित एवं बहुविकल्पीय, पाठ के अतिरिक्त प्रयोगात्मक कार्य, काल्पनिक व नैतिक मूल्यों पर आधारित प्रश्न।
- चित्रों पर आधारित वाक्य रचना, अनुच्छेद, कविता, कहानी, मुहावरे, लोकोक्ति, लेख व निबंध लेखन।
- मानक व परंपरागत वर्तनी का ज्ञान।
- शब्दकोश का ज्ञान।

शृंखला में पुस्तकें

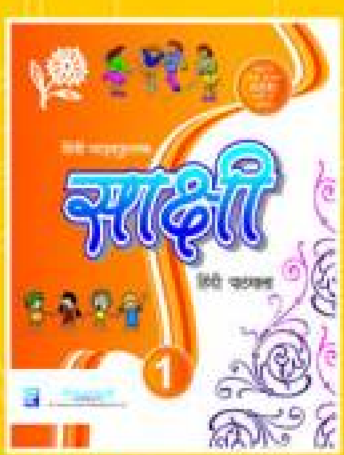

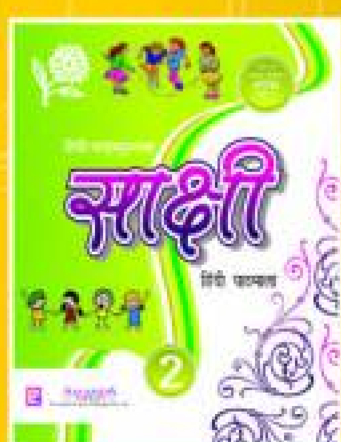

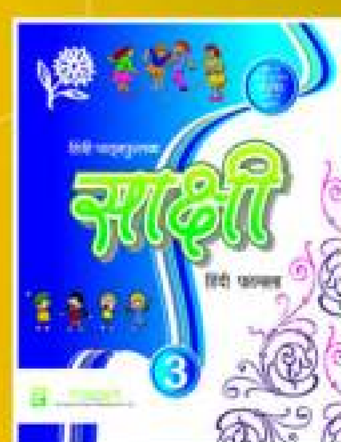

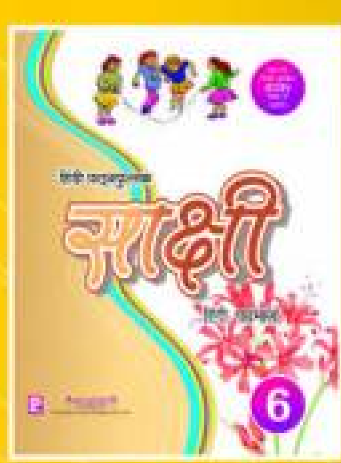

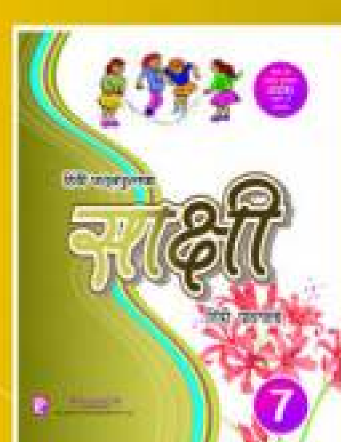

ISBN 978-93-5138-025-2

LAXMI PUBLICATIONS (P) LTD
(An ISO 9001:2008 Company)

AMANDA
IMPRINT
(An Imprint of Laxmi Publications Pvt. Ltd.)

ASH8-0112-195-SAKSHI HINDI PATHMALA 8